नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन

मार्च '९३



हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

होली अंक

इस अंक में
- चित्रकला प्रतियोगिता में इनाम जीते
- प्रथम विजेता चित्र
- होली खेल रहे नंदलाल : रंगीन छवि

पांच रुपए

Scanned with CamScanner

आओ जश्न मनाएं, गीत कैम्पको के गाएं!

"यह दूधभरी, यह क्रीमभरी, यह स्वादभरे सपनों से भरी.
यह मेरी मनभाती चॉकलेट. कैम्पको क्रीमी मिल्क चॉकलेट!"

भारत के सबसे बड़े, सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.
कैम्पको लिमिटेड, मेंगलोर.



R K SWAMY/BBDO CL 10117 HN



Scanned with CamScanner

भारत का संविधान

उद्देशिका

"हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को ..."

सर्व धर्म समभाव

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

Yajurveda ,(यजु. 38-18)

Treat others exactly
as you would like
to have them treat you.

(Luke 6,31)

सभी धर्मों के लिए समान आदर की भावना
भारतीय संस्कृति में रची-बसी है
यही भावना हमारे आध्यात्मिक चिंतन
का आधार रही है
हमारी वास्तविक शक्ति धर्मनिरपेक्षता है
और यही है हमारे संविधान की मूल भावना
आईये, धर्मनिरपेक्षता के मार्ग पर चलने
का एक बार फिर संकल्प लें

لا يؤمن احدكم حتى يحب
لأخيه ما يحب لنفسى

(Hadith.)

ਦੇਹਰਾ ਮਸੀਤ ਸੋਈ, ਪੂਜਾ ਔ ਨਮਾਜ਼ ਓਹੀ,
ਮਾਨੁਸ ਸਭੇਕ, ਪੈ ਅਨੇਕ ਕੌ ਪ੍ਰਭਾਵ ਹੈ।
• • • • • •
ਅਲਹ ਅਭੇਖ ਸੋਈ, ਪੁਰਾਨ ਔ ਕੁਰਾਨ ਓਹੀ,
ਏਕ ਹੀ ਸਰੂਪ ਸਭੈ ਏਕ ਹੀ ਬਨਾਵ ਹੈ।

Guru Gobind Singh

धर्मनिरपेक्षता
हमारे गणतंत्र की शक्ति

डी.ए.वी.पी. 92/570

बच्चों को इंटैलीजैंट बनाने वाला अद्‌भुत नॉलिज बैंक

बच्चों के मस्तिष्क में घुमड़ने वाले हजारों अनबूझे **'क्यों और कैसे'** किस्म के प्रश्नों के उत्तर बताने वाला एक अनूठा प्रकाशन

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक

(छः खण्डों में)



गिफ्ट बॉक्स पैकिंग में

विशेषताएं

- 50 लाख से भी अधिक पाठकों की पसंद
- विद्यालयों में पुरस्कार के रूप में वितरित
- प्रत्येक खण्ड अपने आप में संपूर्ण
- सभी लाइब्रेरियों की पसंद
- प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित

....विषय-वस्तु, साज-सज्जा और छपाई की दृष्टि से निश्चय ही ये पुस्तकें बालकों के ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होंगी....
डॉ. सैयद असद अली, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

....मैं इन पुस्तकों को बाल-साहित्य के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व योगदान मानता हूं।
प्रो. बी. गांगुली, अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित विभाग, एन.सी.इ.आर.टी. नई दिल्ली।

आधारभूत विषय

• पृथ्वी एवं ब्रह्मांड • आधुनिक विज्ञान, वनस्पति एवं पशु-पक्षी जगत •आविष्कार एवं खोजें •खेल एवं खिलाड़ी •आश्चर्य एवं रहस्य • सामान्य ज्ञान •मानव शरीर • भौतिक-रसायन एवं जीव विज्ञान आदि।

बच्चे के मस्तिष्क के लिए एक टॉनिक

जैसे ही बच्चा सोचना-समझना शुरू करता है उसमें अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानने की जिज्ञासा बढ़ती जाती है। उसके मस्तिष्क में हजारों **'क्यों और कैसे'** किस्म के प्रश्न घुमड़ने लगते हैं। यदि उसे उचित समय पर इन प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं तो उसका मानसिक विकास तेजी से होता है। इसके विपरीत उचित समय पर प्रश्नों के उत्तर न मिलने पर वह विषयों को समझने के बजाय उन्हें रटने लगता है। इससे उसका मानसिक विकास रुक जाता है और जीवन में भी पिछड़ जाता है।

प्रश्नों में से कुछ की झलक

• महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती? • शनि के छल्ले क्या हैं? • क्या अन्य ग्रहों से लोग पृथ्वी पर आते हैं? • क्या संसार में नरभक्षी लोग भी रहते हैं? • आकाश नीला क्यों दिखाई देता है? • हाइड्रोजन बम क्या है? • हमारे मुहांसे क्यों हो जाते हैं? • टेस्ट ट्यूब बेबी क्या है? • मिस्र के पिरामिड क्यों बनाये गये? • हमें सपने क्यों दिखाई देते हैं? • मौत की घाटी क्या है?

6 खण्डों की इस श्रृंखला में हैं...
- 1300 से भी अधिक बड़े आकार के पृष्ठ
- 1100 से अधिक चित्र
- 5,00,000 से भी अधिक शब्दों की पाठ्य-सामग्री
- 1050 जिज्ञासा भरे प्रश्नों के सुबोध उत्तर



अंग्रेजी तथा 8 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

मूल्य : पेपर बैक 32/-, सजिल्द लायब्रेरी संस्करण : 48/-
डाक खर्च : 6/- प्रत्येक, पूरा सैट रु 192/- **(डाक खर्च माफ)**

अपने निकट व ए.एच. व्हीलर के रेलवे व बस अड्डों के बुक स्टॉलों पर मांगें। वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता -

पुस्तक महल

खारी बावली, दिल्ली-110 006 फोन: 239314, 2911979
शो रूम: • 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002 फोन: 3268292-93, 3279900
शाखाएं: • 22/2, मिशन रोड (शामा राव कम्पाउंड), बंगलोर-560 027 फोन: 234025
• खेमका हाउस, अशोक राजपथ, पटना-800 004 फोन: 653644

Scanned with CamScanner

आओ बात करें

एक दिन समुद्र में रहने वाला एक मेंढक किसी तरह एक कुएं के पास तक आ पहुंचा। फुदकते-उछलते वह भी 'छप्प' से कुएं में जा गिरा।

कुएं के मेंढक ने उससे पूछा—''तुम कहां से आए हो ?'' उसने उत्तर दिया—''मैं समुद्र से आया हूं।''

समुद्र शब्द सुनकर कुएं का मेंढक पूछने लगा—''क्या समुद्र मेरे इस कुएं के बराबर है ?''

मेंढक कुएं के एक छोर से दूसरे छोर तक उछलकर जा पहुंचा। समुद्र वाले मेंढक ने उसे समझाया—''भला कुएं की समुद्र से तुलना कहां हो सकती है ? समुद्र का तो कोई छोर ही नहीं होता, जबकि कुआं तो छोटे-से घेरे में होता है।''

कुएं वाला मेंढक अपने कुएं को छोटा बताने पर चिढ़ गया। गुस्से से मुंह फुलाकर बोला—''कैसी बेतुकी बातें कर रहे हो। भला मेरे कुएं से भी बड़ी कोई चीज दुनिया में हो सकती है !''

यह कथा स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में सुनाई थी। इस घटना को सौ साल हो गए।

गुलाम भारत का यह युवा संन्यासी बिना बुलाए ही उस सम्मेलन में पहुंचा था। उन दिनों आज जैसी सुविधाएं न थीं। समुद्र के रास्ते वह किसी तरह कनाडा पहुंचे, फिर रेलगाड़ी से शिकागो। लेकिन सम्मेलन होने में दो महीने थे। शिकागो महंगी जगह है। स्वामी जी गली-गली भटकते रहे। उनके पास किसी के लिए पत्र था। पर स्वामी जी से उस आदमी का पता ही खो गया।

थके हुए और भूखे-प्यासे स्वामी विवेकानंद कई दरवाजों पर गए। पर अमरीका भारत न था। उन्हें किसी ने कुछ न दिया। ऊपर से दुत्कार भी दिया। पैरों ने भी जवाब दे दिया। स्वामी जी सड़क के किनारे पटरी पर बैठ गए। वह सोच नहीं पा रहे थे कि क्या करें। उसी समय सामने के मकान का दरवाजा खुला। एक महिला बाहर आई। उसने स्वामी जी के पास आकर पूछा—''क्या आप धर्म सम्मेलन में भाग लेने शिकागो आए हैं ?''

स्वामी के 'हां' कहने पर उसने उन्हें अपने घर ठहरने को कहा। स्वामी जी जार्ज हेल और श्रीमती हेल के अतिथि बन गए।

कोलम्बस हाल में धर्म सम्मेलन शुरू हुआ। उसमें सात हजार श्रोता थे। साठ से अधिक भिन्न-भिन्न धर्मों के वक्ता थे। स्वामी जी की बारी आई, तो वह खड़े हुए। गेरुए कपड़े पहने, सिर पर पगड़ी, दमकता चेहरा। उन्होंने शुरू किया—''मेरी अमरीकी बहनों और भाइयो...''

इतना सुनना था कि हाल तालियों से गूंज उठा। देर तक तालियां बजती रहीं।

स्वामी जी के पास औरों की तरह तैयार किया भाषण न था। वह जो कुछ बोले, उसने सभी के दिल को छुआ।

उनके भाषण पर प्रसिद्ध अमरीकी पत्र 'न्यूयार्क हैरल्ड' ने लिखा—'धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद सर्वश्रेष्ठ वक्ता सिद्ध हुए। उनके तर्कों ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत धर्म के क्षेत्र में बहुत आगे है। यहां से ईसाई धर्म प्रचारकों को भारत भेजना बेमानी है।'

अमरीका में हर ओर स्वामी जी की ख्याति फैल गई। इसके बाद वह विलायत गए और यूरोप के कई देशों में भी। हर जगह उन्होंने भारत का नाम ऊंचा किया।

कई वर्ष बाद भारत लौटने पर स्वामी जी का अनोखा स्वागत हुआ। उन्होंने सोते देश को जगाया। दीन-हीन की सेवा ही प्रभु की सेवा है—यह मंत्र भी उन्होंने दिया। इसी उद्देश्य से रामकृष्ण मिशन की स्थापना कराई।

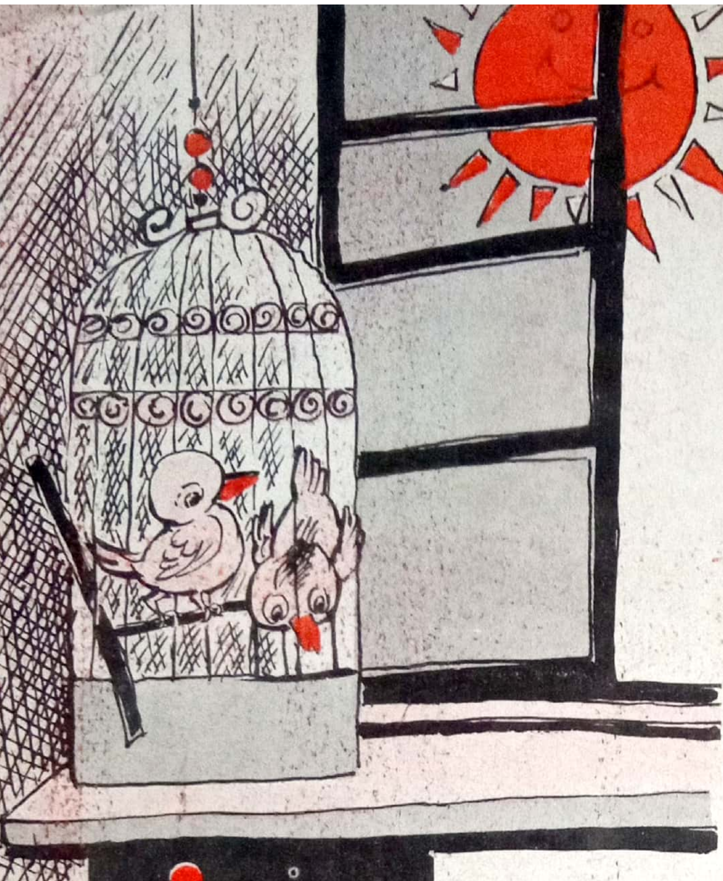
उठो, जागो और लक्ष्य पाने तक मत रुको—यह संदेश देने वाले स्वामी विवेकानंद को नमन।

'नंदन' की ओर से पांच चित्र प्रतियोगिताएं राजधानी में हो चुकी हैं। इनमें हजारों बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। स्कूलों ने भरपूर सहयोग दिया।

इस बार प्राचीन कथा विशेषांक अप्रैल का न होकर, मई का होगा—उन दिनों छुट्टियां होती हैं ना।

—तुम्हारे भइया

Scanned with CamScanner



नंदन

मार्च '९३

वर्ष : २९ अंक : ५

कहां क्या है

कहानियां

सम्पादक

जयप्रकाश भारती

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : अखिलेश

एलबम : एस.एस. बृजवासी

सहायक सम्पादक : **देवेन्द्रकुमार**

मुख्य उप-सम्पादक : **रत्नप्रकाश शील**

वरिष्ठ उप-सम्पादक : **क्षमा शर्मा** उप-सम्पादक : **डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्र कुमार** चित्रकार : **प्रशांत सेन**





राम का वचन

—नीलम शर्मा

एक समय भगवान राम दरबार में बैठे थे। आसपास तीनों भाई और गुरु वशिष्ठ भी दरबार में थे। अनेक प्रकार की चर्चाएं चल रही थीं। तभी प्रतिहारी ने आकर निवेदन किया—"प्रभु, एक ब्रह्मचारी आपसे मिलना चाहता है।"

राम ने कहा—"उन्हें आदर पूर्वक ले आओ।"

आने वाला ब्रह्मचारी युवक था। उसके चेहरे पर कांति थी। वह एक हाथ में दंड धारण किए था। दूसरे में कमंडल था। वस्त्रों की जगह मृग चर्म धारण कर रखा था। ब्रह्मचारी को देखते ही राम सिंहासन से उठ खड़े हुए। थोड़ा आगे बढ़कर उन्होंने ब्रह्मचारी को प्रणाम किया। पास ही एक ऊंचे आसन पर बैठाया। इसके बाद राम ने ब्रह्मचारी को अपने हाथ से ठंडा जल पिलाया। लग रहा था, वह दूर से चला आ रहा है और प्यासा है। सचमुच जल पीकर ब्रह्मचारी के मुखमंडल पर प्रसन्नता झलक आई थी।

राम ने कहा—"आपके आगमन से राजसभा पवित्र हुई। आपके दर्शन से मैं धन्य-धन्य हुआ। आप किस कारण यहां पधारे हैं? कृपया मुझे आज्ञा दें कि मैं आपके लिए क्या करूं?"

राम की बात सुनकर, ब्रह्मचारी कहने लगा—"महाराज राम, महर्षि वाल्मीकि जी ने मुझे आपके पास भेजा है। परसों वह एक महायज्ञ करना चाहते हैं। यज्ञ में आपको बुलवाया है। यही संदेश देने मैं आपके पास आया हूं। कल बहुत ही अच्छा मुहूर्त है। आप मेरे साथ सपरिवार महायज्ञ में भाग लेने चलें। महर्षि ने आज्ञा दी है कि मैं आपको साथ लेकर ही आऊं।"

राम ने कहा—"ठीक है। मैं कल सपरिवार आपके साथ चलूंगा। आज आप अतिथिशाला में रहकर मेरा आतिथ्य स्वीकार करें।"

इतना कह राम ने ब्रह्मचारी को अतिथिशाला में भेज दिया।

वह ब्रह्मचारी अतिथिशाला में पहुंचा ही था, तभी एक दूसरा ब्रह्मचारी राम दरबार में आया। वह काषाय रंग के वस्त्र पहने था। गले में रुद्राक्ष की मालाएं थीं और सिर पर जटाजूट। राम ने उस ब्रह्मचारी का भी विधिवत सत्कार किया। फिर उससे भी आने का कारण पूछा। ब्रह्मचारी ने विनय पूर्वक राम से कहा—"मर्यादापुरुषोत्तम राम, मैं गुरुवर विश्वामित्र के आश्रम से आ रहा हूं। वह एक यज्ञ करना चाहते हैं। उनके यज्ञ में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि और देवगण पधार

Scanned with CamScanner

रहे हैं। महर्षि चाहते हैं कि आप भी सपरिवार यज्ञ में भाग लें। मुझे आज्ञा हुई है कि मैं आपको साथ लेकर आऊं।''

राम ने कहा—''महर्षि विश्वामित्र का निमंत्रण सिर-माथे। यज्ञ में भाग लेना मेरे लिए सौभाग्य का काम है। मैं अवश्य जाऊंगा। आप रात्रि भर अतिथिशाला में विश्राम करें। कल प्रातःकाल मैं आपके साथ गमन करूंगा।'' कहकर राम ने उस ब्रह्मचारी को भी अतिथिशाला में भेज दिया।

राम की बात सुनकर सभी दरबारी चकित थे। वे सोच रहे थे—'राम ने दोनों ब्रह्मचारियों का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। दोनों के साथ सपरिवार कल ही जाना है। भला, यह कैसे सम्भव है कि एक राम एक साथ दो यज्ञों में भाग लें।'

राम ने लक्ष्मण को आदेश दिया—'कल की यात्रा की पूरी तैयारी की जाए। यात्रा में रात्रि विश्राम भी होगा। जहां रात्रि विश्राम हो, वहां तम्बू लगवाकर रहने और खाने-पीने की पूरी व्यवस्था कराई जाए। सभी माताओं, भाइयों तथा उनकी पत्नियों को यज्ञ में भाग लेने के लिए मेरे साथ चलना होगा। उनकी यात्रा सुविधाजनक हो, इसका भी पूरा प्रबंध कराया जाए। हाथी-घोड़े, रथ और दूसरे वाहनों का ठीक से प्रबंध करो।

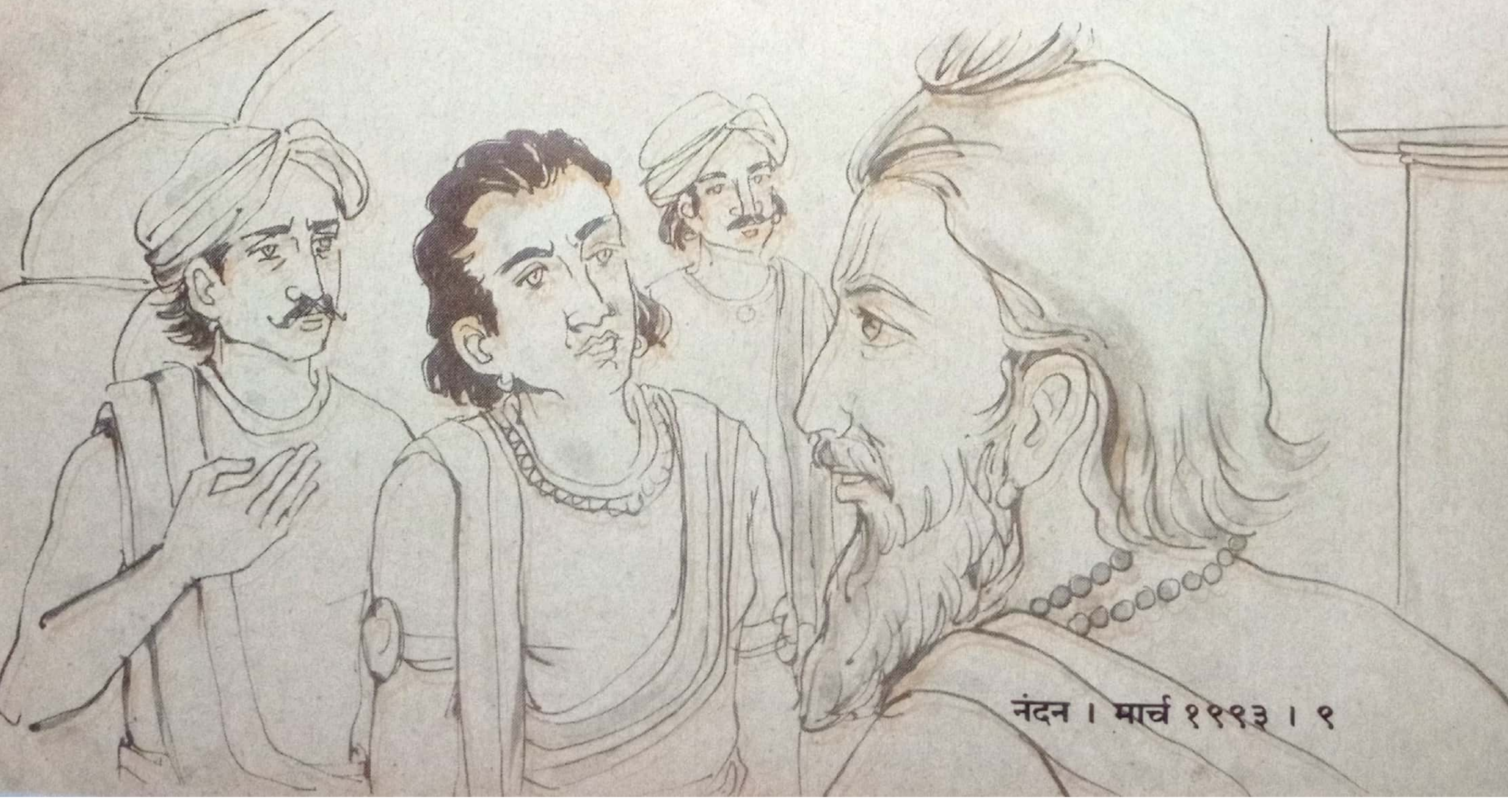
'अंगरक्षक और दूसरे विश्वासपात्र सैनिकों को भी साथ ले चलना होगा। हमारी यात्रा की पूर्व सूचना रास्ते में पड़ने वाले नगरों और गांवों में भी पहुंचा दो। ध्यान रहे, इस यात्रा से किसी प्रजाजन को कोई कष्ट न पहुंचे। मार्ग को शीघ्र ठीक करा दो, ताकि ऊंचे-नीचे मार्ग पर चलने से माताओं को कोई कष्ट न हो।'—यह आदेश देकर राम अपने महल में चले गए।

सभासदों ने कुलगुरु वशिष्ठ से पूछा—''महर्षि, यह क्या चमत्कार है। भगवान राम दो यज्ञों में एक साथ भाग कैसे लेंगे, वह भी परिवार के साथ। क्या दोनों जगह सभी लोग एक साथ जा पाएंगे?''

वशिष्ठ मुसकराकर बोले—''राम ने जो कहा, उसमें शंका कैसी? राम ने दोनों जगह जाने को कहा है, तो वह दोनों जगह एक साथ ही जाएंगे। यह हमारा सौभाग्य है कि राम के इस चमत्कार को हम अपनी आंखों से देखेंगे।''

दूसरे दिन यात्रा की सभी तैयारियां पूरी थीं। हाथी-घोड़े और रथ सजकर राजमहल के मुख्य द्वार पर आ गए। यात्रा के लिए आवश्यक सामान भी हाथियों पर लाद दिया गया। घोड़ों पर आगे-आगे अंगरक्षक चले। उनके हाथों में चमचमाते भाले और धनुषबाण थे। उन्होंने कवच पहन रखे थे, जो सूर्य की रोशनी में सतरंगा प्रकाश फैला रहे थे।

निश्चित समय राजपरिवार के सभी सदस्य



अपने-अपने वाहनों में सवार हो गए। सबके बैठने के बाद राम भी रथ में बैठ गए।

पुरोहितों ने मंगलगान किया। भाट स्तुति गान करने लगे। बाजे बज उठे। श्रीराम की जय-जय के साथ यात्रा शुरू हुई। दोनों ब्रह्मचारी साथ थे। उनकी भी समझ में नहीं आ रहा था कि राम किस यज्ञ में भाग लेने जा रहे हैं ?

लम्बी यात्रा थी। शाम ढलते-ढलते वे यात्रा के पड़ाव पर पहुंचे। रात्रि यहीं बितानी थी। ठहरने और खाने-पीने का सारा प्रबंध पहले से ही हो गया था। सभी ने वहां सुख से रात्रि बिताई।

यहां से एक मार्ग महर्षि वाल्मीकि के आश्रम को जाता था और दूसरा महर्षि विश्वामित्र के आश्रम को। इस कौतुक को देखने ब्रह्मर्षि वशिष्ठ भी वहां पहुंच गए थे। राम ने स्नान-पूजा के पश्चात गुरु की चरण वंदना की। फिर सब अपने वाहनों में जा बैठे। राम के दो रूप थे। राम के ही क्या—देखते-देखते सभी रथ, हाथी, घोड़े दूने हो गए। राम के साथ राजपरिवार का एक दल चला महर्षि वाल्मीकि के आश्रम को और दूसरा दल चला विश्वामित्र के आश्रम की ओर।

राम ने दोनों यज्ञों में भाग लिया। दोनों महर्षि उनसे प्रसन्न थे। राम का दल लौटा। एक ही समय दोनों दल यात्रा के उसी पड़ाव पर पहुंचे। फिर रात्रि विश्राम किया। रात भर भजन-कीर्तन, उपदेश और धर्म चर्चा चलती रहीं। आज फिर वशिष्ठ जी प्रजाजनों और सभासदों के साथ राम की अगवानी करने यहां आ गए थे।

दूसरा दिन आया। सुबह हुई। वशिष्ठ जी ने देखा—राम के दो दल अब वहां नहीं थे। था वही एक दल जो अयोध्या से चला था। राम ने फिर गुरु की वंदना की और मुसकराकर अपने रथ में बैठ गए।

वशिष्ठ जी मन ही मन राम के स्वरूप की वंदना करने लगे। वह कह रहे थे—'भगवान होकर भी राम, तुम मानव की मर्यादा नहीं छोड़ पाते। तुम हम सबके पूज्य हो, वंदनीय हो, फिर भी हमें मान देने के लिए हमारी पूजा करते हो। हे सर्वव्यापी, सर्व सामर्थ्यवान राम तुम्हें मेरा नमस्कार।' ●

सफेदी के नीचे

—मेखला

बिसारा के राजा थे वीरदेव। एक बार बारिश न हुई। फसलें सूख गईं। लोग दुखी थे, पर किसी में राजा से कुछ कहने की हिम्मत न थी।

एक दिन कुसुमपुर गांव का मुखिया राजा को निमंत्रण देने आया। वहां के प्राचीन मंदिर में विशेष पूजा का आयोजन था। राजा चल दिए।

थोड़ा आगे रास्ता पहाड़ी के बीच से था। राजा ने देखा, दोनों ओर चट्टानों पर लिखा है—'महाराज वीरदेव की जय।' लेकिन उससे नीचे भी कुछ लिखा था, जिस पर सफेदी पोत दी गई थी। वह वाक्य पढ़ा नहीं जा रहा था।

राजा वीरदेव ने मंत्री से कहा—"मिटा हुआ वाक्य क्या है, पता करो। और उसे क्यों मिटाया गया ?"

सैनिक आगे दौड़े। कुछ देर बाद वे एक व्यक्ति को पकड़ लाए। उसके हाथ-पैरों पर सफेदी के धब्बे थे।

"बताओ, क्या बात है ?"—राजा ने पूछा।

वह व्यक्ति राजा को कुछ आगे ले गया। उसने दिखाया चट्टान पर दो वाक्य लिखे थे—'महाराज वीरदेव की जय ! लेकिन हम अकाल से परेशान हैं।'

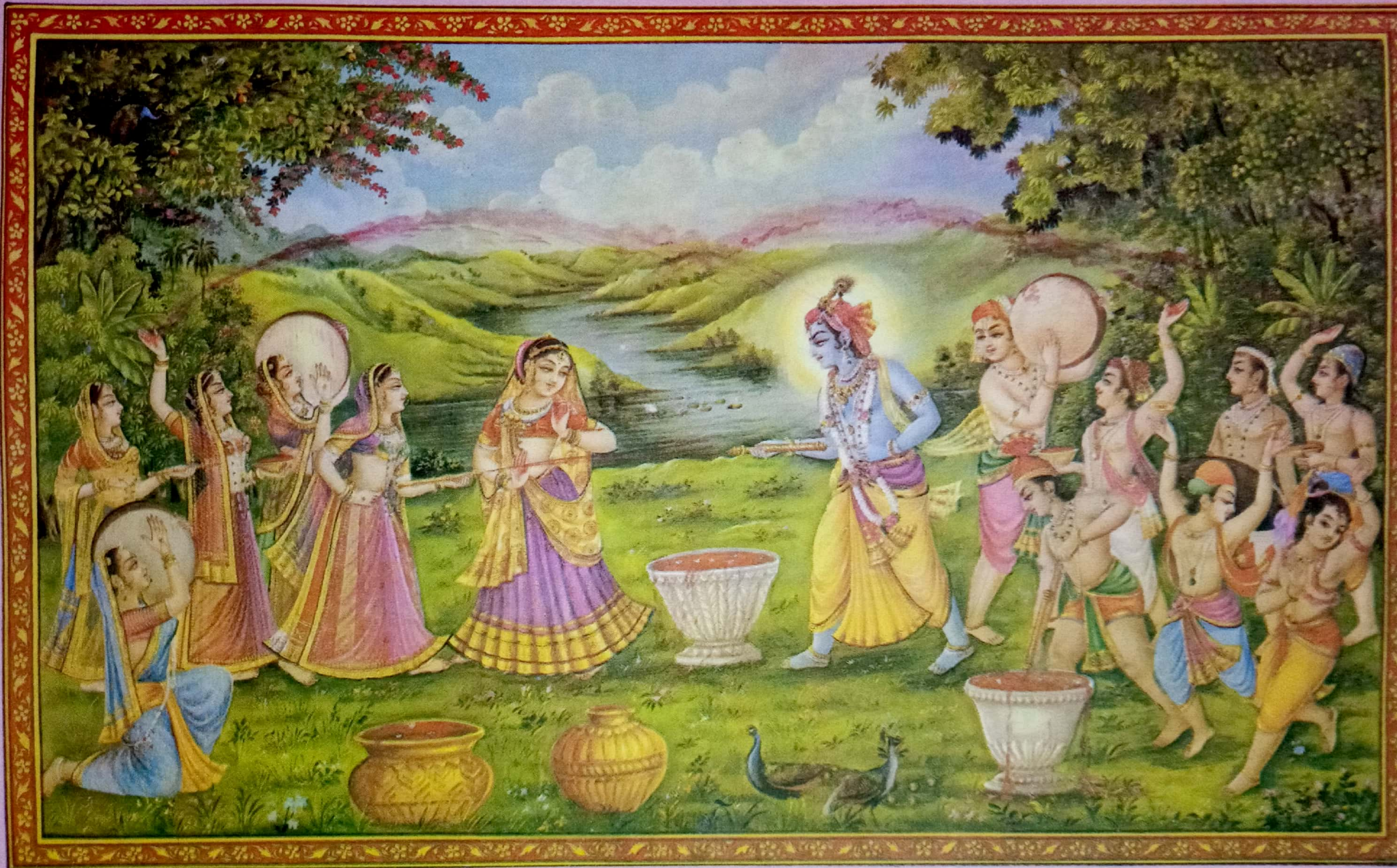
"महाराज, मैंने कोई अपराध नहीं किया। मैं तो जगह-जगह नीचे लिखा वाक्य ही मिटा रहा हूं। उसे पढ़कर आपको कष्ट होगा। क्या यह भी अपराध है ? हम आपकी प्रजा हैं। हमें वही कहना चाहिए, जो आपको अच्छा लगे।"

राजा कुछ पल सोच में पड़े रहे। फिर कहा—"सच को छिपाना अपराध है। चाहे वह कोई भी करे। इसका मतलब यही है कि तुम्हें अपने राजा पर भरोसा नहीं है।"

—"नहीं महाराज, लेकिन फिर भी..."

राजा ने उस व्यक्ति से कहा—"तुम्हारा यही दंड है कि मिटाया हुआ वाक्य फिर से लिखो।" फिर मंत्री से कहा—"मैं चाहता हूं उस वाक्य को आप सब पढ़ें और पीड़ितों को ठीक-ठीक राहत पहुंचाएं।" ●

Scanned with CamScanner



नंदन एलबम : ११०

होली खेल रहे नंदलाल

Scanned with CamScanner



नीली आंखों वाली लड़की

—जयप्रकाश भारती

समंदर के किनारे मछुआरों के कुछ घर थे—छोटे-छोटे। समंदर में दूर-दूर तक जाकर मछलियां पकड़ना और फिर उन्हें बेच देना—यही उनका धंधा था। इन्हीं में एक मछुआरा था-- कोरया। वह था और उसकी मां थी। मां अक्सर मछली पकड़ने के एक न एक जाल की मरम्मत करती रहती थी। आखिर सभी जाल पुराने हो गए थे। उन्हें ठीक किए बिना कोई चारा न था।

कोरया कभी-कभी दो-तीन दिन में घर लौटता। उसके पास काफी मछलियां होतीं। मां कहती—''समंदर की तुझ पर खास मेहरबानी है बेटा।''

एक बार कोरया की मां बीमार पड़ गई। बेटे ने मां का इलाज किया और टोने-टोटके भी किए, पर कुछ लाभ न हुआ। एक दिन मां उसे छोड़कर चल बसी। कोरया खूब रोया। दुनिया में अब कोई भी उसका अपना न था।

वह अब समंदर में जाता तो दूर, बहुत दूर निकल जाता। घर लौटने को उसका मन न होता। आखिर में जब वह लौटता तो सब कुछ खाली-खाली लगता। एक दिन कोरया मछलियां पकड़ने निकला। लेकिन दोपहर तक कुछ भी उसके हाथ न लगा। मछलियां जैसे फिसल-फिसल कर उसके जाल से बच निकलती थीं। वह काफी आगे निकल आया था।

Scanned with CamScanner

अचानक काले-काले बादल घिर आए। उन्होंने सूरज को पूरी तरह ढक लिया। हवा चलने लगी और तेज-तेज होती गई। युवा कोरया ने घर की ओर लौटना चाहा, किंतु उसकी नाव ने तो जैसे जवाब दे दिया था।

लेकिन ईश्वर की कृपा थी—कुछ अनहोनी न हुई। शाम तक हवा मंदी पड़ गई। लहरें भी शांत हो चलीं। ऐसे में कोरया घर की ओर लौटने लगा। तभी उसने बंदरगाह के एक किनारे काली-काली चट्टानें देखीं। वहीं उसे एक जहाज भी दिखाई दिया। जहाज खस्ताहाल था, मस्तूल उखड़े हुए। जहाज पर इधर-उधर कोई दिखाई नहीं दिया। कोरया झट से उस जहाज पर चढ़ गया। आदमी तो आदमी, कोई चूहा तक उसे वहां दिखाई न दिया।

कोरया नीचे की ओर गया, तो उसने कप्तान का केबिन देखा। केबिन में कीचड़ हो रही थी, घास उग आई थी। एक ओर कप्तान के सोने के लिए पलंग जैसा था। उसी के ऊपर एक बड़ी तस्वीर लगी थी। चौड़े नक्काशीदार फ्रेम में मढ़ी वह तस्वीर एक लड़की की थी। सुनहरे बालों वाली लड़की, जिसकी नीली-नीली आंखें थीं।

कोरया उसे देखता रहा, देखता रहा। मन ही मन बोला—'मैं तुम्हें यहां छोड़ कर नहीं जाऊंगा।' उसने बड़ी सावधानी से तस्वीर उतार ली और लेकर बाहर निकल आया। कोरया सोच रहा था—'घर कैसा काटने को दौड़ता है। कम से कम यह सुंदर तस्वीर वहां लग जाएगी, तो ऐसा लगेगा जैसे कोई है।'

कोरया घर पहुंच गया। उसने सबसे पहले तस्वीर टांग दी। फिर बोला—"ठीक है, ठीक है, अब जब भी मैं घर आया करूंगा, तुम यहां मेरा स्वागत करने को मौजूद रहोगी।"

कोरया थक गया था। दिन भर वह कुछ नहीं कर पाया था। लेकिन सोते समय वह खुश था। उसने तस्वीर की ओर देखा, तो उसे लगा, जैसे सुनहरे बालों वाली लड़की उसी को देख रही हो।

दूसरे दिन से कोरया का जीवन बदलने लगा। अब शाम को घर लौटना उसे अच्छा लगता। घर में उसे बार-बार यही महसूस होता कि नीली आंखों वाली लड़की उसी को देख रही है। सोने से पहले वह अक्सर तस्वीर के सामने बैठ जाता और अपने बारे में, अपनी मां के बारे में किस्से सुनाया करता। वह उसे बताता कि आज कैसे मछलियां पकड़ीं या किस खरीदार ने उसे बेवकूफ बनाने की चेष्टा की।

यों ही समय बीतता रहा। एक शाम कोरया घर लौटा। उसने झटपट खाना खाया। उसे जाल की मरम्मत करनी थी। उसने जाल कमरे में फैला लिया। लेकिन जाल तो ठीक-ठाक था। कोरया सोचने लगा—'शायद पहले कभी जब मां जिंदा थी, तभी उसने इसे ठीक किया होगा। रात को जब वह सोने को लेटा, तो तस्वीर की ओर देखा। उसे महसूस हुआ, मानो वह लड़की मुसकरा रही हो।

'अरे, मैं भी कैसा नासमझ हूं। आखिर वह है तो तस्वीर ही। ये तो सपनों की बातें हैं।'—कुछ ही देर में कोरया के खर्राटे सुनाई देने लगे।

तीसरे दिन कोरया काम से लौटा, तो उसे कुछ हैरानी हुई। घर की खिड़की खुली थी। घर में ऐसा भी लग रहा था जैसे साफ-सफाई की गई हो। वह सोचने लगा—'जरूर मैं ही खिड़की बंद करना भूल गया। तेज हवा चली होगी या बूंदा-बांदी के कारण सब धुला-धुला-सा लग रहा है।' वह कुछ मिठाई लेकर आया था। वह दोना उसने तस्वीर के सामने ही रख दिया।

चौथे दिन कोरया शाम को देर से लौटा। उसे घर



में कुछ नया-नया-सा मालूम हुआ । उस लड़की की आंखों से लगा कि मानो कोरया की राह देख रही हो । घर में अंगीठी जली हुई थी । गर्मागर्म सूप और खाना तैयार रखा था । वहां कोई और तो था ही नहीं । कोरया बार-बार तस्वीर की तरफ देखता,तो लगता जैसे वह लड़की मुसकरा रही हो । पर वह कुछ भी बोलती तो थी नहीं ।

उस रात कोरया को नींद नहीं आई । वह करवटें बदलता रहा और सोचता रहा कि यह पहेली कैसे सुलझाए । आखिर घर में खाना किसने बनाया, कैसे बना !

सुबह हुई, सूरज निकला । कोरया अपना जाल तथा दूसरी कुछ चीजें लेकर बंदरगाह की ओर चल दिया । वहां पहुंच कर उसने सामान नाव में रख दिया । कुछ ही देर में वह दबे पांव घर की ओर लौट चला । घर के निकट पहुंचा ही था कि उसे किसी की आवाज सुनाई दी—कोई मधुर गीत गुनगुनाने की आवाज थी । खिड़की खुली थी । कोरया ने उसमें से झांका,तो वह हैरान रह गया । तस्वीर का फ्रेम खाली था । नीली आंखों वाली लड़की तो स्वयं जीती-जागती सामने खड़ी थी । वही एक टोकरी लिए हुए मुर्गियों को दाना डालते हुए गुनगुना रही थी ।

कोरया घर के भीतर नहीं गया । वह सोचता रहा, सोचता रहा । उसे याद आया कि एक बूढ़ी औरत गांव से दूर झोंपड़ी में रहती है । वह जादू-मंतर भी करती है । उलझन और मुसीबत में फंसे लोग उसके पास जाते हैं तो वह कोई न कोई उपाय सुझा देती है । कोरया झटपट उसके पास जा पहुंचा ।

बुढ़िया ने उसे देखते ही कहा—"तुम उस तस्वीर वाली लड़की के कारण परेशान हो न ? बहुत आसान है इसका हल । जब वह लड़की फ्रेम से बाहर हो, तुम फ्रेम उठा लेना और उसे किसी कमरे में बंद करके ताला डाल देना । ताले की चाबी तीन बार घुमाकर गले में ताबीज की तरह पहन लेना । चाबी को हमेशा अपने पास ही रखना । जब फ्रेम न होगा,तो वह तस्वीर कैसे बन सकेगी ?"

कोरया ने बुढ़िया को दक्षिणा दी, फिर घर लौटा । खिड़की के रास्ते घर में घुसा । तस्वीर का फ्रेम उठाया और छोटे कमरे में बंद कर दिया । ताला लगाकर उसकी चाबी गले में डाल ली । नीली आंखों वाली लड़की ने उसे देखा तो वह शरमा गई । फिर उसने फ्रेम न देखा तो रोने लगी । लेकिन फिर चुप हो गई । इसके बाद जल्दी ही वह कोरया के साथ हिल-मिल गई ।

कोरया अच्छे स्वभाव का युवक था । वे दोनों पति-पत्नी की तरह रहने लगे । समय बीता तो उनके घर एक लड़के का जन्म हुआ । उसका नाम मोरया रखा । वह बड़ा होने लगा । अपनी मां की तरह सुंदर और पिता की तरह वह अच्छी कद-काठी का था । मोरया युवा हो गया तो उसे जहाज पर नौकरी मिल गई । उसकी मां नहीं चाहती थी कि वह समंदर में दूर-दूर तक जाए और घर से अलग रहे । लेकिन कोरया ने बेटे से कहा—"अच्छा है,तुम जहाज पर यात्राएं करो । दुनिया में देखने को बहुत कुछ है । नए-नए लोगों से तुम मिलोगे और नए अनुभव होंगे । जो मैं नहीं कर पाया, वह तुम कर सकोगे । हो सकता है, अपनी मेहनत के दम पर तुम किसी दिन जहाज के कप्तान ही बन जाओ ।"

बरस पर बरस बीतते गए । कोरया बूढ़ा हो गया । उसके बाल सफेद हो गए । अब उसमें इतनी ताकत भी नहीं थी कि समंदर में जा सके और



Scanned with CamScanner

मछलियां पकड़ सके। बस, वह बैठा रहता। इंतजार करता रहता कि एक दिन कोई जहाज आएगा और उसका बेटा मोरया उस जहाज का कप्तान होगा। कोरया की पत्नी पर भी समय ने असर डाला था। उसके सुनहरे बाल अब सन जैसे हो गए थे। पर वह अब भी सुन्दर थी। उसकी नीली आंखों में अनोखी चमक थी।

मोरया वर्ष में एकाध बार घर आता। तरह-तरह के उपहार माता-पिता के लिए लाता। कुछ दिन घर पर रहता, फिर यात्रा पर निकल पड़ता था। एक दिन वही हुआ, जो होना था। कोरया के प्राण पखेरू उड़ गए। उसकी पत्नी ने देखा कि कोरया के गले में जंजीर में कोई चाबी है। उसने चाबी निकाली। जो छोटा कमरा बरसों से बंद पड़ा था, उसका ताला खोला। कमरे के भीतर मछली पकड़ने के पुराने जाल थे, कुछ और भी छोटा-मोटा सामान था। वहीं उसने देखा कि लकड़ी का नक्काशीदार फ्रेम भी है। उसने फ्रेम उठा लिया। उसे साफ किया और उस पर रंग-रोगन किया। फिर वह तस्वीर की तरह उस फ्रेम में सिमट गई।

संयोग की बात—उसी दिन शाम को मोरया लम्बी यात्रा से लौटा। घर लौट आना उसके लिए खुशी का मौका होता था। इस बार वह जहाज का कप्तान बन कर लौटा था। पर आज तो घर में मातम था। घर उजड़ चुका था। उसने पिता का अंतिम संस्कार किया। मोरया ने देखा कि दीवार पर उसकी मां की सुंदर तस्वीर लगी है। वह सोचने लगा—'अरे, पिता जी ने मां की ऐसी सुंदर तस्वीर कब बनाई! मुझे पता तक नहीं कि पिताजी पेंटिंग भी कर लेते थे। वाह, मां से उन्हें कितना लगाव था।'

कई दिन बाद, मोरया ने वह तस्वीर उतार ली। जिस जहाज का वह कप्तान था, उसे लेकर जाना था। अपने केबिन में मोरया ने वह तस्वीर लगा ली। सोने से पहले वह तस्वीर के सामने बैठ जाता। उससे अपने दुःख-सुख की बातें किया करता। उसे लगता था कि मां उसकी बातें ध्यान से सुनती है। कोरया का घर उजड़ चुका था, मोरया को बसाना था। ●



सुख का दुख

—जियाउर रहमान जाफरी

नरोत्तम नाम का एक राजा था। स्वभाव से कठोर था। राजकाज में किसी से सलाह लेना उसे न भाता था। जो उसके मन में आता, उसे ही वह कानून बना देता। कानून का पालन न करने वाले को कठोर दंड देता। दरबारियों से वह अधिकतर कहा करता कि मुझ-सा बुद्धिमान और शक्तिशाली यहां कोई नहीं है। राजकाज मुझसे ही चल रहा है। तुममें और प्रजा में न बुद्धि है और न बल। दरबारी भी चुप रह जाते थे।

प्रजा राजा के अत्याचारों से परेशान थी पर किसी में हिम्मत न होती कि राजा का मुकाबला करे।

राजा का एक पुत्र था कुंवर चंद्रसेन। उसका स्वभाव राजा से अलग था। वह पिता को बराबर सचेत करता रहता। पर राजा उसकी एक न मानता। एक दिन राजकुमार ने कहा— "पिताजी, यह राज्य आपके बल पर ही नहीं चल रहा है। इसमें दरबारियों का एवं प्रजा का भी बहुत बड़ा हाथ है।"

राजा यह सुन, बौखला गया। उसने राजकुमार को डांट लगाई। राजकुमार चुप हो गया। उस दिन से वह उदास रहने लगा।

एक दिन राजकुमार जंगल में सैर कर रहा था। अचानक उसके कानों में किसी की आवाज पड़ी। वह उधर बढ़ चला। कुछ दूर जाकर उसने देखा— एक महात्मा अपने शिष्य को कहानी सुना रहे हैं।

राजकुमार भी कहानी सुनने लगा। उसे कहानी बहुत अच्छी लगी। कहानी खत्म हुई तो उसने महात्मा

Scanned with CamScanner

को प्रणाम किया और अपना परिचय दिया। वह महात्मा से मिलकर बहुत खुश था। अब वह रोज वहां कहानियां सुनने जाने लगा।

राजा नरोत्तम को पता चला कि आए दिन राजकुमार न जाने कहां गायब हो जाता है। उसे शक हुआ कि कहीं राजकुमार मेरे खिलाफ कुछ षड्यंत्र न रच रहा हो। वह सावधान हो गया। राजकुमार पर नजर रखने लगा।

एक रात, देर तक राजकुमार महल में न लौटा। राजा को संदेह हुआ। वह राजकुमार को खोजने निकल पड़ा।

राजा घूमता हुआ उसी जंगल में पहुंचा। कुछ दूर चला, तो उसे महात्मा की कुटिया दिखाई दी। उसने देखा, एक महात्मा राजकुमार और अपने एक शिष्य को कहानी सुना रहे हैं। राजा वहीं खड़ा होकर कहानी सुनने लगा।

कहानी खत्म हुई, तो राजकुमार ने पूछा— ''महाराज, संसार में सबसे बड़ा कौन है।''

—''बेटा, तुम्हारा प्रश्न अति उत्तम है। मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं जिससे तुम्हारी शंका का समाधान हो जाएगा।'' राजकुमार और शिष्य ने महात्मा जी से कहानी सुनाने का निवेदन किया।

महात्मा कहानी सुनाने लगे— ''एक दिन हवा, पानी और बादल में लड़ाई हो गई। हवा का कहना था कि दुनिया उसी से जी रही है। अगर वह कुछ देर के लिए रुक जाए तो सारे जीव-जंतु समाप्त हो जाएंगे।

''पानी ने कहा कि सबसे बड़ा वह है, क्योंकि सभी प्राणी उसे पीकर ही जिंदा रहते हैं। पेड़-पौधों का भी वह जीवनदाता है। तभी बादल ने ठहाका मारा। कहा— 'तुम लोग पागल हो गए हो। सबसे बड़ा मैं हूं। अगर मैं न होता, तो पानी कहां से धरती पर आता?'

''सभी अपने को एक-दूसरे से बड़ा कह रहे थे। पर हल कुछ न निकला।

''फैसले के लिए वे इंद्र के पास पहुंचे। इंद्र ने उनकी बातें सुनने के बाद कहा— 'हवा, तुम अकेली पानी बरसा सकती हो?'

''हवा ने काफी सोचकर कहा— 'भला मैं अकेली पानी कैसे बरसा सकती हूं?' इंद्र ने अब बादल से पूछा— 'बादल, क्या तुम अकेले वर्षा कर सकते हो।' बादल ने कहा-'जब तक हवा मुझे चारों ओर न फैलाए, पानी मुझे न मिले, तो मैं कैसे वर्षा कर सकता हूं?'



''फिर भगवान इंद्र ने पानी से भी सवाल किया। पानी ने कहा— 'नहीं, जब तक बादल मुझे आकाश में न ले जाए, तब तक मैं भला वर्षा कैसे कर सकता हूं?' इंद्र ने कहा— 'तुम तीनों ही बराबर हो। मिल-जुलकर रहने पर ही तुम्हारा अपना-अपना महत्व है।' हवा, बादल और पानी खुशी-खुशी लौट गए।''

महात्मा ने मुसकराकर कहा— ''राजकुमार, मैं समझता हूं, तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। संसार में सभी जीव-जंतुओं का अपना-अपना महत्व है। एक-दूसरे के सहयोग से दुनिया चलती है।''

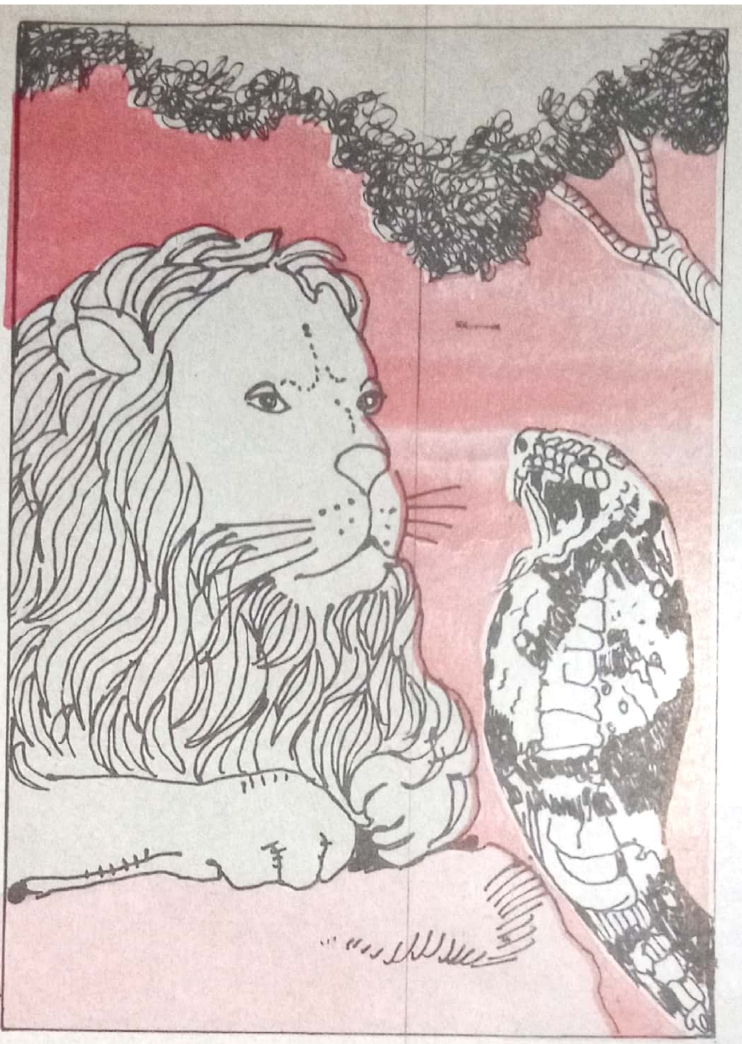
इतना सुनना था कि राजा नरोत्तम का दिमाग घूम गया। उसे लगा कि वह आज तक गलती पर था। वह दबे पांव महात्मा के पास पहुंचा। महात्मा को प्रणाम किया। बोला— ''महात्मा जी, आपने मेरा अहंकार नष्ट कर दिया। मैं आपका आभारी हूं।'' महात्मा ने उसके सिर पर हाथ रख दिया।

राज कुमार के मुंह से निकला—''पिताजी, आज आप यहां कैसे?''—''बेटा, आज तुम्हारी बदौलत मेरी बुद्धि ठिकाने आई है। दुनिया में सब बराबर हैं। मिल-जुलकर काम करने में ही सबका भला है।''

महात्मा ने दोनों को आशीर्वाद दिया। वह महल की चल पड़े। •

चींटी पैर तले

—डा. ओम्प्रकाश सिंहल



घटना पुरानी है। उन दिनों घने जंगल थे। एक बार किसी जंगल में भयंकर अकाल पड़ा। पेड़ों पर न फल रहे, न पत्ते। घास का तो नामोनिशान मिट गया। भूख-प्यास से बेहाल जानवर मरने लगे। सभी सोचते थे कि शायद थोड़े दिनों में सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन दिन पर दिन बीतते गए। हालत ठीक होने की जगह और ज्यादा बिगड़ती चली गई। एक दिन जंगल के राजा ने अपनी सारी प्रजा को मिल-बैठकर सलाह करने के लिए बुलाया। जब सब इकट्ठे हो गए, तब जंगल के राजा ने कहा—"आज जैसी हालत है, वह आप सब जानते हैं। हमारे माता-पिता, भाई-बहन भोजन न मिलने की वजह से मरते जा रहे हैं। अगर थोड़े दिन तक यही हालत और रही, तो हम सबका वंश नाश हो जाएगा। इसलिए हमें यह सोचना है कि इस मुसीबत से छुटकारा कैसे पाया जाए? सब अपनी-अपनी राय दें। सम्भव है, किसी के दिमाग में कोई ऐसी बात सूझ जाए, जिससे हम सब बच जाएं।"

सब चुप रहे। बोलने की पहल किसी ने नहीं की। आखिर राजा ने ही कहा—"हम में सबसे ज्यादा दुनिया सांप ने देखी है। वह जमीन के नीचे भी दूर-दूर तक जा सकता है और जमीन पर भी। मैं चाहता हूं कि वह सबसे पहले अपनी राय दे।"

सांप ने कहा—"महाराज! इसमें कोई शक नहीं कि जमीन के नीचे खाने-पीने का विपुल भंडार है। लेकिन उसे ऊपर नहीं लाया जा सकता। मेरी सलाह है कि आप मेरे साथ चलें। मैं जमीन के नीचे छिपा सारा भंडार आपको दिखा दूंगा। आपको जो पसंद हो, वह खाएं या ऊपर ले आएं।"

यह सुनकर जिराफ बोला—"हम जमीन के नीचे पहुंचेंगे किस तरह?"

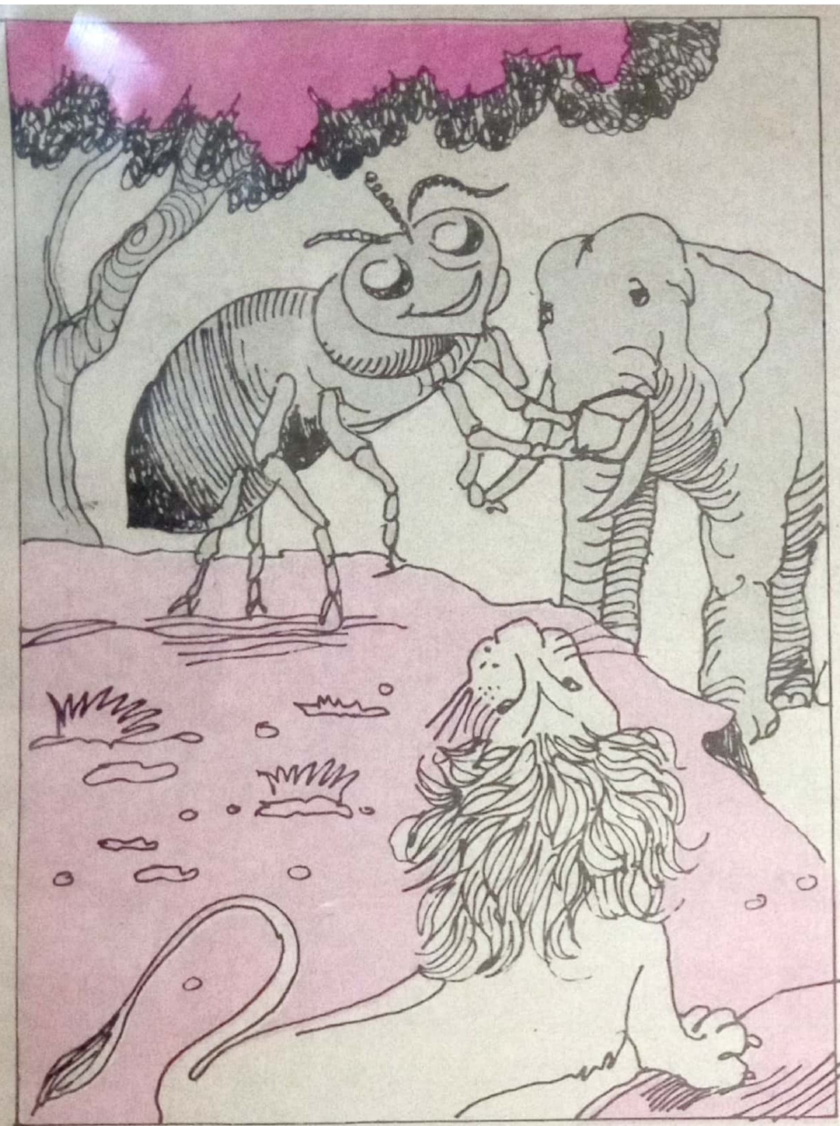
सांप ने जवाब दिया—"मेरे बिल से होकर।"

इससे पहले कि जिराफ कुछ कहता, हाथी ने कहा—"मेरा तो एक पैर भी तुम्हारे बिल में नहीं घुस सकता।"

धीरे-धीरे अनेक पशुओं ने इसी अंदाज में अपनी बात कही।

"मैं आपकी हर संभव सहायता करने को तैयार हूं, लेकिन आप सबको बिल से होते हुए जमीन के नीचे जरूर जाना होगा।"—यह कहकर सांप चुप हो गया।

जंगल के सभी जानवर खरगोश को सबसे ज्यादा बुद्धिमान मानते थे। इसलिए वे उसकी सलाह जानने को उत्सुक थे। लेकिन खरगोश अब तक कुछ सोच नहीं पाया था कि क्या कहे। जब जंगल के राजा ने उससे अपने विचार रखने के लिए कहा, तब वह बोला—"सबको मालूम है कि भूख में अक्ल काम नहीं करती। मैं बहुत दिनों से भूखा हूं। पहले आप मुझे भरपेट भोजन करा दीजिए। ज्यादा नहीं, तो पांच-सात केले ही खिला दीजिए। फिर देखिए, मैं किस तरह सारी समस्या सुलझा दूंगा।" लेकिन उस समय खाने के लिए एक तिनका तक नहीं बचा था।



लोमड़ी बोली—"अगर खाने को ही कुछ बचा होता, तो हम यहां इकट्ठे क्यों होते ?" सुनकर खरगोश मुंह लटका कर बैठ गया।

जंगल के राजा पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उसने अत्यंत गम्भीर आवाज में कहा—"सबसे छोटी है चींटी। पर हमेशा काम में लगी रहती है। हम चाहते हैं कि इस मुसीबत से बचने के लिए यह हमें कोई उपाय सुझाए।"

चींटी ने बहुत ही धीमी आवाज में कहना शुरू किया—"मैं तो सिर्फ यह जानती हूं कि भविष्य में आने वाली मुसीबतों का सामना करने के लिए, पहले से तैयारी करनी चाहिए। मुझे देखिए। मुझे मालूम है कि बरसात में एक भी दाना नसीब नहीं होगा। इसलिए मैं इस मुसीबत से बचने के लिए . . ." अभी चींटी अपना वाक्य भी पूरा नहीं कर पाई थी कि सभी जानवर जोर-जोर से बोलने लगे —'यह हमें सीख देने आई है। हमारा मजाक उड़ाती है। हमें नहीं सुननी इसकी बात।'

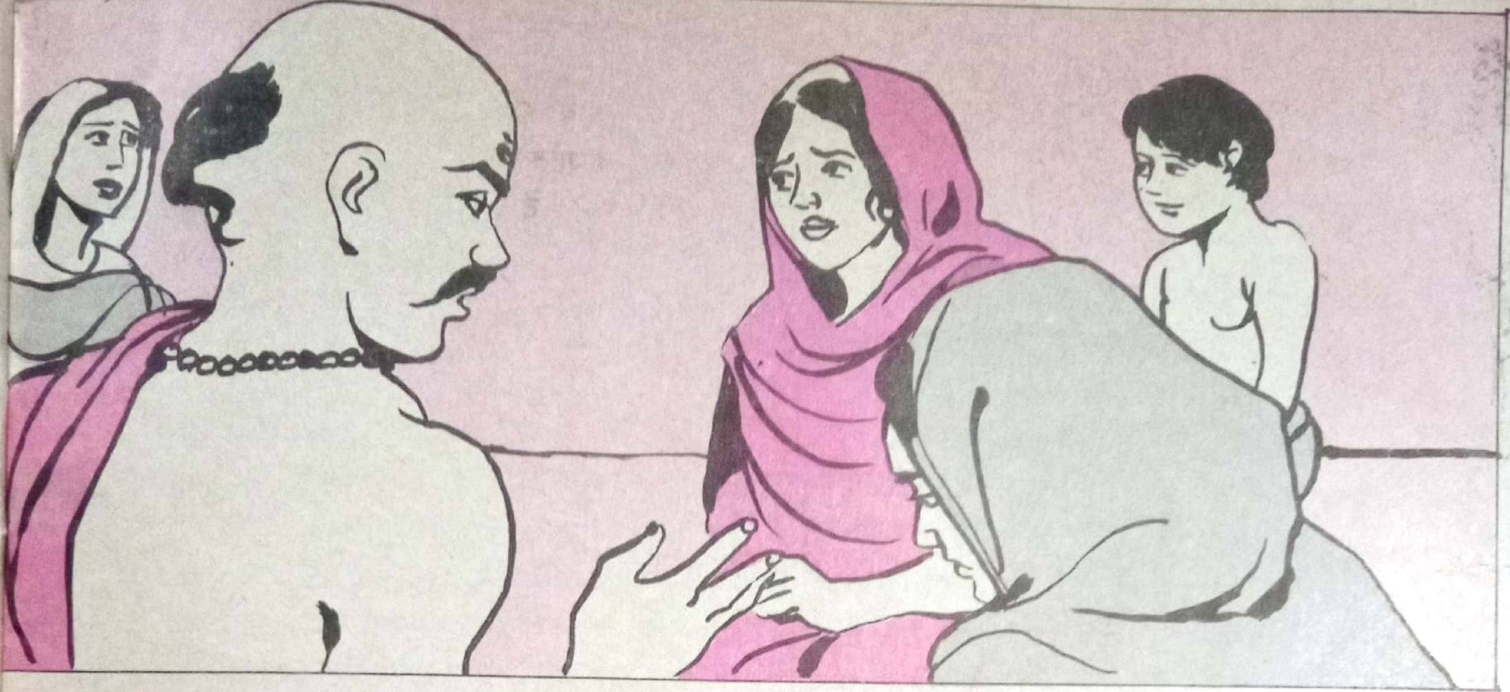
जंगल के राजा ने सबको डांटा। उसने कहा कि आप सब शांत होकर बैठे रहें। चींटी को अपनी बात पूरी करने दें। चींटी ने फिर कहना शुरू किया—"आपके पास तो खाने के लिए कुछ है नहीं, किंतु मेरे पास कुछ चीजें बची हैं। मैं चाहती हूं कि मेरे पास जो कुछ है, उससे काम चलाएं।"

यह कहकर चींटी अपने बिल में गई और थोड़े से दाने ले आई। उन दानों को देखकर हाथी का पारा चढ़ गया। वह बोला—"ओ चींटी ! तू इन दो-तीन दानों से जंगल के सारे जीवों का पेट भरना चाहती है।" यह कहकर उसने अपनी सूंड ऊपर उठाई ही थी कि जंगल के राजा ने अपनी जोरदार आवाज में कहा—"रुक जाओ ! क्या भूख ने तुम्हारी अक्ल खा ली है ? तुम्हें यह सोचना चाहिए कि इस नन्ही-सी जान के पास जो कुछ था, उसे यह बिना कहे ले आई।"

हाथी की गर्जना सुनकर, चींटी का दिल दहल गया था। लेकिन जंगल के राजा ने जो कुछ कहा, उससे उसका मन खिल उठा। उसने एक बार फिर अपना नन्हा-सा मुंह खोलकर कहना शुरू किया—"मेरे पास जो कुछ है, वह सब आपके लिए हाजिर है।" यह कहकर उसने अपने बिल में रखे तरह-तरह के खाद्य पदार्थ बाहर निकालने शुरू किए। खाने-पीने के सामान का ढेर लगना शुरू हो गया। उसे देखकर जंगल के सभी प्राणियों की तबियत हरी हो गई। उनके मुंह में पानी आ गया। वे एकदम उस ढेर की ओर झपटे। तभी जंगल के राजा की गरजती हुई आवाज सुनाई दी—"इतने खुदगर्ज मत बनो। सबसे पहले चींटी का आभार मानो। प्रतिज्ञा करो कि कभी भूल से भी तुम्हारा पैर उसके ऊपर नहीं पड़ेगा। और हां, पहले बच्चों तथा बड़े-बूढ़ों को खिलाओ। इसके बाद ही अपने पेट में डालो। मिल-बांटकर खाओ।"

सबने वैसा ही किया। खाने का सामान ज्यों ही खत्म हुआ, त्यों ही आकाश में काले-काले बादल दिखलाई दिए। देखते ही देखते बारिश की झड़ी लग गई। जानवर खुशी से झूम उठे। कहते हैं कि उस दिन से आज तक चींटी जंगल में बेरोक-टोक घूमती फिरती है। ●

Scanned with CamScanner



किसका भोजन

—अमरनाथ शुक्ल

लाक्षागृह में लगी आग से पांचों पांडव अपनी चतुराई से माता कुंती सहित सकुशल निकल गए। उन्हें विश्वास हो गया कि दुर्योधन किसी न किसी बहाने उन सबको मरवा कर खुद अकंटक राज भोगना चाहता है। उन लोगों ने सोचा— 'दुर्योधन तो यह समझ ही चुका है कि हम सब लाक्षागृह में जल मरे हैं। अतः हमारे पीछे अपना जासूस नहीं लगाएगा। फिर भी हमें वेश बदल कर तथा छिपकर रहना चाहिए। इस बीच अपनी ताकत बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।'

इसी विचार से छिपते-घूमते पांडव एक चक्रा बस्ती में पहुंचे। वहां एक ब्राह्मण के घर रहने के लिए आश्रय मांगा। ब्राह्मण ने उन्हें अतिथि समझकर रहने की व्यवस्था कर दी।

पांचों भाई दिन भर भिक्षा मांगते और शाम को माता के सामने रख देते। माता कुंती पकाकर सबका आधा भाग अकेले भीम को खाने के लिए देती और बाकी में पांचों मां-बेटे खाते।

एक दिन भीम भाइयों के साथ भिक्षा मांगने नहीं गए। ब्राह्मण के घर से रोने की आवाजें आने लगीं। भीम ने कहा— "मां! तुम उनके दुःख का कारण पता लगाओ। मैं उनका दुःख दूर करने के लिए कठिन से कठिन काम भी करूंगा। इस परिवार का हम पर बहुत उपकार है।"

कुंती ब्राह्मण के पास गईं। उन्होंने देखा कि वह अपने परिवार के साथ मुंह लटकाए बैठा है और कह रहा है—"मेरे जीवन को धिक्कार है जो अपने लिए तुम सब को मौत के मुंह में डाल दूं।" फिर अपनी पत्नी से कहने लगा—"राक्षस से अपने जीवन की रक्षा के लिए मैं तुम्हें उसके पास नहीं भेज सकता।"

पति की बात सुनकर पत्नी ने कहा—"स्वामी, एक न एक दिन तो सभी को मरना है। यदि आप नहीं रहे तो मैं अनाथ और विधवा होकर इन बच्चों का उचित पालन नहीं कर पाऊंगी। मेरे जाने से यह परिवार बना रहेगा। यह भी हो सकता है, राक्षस मुझे स्त्री समझकर न मारे।"

मां-बाप की दुःख भरी बातें सुनकर उनकी बेटी बोली—"पिता जी! धर्म के अनुसार तो एक न एक दिन आप मुझे छोड़ेंगे ही। इसलिए परिवार की रक्षा के लिए मुझे आज ही छोड़ दीजिए। विवाह के बाद पराई होकर मुझे उस परिवार के लिए जीना होगा। आज मैं अपने परिवार की रक्षा के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर दूं, इससे बड़ा पुण्य और क्या होगा? इसलिए मुझे ही राक्षस के पास जाने दीजिए।"

यह देख, परिवार का सबसे छोटा लड़का बोला—"आप सब मत रोओ। मैं उस राक्षस को मार डालूंगा।" यह कहकर वह एक छोटा-सा डंडा

Scanned with CamScanner

उठा लाया और उसे जमीन पर पटककर कहने लगा—"मर गया। राक्षस मर गया।"

बच्चे की भोली बातें सुन, पिता ने लपककर उसे गोद में उठा लिया और रो पड़ा।

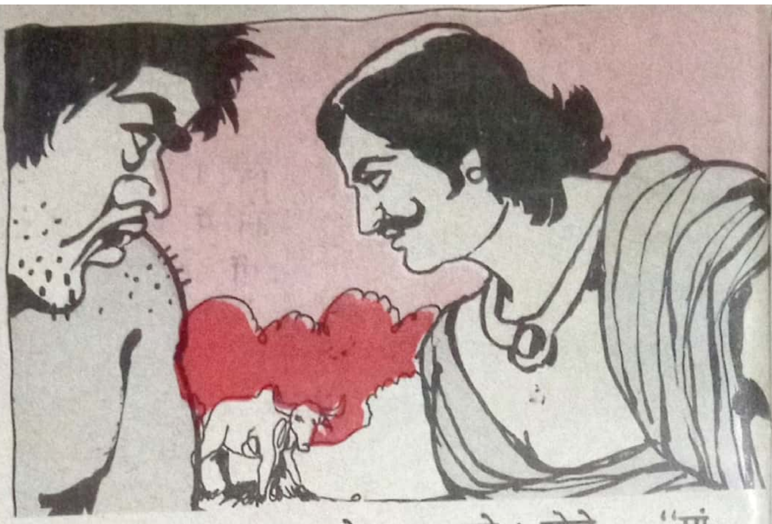
यह सब देख-सुनकर कुंती से न रहा गया। वह बोली—"ब्राह्मण देवता! आपके दुःख का कारण मैं जान गई हूं। पर वह कौन-सा राक्षस है और उसके पास आपको स्वयं क्यों जाना पड़ेगा?" ब्राह्मण बोला—"देवी! मेरा दुःख दूर करना किसी साधारण आदमी के वश का नहीं। इस जंगल में बक नामक एक राक्षस रहता है। उसके रोज-रोज के उत्पात से तंग आकर बस्ती के लोगों ने तय किया था कि उसके खाने के लिए प्रतिदिन बारी-बारी से गाड़ी भर अन्न तथा दो भैंसे भेजेंगे। पर उस राक्षस का पेट इतना बड़ा है कि सब कुछ खाकर अन्न ले जाने वाले आदमी को भी खा जाता है। यहां का राजा भी इतना असहाय है कि इस विपत्ति से हमारी रक्षा नहीं कर पाता। आज हमारी बारी है।"

सारी बात सुनकर कुंती ने कहा—"ब्राह्मण देवता! आप दुखी न हों। आपके तो एक कन्या तथा एक ही पुत्र है। दोनों छोटे हैं। आपमें से किसी का भी जाना ठीक नहीं। मेरे पांच पुत्र हैं। उनमें से एक उस राक्षस का भोजन लेकर चला जाएगा।"

ब्रह्मण ने दांतों तले उंगली दबा ली। बोला—"देवी! मैं अपने जीवन की रक्षा के लिए अतिथि हत्या का पाप नहीं लेना चाहता। ऐसा सोचना भी मेरे लिए पाप होगा।"

कुंती ने कहा—"ब्राह्मण देवता! मैं भी अपने पुत्रों का अनिष्ट नहीं चाहती, पर मुझे विश्वास है कि मेरा पुत्र उस राक्षस को समाप्त करने में समर्थ है। अब तक कई राक्षसों से उसका मुकाबला हो चुका है। उसने सबको मार भगाया। इसलिए आप उसके अनिष्ट की चिंता न करें। बस, राक्षस की भोजन सामग्री जुटा दें। उसे लेकर मेरा पुत्र जाएगा।"

ब्रह्मण को इस तरह तसल्ली दे कर कुंती वापस आई। भीमसेन को उसके दुःख का कारण बताकर अपने प्रस्ताव की जानकारी भी दी।



भीमसेन प्रसन्नता से उछल पड़े। बोले— "मां, तुमने यह मेरे मन की बात कही। जाकर उनसे कहो कि अन्न और भैंसे का प्रबंध करें। हां, एक बात का वचन जरूर ले लेना। अगर राक्षस मारा जाए, तो वह यह बात किसी को न बताएं कि राक्षस को किसने मारा है? अगर भेद खुल गया, तो दुर्योधन के जासूसों से अपने को छिपाए रखना मुश्किल होगा।"

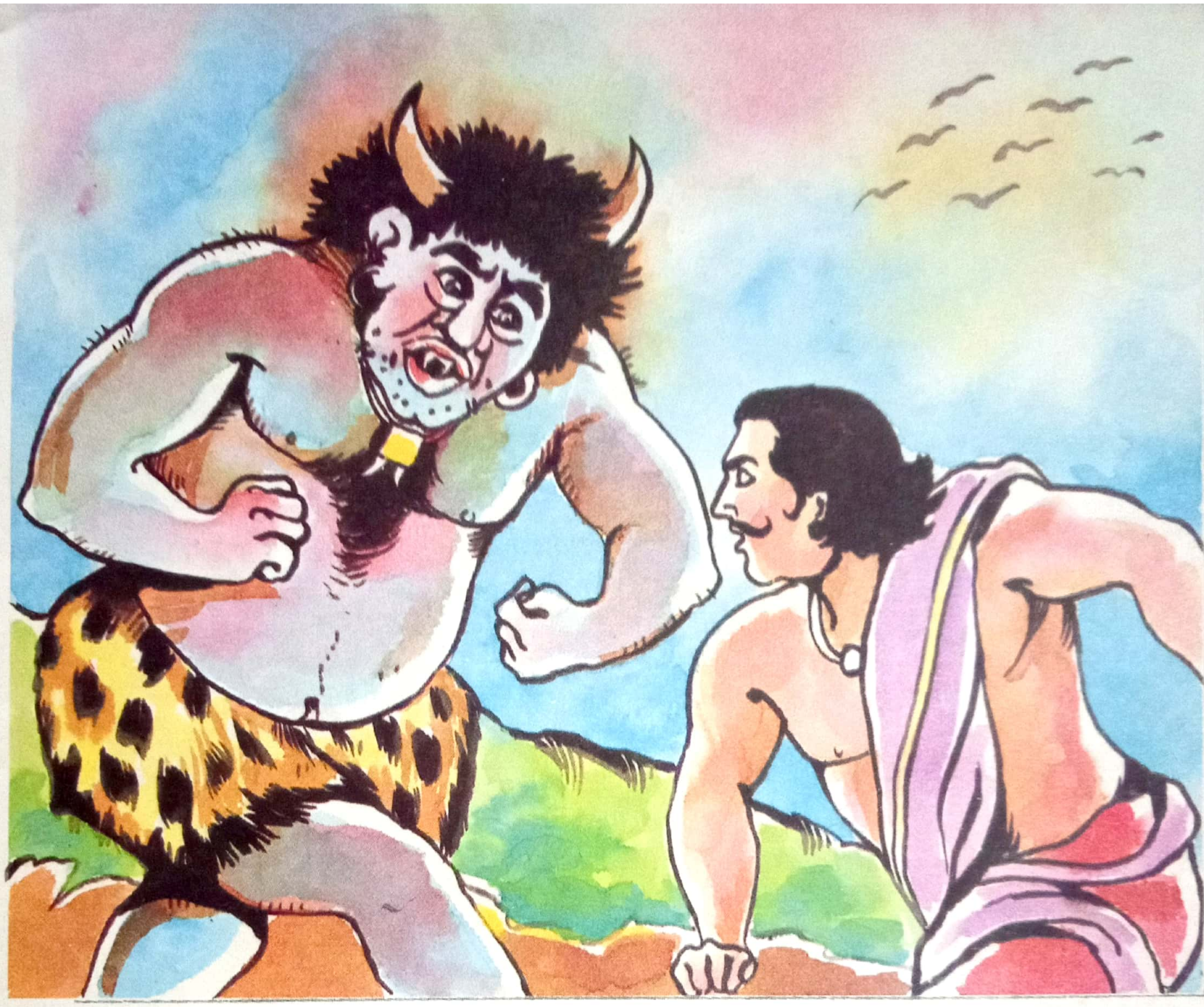
कुंती ने ब्राह्मण से वचन लेकर अन्न तथा भैंसे के साथ भीमसेन को वन भेज दिया। भीमसेन बकासुर के जंगल में पहुंचे। भैंसे को एक तरफ बांध कर सारा भोजन लेकर बैठ गए। जोर-जोर से बकासुर को पुकारने लगे—"बकासुर! तुम्हारा भोजन आ गया है। आकर ले लो।"

बकासुर ने अपनी गुफा से बाहर आकर देखा कि एक विशाल काय पुरुष बैठे-बैठे उसका ही भोजन खा रहा है। वह गरजकर दौड़ा। बोला—"अरे, मेरे सामने ही मेरा भोजन खा रहा है। मैं तो तुझे भी खा जाऊंगा।" यह कहकर वह जोर से झपटा। उसने चाहा कि भीमसेन को उठाकर दूर फेंक दे, पर भीमसेन टस से मस न हुए। एक हाथ से झटककर उसे दूर करते हुए बोले—"अरे पापी! जानता नहीं, किसी भूखे पर भोजन करते वक्त प्रहार नहीं करना चाहिए। भूखे आदमी के लिए अपना-पराया अन्न नहीं होता। उसे तो बस खाना चाहिए।"

बक ने क्रोध से एक पेड़ उखाड़ लिया और उसी को भीमसेन पर फेंका। पेड़ भीमसेन से टकराकर कई टुकड़ों में बिखर गया, भीम आराम से खाते रहे।

बक के क्रोध की सीमा न रही। वह एक बड़ी चट्टान उठाकर झपटा। तब तक भीमसेन खाना खा

Scanned with CamScanner



चुके थे। उन्होंने बक की छाती पर जो लात मारी, तो वह चट्टान सहित गिर पड़ा। भीमसेन ने झपटकर उसे पकड़ लिया और ऐसी पटखनी दी कि राक्षस पीड़ा से चिल्लाने लगा।

चिल्लाहट सुनकर उसके साथी राक्षस निकलकर बाहर आए। बकासुर की हालत देखकर सब डर गए। किसी की हिम्मत न हुई कि आगे बढ़कर भीम से टक्कर ले। इतने में भीमसेन ने बक को उठाकर, हवा में घुमाना शुरू किया और जोर से एक चट्टान पर फेंक दिया। बक के प्राण पखेरू उड़ गए। राक्षसों ने उस बलवान को वचन दिया कि अब वे किसी को तंग नहीं करेंगे तथा कहीं और चले जाएंगे।

उधर जब वन में भीमसेन बक से लड़ रहे थे, तो चारों भाई घर आए। भीम को न देखकर मां से पूछा—''मां, भीम भइया कहां हैं?''

कुंती कुछ कह पाती कि भीमसेन आ पहुंचे। उन्होंने भाइयों से कहा—''मैं आज पूरा भोजन कर आया हूं। आप लोगों की भिक्षा में से आधा नहीं लूंगा।''

जब युधिष्ठिर कुछ समझ न पाए, तो माता कुंती ने सारी बात बता दी। युधिष्ठिर ने भीमसेन को गले लगा लिया। इतने में ही ब्राह्मण परिवार भी आ गया। कुंती ने ब्राह्मण को बताया— ''मेरे बेटे ने राक्षस को मार डाला है। अब कोई राक्षस कभी बस्ती के लोगों को नहीं सताएगा। हां, अपने दिए वचन का ध्यान जरूर रखना। यह भेद कभी किसी पर प्रकट न होने देना।''

ब्राह्मण परिवार आश्चर्य से भीम की ओर देख रहा था, और वह धीरे-धीरे मुसकरा रहे थे।

Scanned with CamScanner



श्रव्य मार्कण्डेय
भारतीय विद्या भवन,
कस्तूरबा गांधी मार्ग

इतने सुंदर चित्र बनाए दिल्ली वाले बच्चों ने

'नंदन' की ओर से दिल्ली में तीन चित्र-कला प्रतियोगिताएं हुईं। हजारों बच्चों ने भाग लिया। प्रथम पुरस्कार पाने वाले चित्रों की झांकी....



दिव्या बौरी
सी.आर.पी.एफ.
पब्लिक स्कूल, रोहिणी

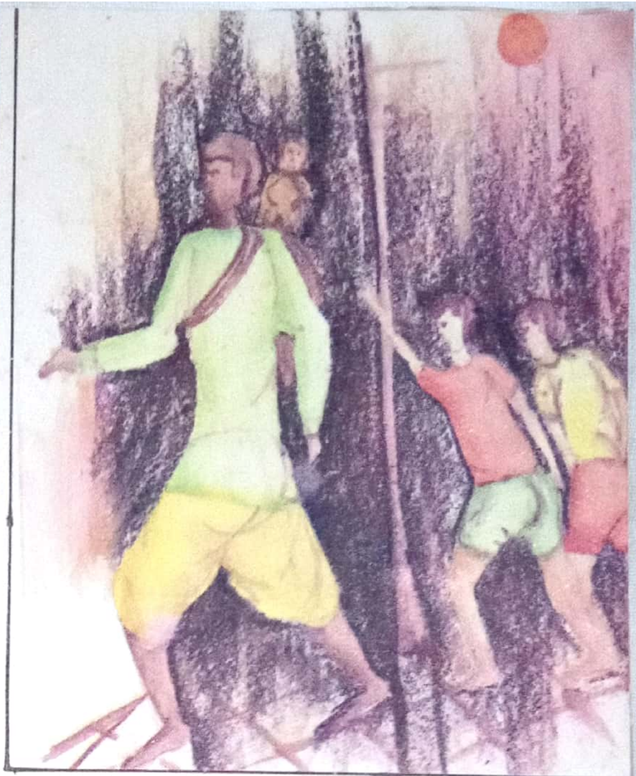


मोहर राय
बिरला विद्या निकेतन,
पुष्प विहार

Scanned with CamScanner



यवनिका
सरदार पटेल विद्यालय,
लोदी एस्टेट



अमित चावला
माता जयकौर पब्लिक स्कूल, अशोक विहार

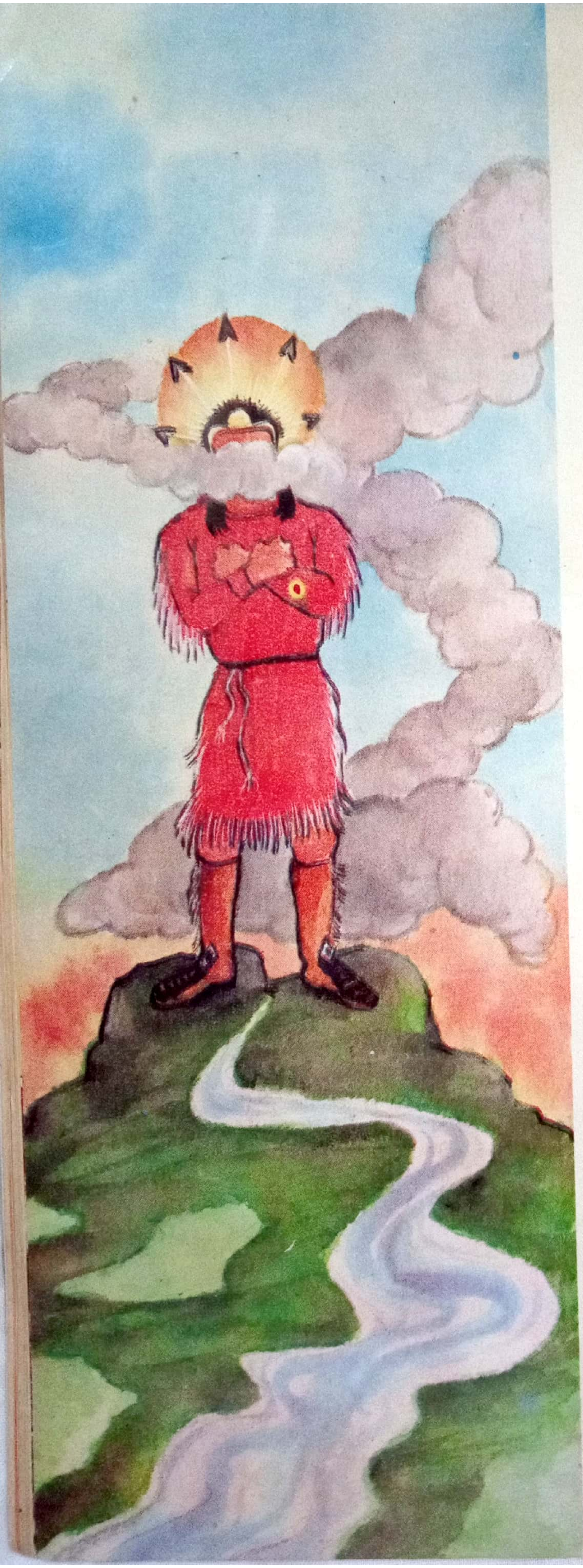


सचिन दलाल
सचदेवा पब्लिक स्कूल,
पीतमपुरा



सुरभि ठक्कर
कुलाछी हंसराज माडल स्कूल,
अशोक विहार

Scanned with CamScanner



पेड़ की पोशाक

— एच. डब्लयू लांगफैलो

बहुत समय पहले की बात है । तब बड़े नगर न थे । घने वनों में छोटी-छोटी बस्तियां थीं । उनमें रहने वाले अक्सर ही आपस में लड़ा करते थे । इससे बहुत विनाश होता था । किसी की समझ में नहीं आता था कि लगातार चलने वाला युद्ध कैसे समाप्त हो !

एक दिन ईश्वर ने आकाश में खड़े होकर नीचे देखा । हर कहीं ईर्ष्या और द्वेष का वातावरण था । अपने बनाए मनुष्यों को इस तरह मूर्खतापूर्ण हरकतें करते देख, ईश्वर का मन दुखी हो उठा । वह एक ऊंचे पहाड़ पर उतरे । पैर के अंगूठे से शिला को छुआ, तो एक नदी बह चली । हाथ हिलाया, तो सब तरफ धुआं ही धुआं छा गया ।

धुआं देखकर सब लोगों ने लड़ना बंद कर दिया । बड़े-बूढ़े कहने लगे— "यह ईश्वर का बुलावा है । वह हमें कुछ संदेश देना चाहते हैं । जल्दी करो । नहीं तो वह नाराज हो जाएंगे ।"

कुछ ही देर में ऊंचे पहाड़ की तलहटी में लोग जमा हो गए । वे सब दिशाओं से आए थे । एकाएक कहीं बिजली कड़की । फिर एक दिव्य स्वर गूंज उठा— "मेरे बच्चो, मैंने तुम्हें सब कुछ दिया है । किसी को कोई अभाव नहीं है । फिर भी तुम सब आपस में लड़ते रहते हो । मेल-मिलाप से नहीं रहते । अपने-अपने हथियार फेंक दो । नदी में नहाओ । वैर-भाव भुला दो । मैं कुछ ही समय में एक व्यक्ति को तुम्हारे पास भेजूंगा । वही तुम्हारा नेता होगा । तुम्हें नए मार्ग पर ले जाएगा ।"

फिर वह दिव्य स्वर मौन हो गया । चारों ओर मंडराता धुआं छंट गया । सबने ईश्वर की आज्ञा मानकर अपने-अपने हथियार धरती में गाड़ दिए । नदी में नहाए, तो उनके मन में बैठा वैर मिट गया । आपस में प्रेम-प्यार से रहने का प्रण करके अपनी-अपनी बस्ती में लौट गए ।

कुछ दिन बाद आकाश से एक स्त्री उतरी । उसका

Scanned with CamScanner

नाम था नोकोमिस। उसकी बेटी थी वीनोना। उसी का बेटा था हाइयावाथा। उसी को ईश्वर ने धरतीवासियों का नेता बनाकर भेजा था। जैसे-जैसे समय बीता, हाइयावाथा बलवान होता गया। वीनोना ने अपने बेटे को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी। अलौकिक शक्तियों के बारे में बताया। धरती पर रहने वाले पशु-पक्षियों की जानकारी दी। ये सब उसके मित्र बन गए।

एक दिन हाइयावाथा जंगल में गया। उसने देखा उसके साथी निर्दोष पशु-पक्षियों का शिकार कर रहे हैं। उसे बुरा लगा। उसने सात दिन तक निराहार रहकर तप किया। वह एक ही प्रश्न पूछ रहा था— 'क्या हमें इस तरह निरीह जीवों को मारना चाहिए ? क्या यही हमारा भोजन है ?' मां भोजन लेकर आई, पर उसने नहीं खाया। वह दुर्बल हो गया।

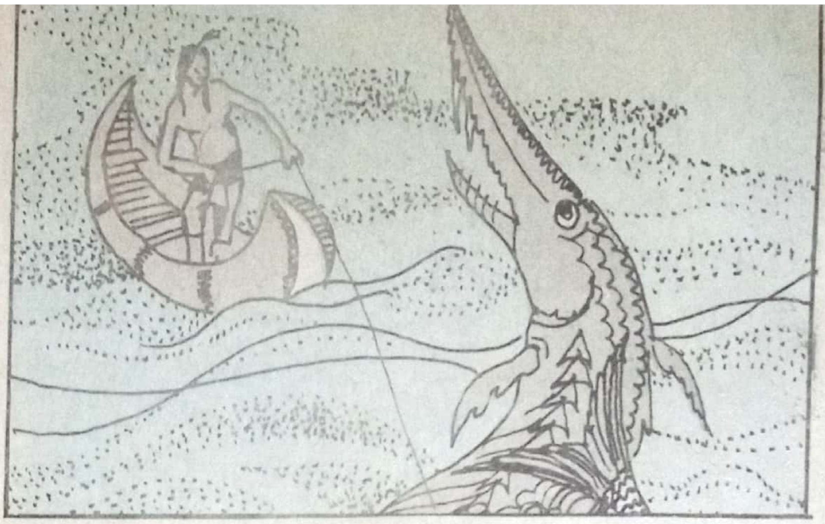
सात दिन बाद एक व्यक्ति उसके पास आया। उसने हाइयावाथा को ललकारा। दोनों लड़ने लगे। हाइयावाथा ने उसे हरा दिया। वह व्यक्ति जमीन में प्रवेश कर गया। फिर वहां से हरी पत्तियां फूट निकलीं। एक आवाज आई— 'यह मकई का पौधा है। इसके दाने तुम्हारी भूख मिटाएंगे।' हाइयावाथा मकई का उपहार पाकर प्रसन्न हो उठा।

एक दिन हाइयावाथा ने यात्रा पर निकलने का निश्चय किया। इसके लिए चाहिए थी एक बड़ी और मजबूत नौका। अपने मित्रों के साथ वह वन में गया। उसने एक ऊंचे पेड़ से कहा—''मुझे तुम्हारी पोशाक चाहिए। मैं उसका उपयोग अपनी नौका बनाने में करूंगा।''

पेड़ ने कहा—''हाइयावाथा, तुम जैसे वीर के किसी काम आ सकूं, यह मेरा सौभाग्य होगा।''

हाइयावाथा और उसके मित्रों ने मिलकर एक मजबूत नौका बनाई और यात्रा पर चल दिए। साथ में दो मित्र थे। एक का नाम था छिबियाबोस—वह बहुत अच्छा गायक था। दूसरा था क्वासिन—शक्तिशाली पहलवान। छिबियाबोस का संगीत रास्ते की थकान मिटाता था और क्वासिन मार्ग में आने वाली बाधाएं दूर कर देता था।

एक विशाल झील में रहता था मछलियों का राजा



मिश नहमा। उससे सब डरते थे। दैत्याकार मिश नहमा के मुंह में लम्बे-नुकीले दांत थे। हाइयावाथा अपनी नौका झील के बीच में ले गया। फिर उसने ललकारा—''मिश नहमा, अगर हिम्मत है, तो बाहर आ। मुझसे संघर्ष कर। आज मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा।''

उसकी ललकार सुनकर मिश नहमा क्रोध से भर उठा। वह एकाएक पानी से बाहर उछला और हाइयावाथा की नाव को निगल गया। अगले ही पल हाइयावाथा ने अपने को घुप अंधेरे में पाया। एक बार तो उसे लगा कि आज मिश नहमा उसे मार डालेगा, पर फिर उसने साहस जुटाया और अपने बरछे से इधर-उधर वार करने लगा।

इन प्रहारों का प्रभाव पड़ा—नहमा का शरीर पीड़ा से ऐंठने लगा। अब वह हाइयावाथा को निगलकर पछता रहा था। चाहता था कि किसी तरह हाइयावाथा बाहर निकल आए, पर हाइयावाथा मिश नहमा को अंदर ही अंदर छलनी कर रहा था। आखिर नहमा की ताकत जवाब दे गई, उसके प्राण पखेरू उड़ गए। हाइयावाथा सकुशल उसकी मृत देह से बाहर निकल आया। दुष्ट नहमा के मरने से झील के पास रहने वाले बहुत प्रसन्न हुए।

एक दिन नानी नोकोमिस ने हाइयावाथा को अपने पास बुलाया। नहमा का आतंक समाप्त करने पर उसे बधाई दी। फिर कहा—''बेटा, अब तुम्हें दुष्ट जादूगर को समाप्त करना है। भयंकर सांप उसके पहरेदार हैं। वह अपने जादू से कोहरा पैदा करता है। कोहरे में छिपाकर रोग और मृत्यु यहां भेजता है। हम सब उससे बहुत परेशान हैं।''

Scanned with CamScanner

हाइयावाथा ने अपने तीर-कमान लिए और नौका में बैठकर चल दिया। नानी ने उसे मार्ग बता दिया था। एक दिन वह उस जगह पहुंच गया, जहां भयानक सांप पानी में तैर रहे थे। उन्होंने सारा रास्ता रोक रखा था। हाइयावाथा ने रास्ता मांगा, तो सांप आग उगलने लगे। वे कह रहे थे—"अगर जान बचानी है, तो वापस चले जाओ।"

यह सुनकर हाइयावाथा ने धनुष पर तीर चढ़ाए और बौछार करने लगा। हवा में सांपों की फुंकार गूंजने लगी। विष के बादल उठने लगे, पर सांप तीरों से न बच सके। कुछ देर बाद धुआं छंटा, तो सारे सांप मरे हुए दिखाई दिए।

हाइयावाथा नाव को आगे बढ़ा ले चला। अब चारों ओर घुप अंधेरा छा गया, लेकिन वह डरा नहीं, बढ़ता ही गया। दूर उसे जादूगर की झोंपड़ी दिखाई दी—अंधेरे में चमकती हुई। उसने ललकारा, तो जादूगर सामने आ गया। दोनों में भयंकर युद्ध शुरू हो गया।

हाइयावाथा के तीर जादूगर के शरीर से टकराकर टूट जाते—उस पर कोई प्रभाव न होता। इसी तरह काफी समय बीत गया। अपने तीरों को व्यर्थ जाते देख, हाइयावाथा निराश हो उठा। तभी उसने कठफोड़वे को बोलते सुना। वह कह रहा था—"जादूगर का पूरा शरीर जादुई कवच से ढका हुआ है। उसकी गरदन पर वार करो तो काम बन सकता है।"

हाइयावाथा ने निशाना साधकर तीर छोड़ा, तो जादूगर की गरदन कटकर दूर जा गिरी। उसके मरते ही अंधेरा दूर हो गया। हाइयावाथा ने कठफोड़वे को धन्यवाद दिया और लौट चला। उसने जादूगर का कवच अपने पास रख लिया। अब वह संतुष्ट था कि जादूगर कोहरे में छिपाकर रोग और मृत्यु नहीं भेज सकेगा।

एक दिन नानी नोकोमिस ने हाइयावाथा से कहा—"बेटा, अब तू शादी करके घर बसा ले। इस तरह अकेला कब तक घूमता रहेगा?"

सुनकर हाइयावाथा हंस पड़ा। उसने कहा—"नानी मां, तुमने मुझे जो भी काम बताया, उसे मैंने पूरा किया। तुम्हारी यह आज्ञा भी मेरे सिर माथे।"

"तू किससे शादी करेगा?"—नानी ने पूछा।

—"मिनीहाहा से।"

सुनकर नोकोमिस उदास हो गई। उसने कहा—"बेटा, यह ख्याल छोड़ दे। मिनीहाहा हमारे दुश्मन कबीले की बेटी है। अक्सर ही दोनों कबीलों के बीच युद्ध हुए हैं। इससे वैर बढ़ सकता है।"

—"नानी, इसी कारण से मैं मिनीहाहा से विवाह करना चाहता हूं। आखिर हम कबीले वाले आपस में क्यों लड़ते हैं? युद्ध अच्छा नहीं, हमें शांति से रहना चाहिए। मैं चाहता हूं हमारे दोनों कबीले सदा-सदा के लिए मित्र बन जाएं।"

यह कहकर हाइयावाथा मिनीहाहा से मिलने चल दिया। उसका पिता तीर बनाया करता था। जब वह उनकी बस्ती में पहुंचा, तो सांझ ढल रही थी। मिनीहाहा अपने पिता के साथ अपनी झोंपड़ी के बाहर बैठी थी। पिता तीर बना रहा था। साथ में बीते दिनों की बातें भी सुनाता जा रहा था, पर मिनीहाहा भविष्य के बारे में सोच रही थी।

तभी हाइयावाथा वहां आ पहुंचा। वह मिनीहाहा के पिता के लिए अनेक उपहार लाया था। उसने कहा—"आजकल हम दोनों के कबीलों के बीच शांति है। मैं चाहता हूं, यह स्थायी मैत्री में बदल जाए। क्या आप मिनीहाहा का विवाह मुझसे करेंगे?"

मिनीहाहा के पिता ने कुछ देर सोचा, फिर कहा—"मैं भी अब अपना बुढ़ापा लड़ते हुए नहीं बिताना चाहता। विवाह के बारे में मिनीहाहा की बात मानूंगा। उससे पूछ लो।"

मिनीहाहा ने सुना, तो मुसकरा दी। वह तो पहले ही हाइयावाथा की वीरता पर मुग्ध थी। हाइयावाथा लौटा तो उसके साथ मिनीहाहा पत्नी के रूप में थी। दोनों ही प्रसन्न थे।

एच. डब्लूयू. लांगफैलो—(१८०७-१८८२) पोर्टलैंड (अमरीका) में जन्म। प्रसिद्ध कवि। अनेक भाषाओं में इनकी रचनाओं के अनुवाद हुए। यहां उनकी लम्बी काव्य-रचना 'हाइयावाथा' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं।
—सं.

Scanned with CamScanner

हाइयावाथा ने सोचा था, अब वह आराम से रहेगा। तीर-कमान उठाकर रख देगा, लेकिन पाउ पुक के रहते हुए यह नहीं हो सकता था। ऊपर से वह अपने को हाइयावाथा का मित्र कहता था, पर अंदर ही अंदर उससे ईर्ष्या करता था। उसे नीचा दिखाने के अवसर की तलाश में रहता था।

एक दिन वह बस्ती में आया, तो हाइयावाथा नहीं था। पाउ पुक उसकी झोंपड़ी में पहुंचा। वह खाली थी। उसने घर का सारा सामान उठाकर इधर-उधर फेंक दिया और चिल्लाया—"मैं हाइयावाथा को चैन से नहीं बैठने दूंगा। मैं उससे जरा भी नहीं डरता।" इसके बाद उसने हाइयावाथा की झोंपड़ी के बाहर बैठे अनेक परिंदों को मार डाला और अकड़ता हुआ वहां से चला गया।

हाइयावाथा गांव में लौटा, तो उसे पाउ पुक की शरारत का पता चला। वह दहाड़ा—"मैं उसे मार डालूंगा। वह किसी को शांति से नहीं रहने देता। उसकी शरारतों का अंत होना ही चाहिए।"

पाउ पुक आगे-आगे था और हाइयावाथा उसका पीछा कर रहा था। उसे उम्मीद थी कि वह हाइयावाथा को छका देगा। पाउ पुक एक तालाब में ऊदबिलाव के पास गया। उनसे बोला—"मैं तुम्हारी बिरादरी में शामिल होना चाहता हूं। मुझे भी अपने जैसा बना लो।"

ऊदबिलावों के मुखिया ने उससे पानी में छलांग लगाने को कहा। पानी में कूदते ही पाउ पुक एक ऊदबिलाव बन गया। उसने मुखिया से कहा—"मुझे अपने से दस गुना बड़ा बना दो। इतना बड़ा कि हाइयावाथा मुझे देखकर डर जाए।"

कुछ ही देर में पाउ पुक एक विशाल ऊदबिलाव बन गया। तभी हाइयावाथा आ पहुंचा। उसकी ललकार सुनकर सारे ऊदबिलाव डरकर बिलों में घुस गए, लेकिन पाउ पुक वहीं बैठा रह गया। उसका शरीर इतना विशाल हो गया था कि वह कहीं छिप ही नहीं सकता था—वह अपने स्थान से हिल भी नहीं पा रहा था। हाइयावाथा ने एक ही वार में उसका काम तमाम कर दिया। इसके बाद बहुत दिनों तक किसी ने हाइयावाथा को परेशान नहीं किया।



लेकिन समय सदा एक-सा नहीं रहता। ऐसे भी दिन आए जब हाइयावाथा की पत्नी बीमार हो गई। सब तरफ अकाल की छाया फैल गई—अकाल के साथ बीमारियां भी आईं।

एक रोज दो अपरिचित औरतें हाइयावाथा की झोंपड़ी में आईं। एक ने कहा—"मैं अकाल हूं।" दूसरी बोली—"मैं बुखार-बीमारी हूं।"

हाइयावाथा वन में जा पहुंचा। जोर-जोर से पुकारने लगा—"ईश्वर, मेरे कबीले को बचाओ।"

आवाज आई—"मिनीहाहा! मिनीहाहा!" हाइयावाथा को लगा, जैसे आकाश से कोई मिनीहाहा को बुला रहा हो। उधर झोंपड़ी में बीमार मिनीहाहा कह रही थी—"कोई मुझे बुला रहा है।" और फिर मिनीहाहा ईश्वर के पास चली गई। वीर हाइयावाथा अकेला रह गया।

लेकिन इसके बाद अकाल की छाया दूर हो गई मौसम बदला। बीमारी मिट गई। लोग प्रसन्न हो गए, हां, हाइयावाथा उदास था। उसे लगता था जैसे उसका काम पूरा हो गया है। एक दिन उसने पूरे कबीले को मैदान में इकट्ठा होने को कहा फिर बोला—"मित्रो, अब मैं जा रहा हूं।"

"कहां?"—एक आवाज उठी।

—"यह तो पता नहीं, पर मुझे यात्रा करनी है। आप शांति और सुख से रहें—यही मेरी कामना है। अच्छा, विदा।" और फिर हाइयावाथा झील में तैरती अपनी नौका पर जा बैठा। धीरे से बोला—"ले चलो मुझे।" और देखते-देखते हाइयावाथा को लिए हुए नौका अदृश्य हो गई।

(प्रस्तुत : देवेन्द्र कुमार)

बोले राजा

— वीरेंद्र पैन्यूली

तक्षगंधा के महाराजा दिव्य आदित्य के राज्य की प्रसिद्धि थी कि वहां कभी चोरी नहीं होती है। एक बार कर्णखंड राज्य के कुछ नामी चोर इस राज्य में पहुंचे। उन्होंने वहां पहुंचने पर, चोरी करने की भी सोची। उन्हें यह काम मुश्किल तो अवश्य लगा। किंतु उन्होंने उसे अपने लिए चुनौती माना।

वे यह भी सोच रहे थे कि आखिर इस राज्य में चोरी क्यों नहीं होती ? क्या यहां के लोग बहुत खुशहाल हैं ? या फिर इस राज्य की चौकसी बहुत अच्छी है, अथवा यहां दंड व्यवस्था बहुत कठोर है।

अंततः उन शातिर चोरों ने चोरी करने की ठान ही ली। इस बीच उन्होंने राजधानी में अपने सवालों का जवाब पाने के लिए काफी सुराग लगाया किंतु असफल रहे।

उन्होंने सोचा 'चोरी करनी है, तो पहले शहर कोतवाल के यहां चोरी की जाए।' एक रात उन्होंने शहर कोतवाल के घर सेंध मारकर चोरी की। इस चोरी के बाद उनका कुछ न हुआ। कोई चर्चा भी नहीं हुई, तो उन्होंने अगली चोरी राजमहल में करने की सोची।

दूसरी चोरी के बाद भी कहीं कोई चर्चा नहीं हुई, तो उन्होंने एक साधारण गृहस्थ के घर हाथ मारा।

इस तरह उन चोरों के पास काफी सामान इकट्ठा हो गया था। उन्हें लगा कि इस राज्य में चोरी करना सबसे आसान है। उन्हें यह भी लगा कि इस राज्य में कोई चोर नहीं है। नहीं तो इतने आसान मौके होते हुए भी चोरी क्यों नहीं होती है ?

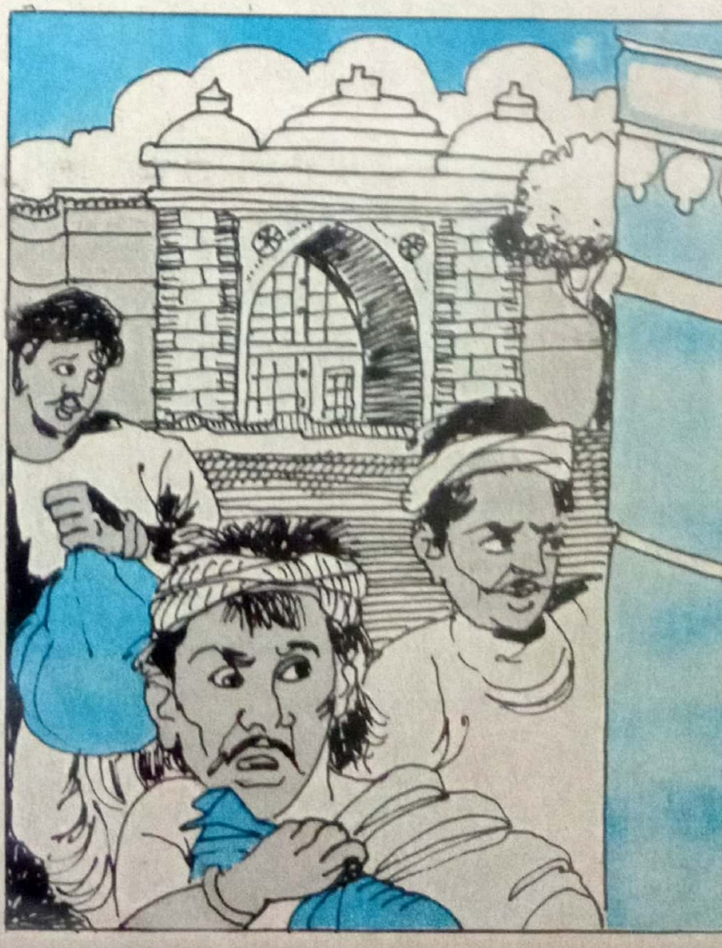
उन चोरों को वहां पहुंचे दो सप्ताह हो गए थे। अब उन्होंने वापस जाने की सोची। मन ही मन उन्होंने यह भी निश्चय कर लिया था कि वे जल्दी ही इस राज्य में फिर लौटेंगे।

चोरों ने सोचा था, चोरी का सामान वे इसी राज्य में बेच दें। फिर यह भी सोचा कि इस सामान के बेचने से जो मुद्रा प्राप्त होगी, वह उनके राज्य में किसी काम न आएगी। उनके राज्य की मुद्रा अलग थी। अतः उन्होंने चोरी के सामान को अपने ही राज्य में बेचने का निश्चय किया।

चोर जब अपने राज्य में पहुंचे, तो उनके राज्य के सिपाहियों ने उन्हें घेर लिया। उन्होंने देखा कि उन सिपाहियों के साथ तक्षगंधा राज्य के कर्मचारी भी अपने राजकीय परिधानों में थे। चोरों को कर्णखंड राज्य के सिपाही ही पकड़कर, अपने राजा के समक्ष ले गए।

राजा ने चोरों से कहा— "पड़ोसी राज्य तक्षगंधा से दूत आए हैं। तुम लोगों पर उस राज्य में चोरी करने का आरोप है। तुम्हें अपने अपराधों का दंड पाने के लिए तक्षगंधा राज्य में जाना होगा।"

राजा ने आगे कहा कि तक्षगंधा मित्र राज्य है। इसलिए वह उन्हें उस राज्य के कर्मचारियों को सौंप रहे हैं, जिससे उस राज्य के कानून के अनुसार उन्हें चोरी का कठोर दंड मिले। उन्हें अपने राज्य में भी दंड दिया जाएगा। इस राज्य के नियमों के अनुसार, उन्होंने एक मित्र देश को बदनाम करने का कार्य किया है। ऐसा राज्य, जिसकी ख्याति यह थी कि वहां चोरी नहीं





होती । जब भी कर्णखंड पर विदेशी आक्रमण हुए, तक्षगंधा ने सहायता की । ऐसे राज्य और राजा को बदनाम करने का षड्यंत्र, उनकी दृष्टि में देश द्रोह के समान है ।

चोर यह जानते थे कि तक्षगंधा में तो शायद कारावास का दंड भुगतकर बच जाएंगे। परंतु अपने राज्य में तो देशद्रोह के आरोप में मृत्युदंड निश्चित है ।

चोरों ने कहा— "तक्षगंधा को बदनाम करने की हमारी कोई योजना नहीं थी । हम तो यह सुनकर चकित रहते थे कि तक्षगंधा में कोई चोरी नहीं होती । हम जानना चाहते थे कि ऐसा क्यों है ?

"हमने उस राज्य में जाकर पूछताछ की, परंतु कुछ पता नहीं चला । अतः अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए ही वहां हमने स्वयं चोरी की थी । अतः हमने सबसे पहले शहर कोतवाल के यहां चोरी की । फिर राजा के राजमहल में और फिर एक साधारण नागरिक के घर में चोरी की । हम अपनी चोरी के तीनों प्रयासों में सफल रहे ।

"तीनों जगह चोरी करके भी हम नहीं पकड़े गए, तो हमें लगा कि इस राज्य में चोरी जरूर होती होगी किंतु कोई यह बताता न होगा कि उसके घर चोरी हुई है । कारण अनेक होंगे । पर उस राज्य में चोरी करना हमें इतना आसान लगा कि चोरी करने की सोची ।

"महाराज, हम भूल में थे । चोर के रूप में हम पहचान लिए गए थे । किसी कारणवश, हमें पकड़ा नहीं गया।" कर्णखंड के राजा यज्ञदत्त ने कहा- "तक्षगंधा के महाराजा इस समय राजमहल में मौजूद हैं । उन्होंने स्वयं चोरों को पकड़ने का जिम्मा लिया था । उन्हें सभी चोरियों की सूचना थी। वह सभी को उनका सामान लौटाने का वचन दे चुके थे ।

" उन्होंने तुम लोगों को नहीं पकड़ा । वे तुम्हारे पीछे इसलिए लगे रहे कि वे यह पक्के तौर पर जानना चाहते थे कि क्या तुम लोगों के कुछ स्थानीय सहयोगी भी हैं । यदि ऐसा होता, तो उनके लिए यह बहुत चिंता की बात होती ।

" महाराजा तुम लोगों का पीछा अपने राज्य की अंतिम सीमा तक करते रहे। जब तुम लोगों को उन्होंने कर्णखंड में घुसते देखा, तो दूत भेजकर इस राज्य में प्रवेश करने की इजाजत मांगी । हमारा अहोभाग्य था कि तक्षगंधा के महाराजा दिव्यआदित्य हमारे राज्य में पधारे । किंतु आज हमारा मस्तक लज्जा से झुक गया है ।" महाराजा यज्ञदत्त ने ही बताया— "तक्षगंधा राज्य में चोरी न होने के कई कारण हैं । सबसे बड़ा कारण है कि वहां के महाराजा स्वयं सबके सुख-दुःख की जानकारी रखते हैं। वह दो सप्ताह तक तुम लोगों के पीछे रहे कि कहीं तुम लोगों के सम्पर्क में आकर उनके राज्य के लोग भी तो चोर नहीं हो गए हैं ।"

अपने महाराजा की बात सुनकर चोरों के सिर शर्म से झुक गए । वे सब एकसाथ बोले— "महाराज, हमें अपने किए का दुःख है । हमें तक्षगंधा भेज दीजिए जिससे अपने पाप की सजा हमें मिल सके ।"

तभी दिव्यआदित्य वहां पधारे । यज्ञदत्त से अनुमति लेकर बोले— "महाराज ! इन्होंने अपनी गलती मान ली । आपसे निवेदन है कि अब इन्हें माफ कर दें ।"

चोरों को छोड़ दिया गया । उन्होंने बताया कि अब वे कभी चोरी नहीं करेंगे । ●

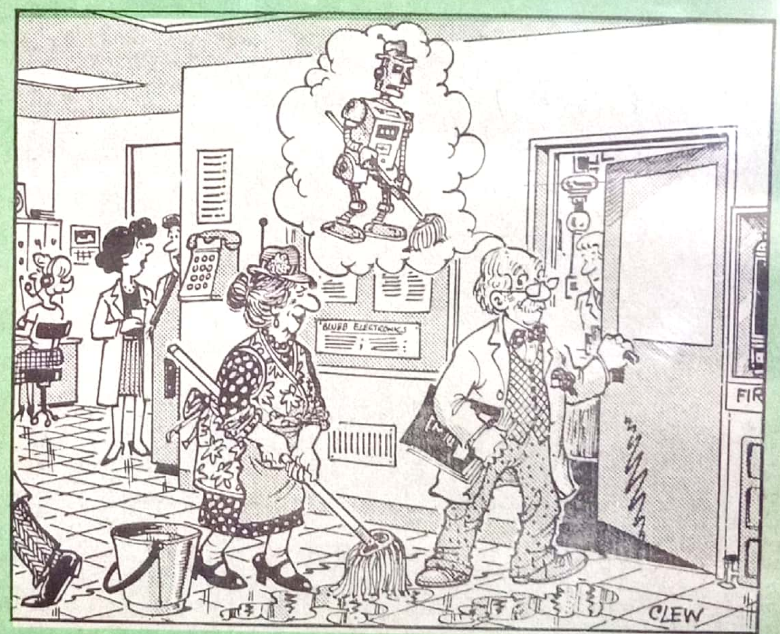
Scanned with CamScanner

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—**१५ मिनट ।**







कहानी लिखो : ११२

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । उसे १५ मार्च '९३ तक **कहानी लिखो : ११२, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए । चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी, पुरस्कार भी मिलेगा । परिणाम : मई ९३ अंक

चित्र पहेली : ११२

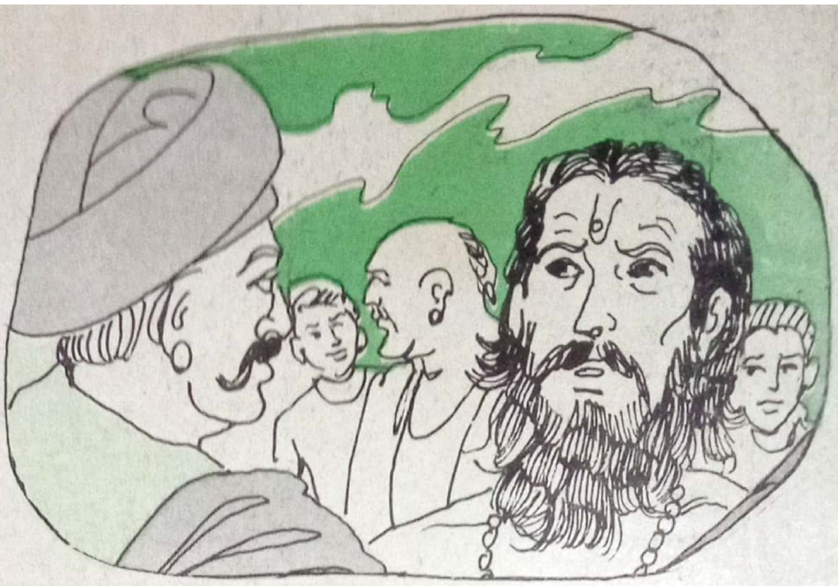
सैर सपाटा तो सभी ने किया होगा । तो बनाइए, किसी **'सैर सपाटे'** का रंगीन चित्र । **चित्र चटख रंगों में बनाएं । पीछे अपना नाम, पता व उम्र** साफ-साफ लिखिए और १५ मार्च '९३ तक **नंदन कार्यालय** में भेज दीजिए । चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : जून '९३ अंक

Scanned with CamScanner

नेक से अनेक

—आनंदपाल सिंह



एक था जमींदार । किसानों से मनमाना लगान लेता । जो किसान समय से लगान न देते, उन्हें पीटता । अपने आदमियों को भेज, उनके ढोर-डंगर अपने घर मंगवा लेता ।

जमींदार की शादी हुए वर्षों हो गए थे । परंतु कोई संतान नहीं हुई । इससे जमींदार काफी चिंतित रहता था । एक दिन जमींदार को पता चला कि गांव में कोई महात्मा आए हैं । वह लोगों का भविष्य बताते हैं ।

शाम को जमींदार महात्मा के डेरे पर गया । उन्हें प्रणाम किया । अपनी दाहिनी हथेली उनके आगे फैलाई । बोला— "महाराज, शादी हुए लगभग दस वर्ष हो गए हैं । पर अब तक संतान का मुंह नहीं देख सका हूं ।"

महात्मा बोले—"तुम परेशान न हो । दर्जनों पुत्र-पुत्रियां होंगी तुम्हारे घर में, लेकिन... ।" इतना कहकर, महात्मा चुप हो गए । कुछ गांव वाले भी वहां खड़े थे ।

"लेकिन क्या महाराज ?"—जमींदार ने उत्सुकता से पूछा ।

महात्मा वहां बैठे गांव वालों पर नजर डालते हुए बोले—"तुम गांव से कुछ दूर एक कुआं खुदवाओ और धर्मशाला बनवाओ, ताकि राहगीरों को परेशानी न हो । गरीब किसानों का कर्जा माफ करो । पैदावार के अनुसार लगान लो । प्रतिदिन दीन-दुखियों को वस्त्र एवं भोजन दो । उनकी हर सम्भव मदद करो । तुम्हारी कामना जरूर पूरी होगी ।" यह सुन, जमींदार बोला—"मैं आपकी बातों का पूरा ध्यान रखूंगा ।" फिर वह घर लौट आया ।

उस दिन से जमींदार और उसकी पत्नी का स्वभाव ही बदल गया । जमींदार ने एक कुआं खुदवाया । यात्रियों के लिए धर्मशाला बनवाई । गांव में अनाथ आश्रम बनवा दिया । गरीबों का कर्जा माफ कर दिया । उचित लगान लेने लगा । गांव वालों की खूब मदद करता ।

पति-पत्नी रोजाना शाम को अनाथ आश्रम में जाते । अनाथ, बेसहारा बच्चों का हालचाल पूछते ।

गांव वाले भी जमींदार का भला चाहने लगे थे । वे उन महात्मा को भी धन्यवाद देते, जिनके कारण जमींदार का स्वभाव बदला था ।

पंद्रह वर्ष बीत गए । जमींदार और उसकी पत्नी अधेड़ हो गए थे । लेकिन कोई संतान नहीं हुई ।

एक दिन गांव वालों ने देखा, कुटिया पर वही महात्मा आए हैं । वे भयभीत हो गए । उनमें से एक गांव वाला बोला—"महाराज, आप यहां से चले जाएं । क्योंकि अभी तक जमींदार के घर संतान नहीं हुई है । हो सकता है,वह आपका भी अहित कर दे । अतः आप कहीं और चले जाएं ।"

"मेरा कुछ अहित नहीं होगा ।"—महात्मा ने मुसकराकर कहा । तभी लोगों ने जमींदार को घोड़े पर आते देखा । वह कुटिया पर पहुंचा । कुटिया के बाहर घोड़ा रोका । उसे पेड़ से बांधा ।

फिर जमींदार महात्मा की ओर बढ़ चला । वहां पर उपस्थित भीड़ किसी अप्रिय घटना की आशंका से भयभीत थी । पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । जमींदार महात्मा के चरणों में जा लेटा । उसकी आंखें भरी हुई थीं । बोला—"महाराज, आपकी भविष्यवाणी सच निकली । वास्तव में आज मेरे दर्जनों पुत्र-पुत्रियां हैं । पूरा गांव मेरा परिवार है । आपके बताए रास्ते ने मेरा उद्धार कर दिया ।"

महात्मा ने उसके सिर पर हाथ रखा । आशीर्वाद दिया । गांव वाले कभी जमींदार को और कभी महात्मा को देख रहे थे । ●

Scanned with CamScanner



सौ-सौ रंग

तेज चाल से दौड़ रही थी
जाड़े की गाड़ी बेखटके,
मार्च माह ने ब्रेक लगाकर
रोकी उसकी गाड़ी झट से।

अब इस गाड़ी में बैठी है
ऋतुओं की रानी बन-ठन के,
इसी खुशी में कपड़े बदले
जंगल, झाड़ी, वन-उपवन ने।

सौ-सौ रंगों की होली है
खेली फूलों ने हंस-हंसकर,
अठखेली कर रहीं हवाएं
उनको अपनी गोदी भरकर।

नदिया की लहरें तट पर आ
ताल दे रहीं धीरे-धीरे,
रातों में चमकेंगे इनमें
मोती, मूंगा, पन्ना, हीरे।

पंछी उड़ते, कलरव करते
बर्फ पिघल झरना बन झरती,
ऊपर कोई स्वर्ग नहीं है
स्वर्ग बनी अपनी यह धरती।

—रमेश कौशिक



होली का हुड़दंग

मौसम ने करवट बदली है, लेकर के अंगड़ाई,
रंगों की बरसात लिए फिर, देखो होली आई।
होली का हुड़दंग मचा है घर के बाहर-भीतर,
सबकी सूरत एक लग रही, क्या भोला, क्या चंदर!
मम्मी ने पकवान पकाया, पूआ, लड्डू, गुझिया,
सजा थाल मेवा का देखो, कितना लगता बढ़िया।
चाचा जी भर-भर ठंडाई सबको लगे पिलाने,
दादाजी का पता नहीं पर, गए कहां, क्या जाने।
कुछ तो करना होगा भाई—सबने सोचा मिलकर,
दादा जी को बाहर लाएं, जो बैठे हैं छिपकर।
रंगों की बौछार हुई तब, दादा जी के ऊपर,
बच्चों की टोली से वह अब कैसे जाते बचकर!

— प्रतिमा पांडेय



पांच जने

अंधा, बहरा, लंगड़ा, लूला और फकीर,
पांच जने चलते हुए, पहुंचे जंगल तीर।
पहुंचे जंगल तीर, तभी कुछ अंधा ठिठका-
'ठहरो, मुझे दिख रहा है आगे कुछ खटका।'
सुनकर बहरा बोला—'सच कहते हो भाई,
मुझको भी पड़ रहा उधर कुछ शोर सुनाई।'

लंगड़ा बोला—'वह रही, वह घोड़ों की टाप,
डाकू हैं, मर जाएंगे, अरे बाप रे बाप।
अरे बाप रे बाप, चलो भागें बच जाएं।'
लूला बोला—'आओ, दो-दो हाथ दिखाएं।'
सुन फकीर बोला—'तुम सब मिल यही करोगे।
मुझे अकेला छोड़, राह में लुटवा दोगे।'

—'क्रान्त' मदनलाल वर्मा

Scanned with CamScanner



Scanned with CamScanner



Scanned with CamScanner



Scanned with CamScanner


किसी तरह वे चकराता पहुंचे । वहां . . .
सब हम पर हंस रहे हैं ।
उफ . . .
इसे लाकर मुसीबत मोल ले ली . . .
अस्पताल गए तो . . .
तीन सौ रुपए जमा कराओ । मैं इंजेक्शन तैयार करता हूं ।
तीन सौ !
मर गए । सारी जेबें खाली . . .
जैसे ही डाक्टर मुरली को इंजेक्शन देने बढ़ा . . .
मैं तो ठीक हूं । सांप ने नहीं काटा . . . बहाना था । इन्हें सबक सिखाना था . . .
!?
हम तो इसे मूर्ख समझते थे !
मान गए ! नहले पर दहला !
और फिर . . .
सुरेश, जरा वह पुस्तक उठाना . . .
उठाता हूं बड़े भाई !

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : २९ अंक ५, नई दिल्ली; मार्च '९३ फाल्गुन-चैत्र, शक सं. १९१४

छह बरस से पहले स्कूल नहीं

नई दिल्ली। 'बच्चा तीन साल का हो गया, चलो दौड़ो स्कूल की तरफ। वह बच्चा, जिसके लिए पूरी दुनिया ही बिलकुल नई होती है, अचानक अपने आप को किताबों के बोझ में दबा पाता है। यही नहीं, स्कूलों में प्रवेश के लिए उसे 'इंटरव्यू' तक देना पड़ता है।

'यह बच्चे के सही विकास के लिए ठीक नहीं है। यदि बच्चा छोटी उम्र में स्कूल भेज दिया जाता है, तो नौ वर्ष की उम्र तक आते-आते वह पढ़ाई से ऊबने लगता है। बच्चे को छह वर्ष की उम्र से पहले स्कूल नहीं भेजना चाहिए।'—यह कहना है डा. अनिल गुलाटी और डा. विजय अग्रवाल का। उन्होंने छोटे बच्चों पर एक रिपोर्ट तैयार की है।

यह रिपोर्ट दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन के सम्मेलन में प्रस्तुत की गई। डाक्टरों का कहना है कि छह वर्ष से कम उम्र के बच्चे को किसी भी स्कूल में नहीं भेजना चाहिए। छोटी उम्र के बच्चों को पैंसिल या कलम पकड़ाना भी ठीक नहीं है। इससे उनकी उंगलियों और कलाइयों पर अधिक बोझ पड़ता है।

तीन से छह वर्ष तक के बच्चों को ऐसी जगह भेजा जा सकता है, जहां वें खेल सकें। इसलिए सरकार को नर्सरी स्कूलों का नाम बदलकर 'खेल केंद्र' कर देना चाहिए। माता-पिता भी अपने छोटे बच्चों को पढ़ने न भेजें। सरकार को छोटे बच्चों के 'इंटरव्यू' लेने की प्रथा पर भी रोक लगा देनी चाहिए।

बच्चों की कार

लंदन। न ईंधन, न इंजन, न प्रदूषण फिर भी यह नन्ही-सी कार सड़कों पर खूब दौड़ती है। कीमत है दो हजार रुपए। छोटे बच्चे इसमें स्कूल से घर आ सकते हैं। इस कार की बिक्री को लेकर प्रबंधक चिंतित हैं। वे कहते हैं —"पिछले साल इसकी बिक्री ९२ प्रतिशत बढ़ी जबकि इसका कोई विज्ञापन भी नहीं किया गया था। यदि और मांग बढ़ी तो क्या होगा? हम तो इतना उत्पादन भी नहीं कर सकते।"

एकता और बच्चे

पुणे। यहां के एक्सीलैंट आर्ट स्कूल के बच्चों ने गणतंत्र दिवस पर अनोखा बधाई कार्ड बनाया। यह तीस फीट लम्बा और डेढ़ फीट चौड़ा है। चित्रों में राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया गया है। बच्चों ने इसे राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा को भेंट किया।

कोयले-मिट्टी का भोजन

कोटा। उसका भोजन है एक किलो कोयला और आधा किलो मिट्टी। पिछले चौदह सालों से वह ये दोनों चीजें खा रहा है। नाम है चांदमल। यदि चांदमल को कोयला और मिट्टी खाने को न मिले, तो वह थकान महसूस करने लगता है।

पंचतंत्र सबसे अधिक लोकप्रिय

नई दिल्ली। पंचतंत्र का सबसे अधिक अनुवाद हो चुका है। माना जाता है कि सत्रहवीं सदी में फ्रेंच में इसका अनुवाद हो चुका था। इसके जर्मन, अंग्रेजी तथा विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं।

उन्हें भारत पसंद है

न्यूयार्क। अमरीका में लोग परिवार की जरूरत महसूस करने लगे हैं। यह कहना है डा. जेसलीन एम. नेल्सन का। वह तेइस वर्षों से एक स्वास्थ्य केंद्र चलाती हैं। इसमें गम्भीर रोगियों का इलाज किया जाता है। रोगियों के खाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यही नहीं रोगियों को ध्यान करना सिखाया जाता है। डा. नेल्सन को भारतीय रहन-सहन, खाना-पीना और रीति-रिवाज बहुत पसंद हैं।

श्रेष्ठ पुस्तकों पर पुरस्कार

देश में बढ़िया पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए फेडरेशन आफ इंडियन पब्लिशर्स ने पुरस्कारों की घोषणा की है। ये पुरस्कार हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा मुखपृष्ठ के लिए दिए जाएंगे। फेडरेशन ने इस वर्ष अंग्रेजी की सत्ताईस, हिन्दी की सोलह और अन्य भारतीय भाषाओं की पंद्रह पुस्तकों को पुरस्कार के लिए चुना है। बच्चों की पुस्तकें भी पुरस्कृत की गई हैं।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

Scanned with CamScanner

बच्चों का अखबार
नंदन बाल समाचार

भारत का एक-एक धूलकण भी मेरे लिए पवित्र है। —स्वामी विवेकानंद

कहां जा रहे हैं

पब्लिक स्कूलों के चार छात्रों को नई दिल्ली पुलिस ने कार स्टीरियो चोरी करने पर गिरफ़्तार किया है। इनके कब्जे से तेरह कार स्टीरियो बरामद हुए हैं। पकड़े गए छात्र १४ से १६ साल के हैं। ये लड़के स्टील के फुटे से कार का लीवर ऊपर करके दरवाजा खोल लेते थे, फिर उसमें से स्टीरियो चोरी करके फरार हो जाया करते थे। स्टीरियो बाद में बाजार में बेच देते थे।

किशोर उम्र के छात्र-छात्राओं में तेजी से अपराध बढ़े हैं। अक्सर ऐसे बच्चे पब्लिक स्कूलों के ही होते हैं। वहां उन्हें अधिक खर्च करने और दिखावा करने-कराने की शिक्षा भी मिलती है। आधुनिकता के फेर में वे भटक जाते हैं। घर से इतना पैसा नहीं मिल पाता कि अनाप-शनाप खर्च पूरे कर सकें। तब वे चोरी करने लगते हैं या कई दूसरे अपराध। अपने ही किसी साथी या उसके घर के सदस्य को भी शिकार बनाने में इन्हें हिचक नहीं होती। भारतीय शिक्षा में सादगी, संयम और चरित्र पर जोर था। इन्हें नकार कर बच्चे किस दमघोंटू चक्रव्यूह में फंसते जा रहे हैं!

सबसे पुरानी पाठिका



'नंदन' की सबसे पुरानी पाठिका थीं श्रीमती सुशीला देवी। वह ११० वर्ष की थीं। पिछले बीस वर्षों से नंदन का हर अंक पूरा पढ़ती थीं। कहानियों के बारे में अपनी राय भी देती थीं। हाल ही में इन दादी अम्मां का निधन हो गया। इनके सुपुत्र कविराज ओमप्रकाश जाने-माने आयुर्वेदाचार्य और 'नंदन' के लेखक हैं।

लम्बाई बढ़ रही है

टोकियो। जापानी लोगों की लम्बाई बढ़ रही है। इसका कारण है, वहां के लोगों की अच्छी खुराक। जापान स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट में यह बात कही गई है।

क्यों आया है गुस्सा

एडिनबरा। यदि खून में चिकनाई बढ़ जाए, तो गुस्सा अधिक आता है। चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है। अक्सर दूसरों के बारे में बुरे विचार आते हैं।

हजारों का गधा

उज्जैन। यहां का गधा मेला मशहूर है। गत चालीस वर्षों से यह मेला लग रहा है। इसमें दूर-दूर से गधे आते हैं। इस बार राजा नाम के एक गधे को साढ़े चार हजार रुपयों में बेचा गया।

पशुओं पर करोड़ों

लंदन। ब्रिटेन के लोगों ने अपने पालतू पशुओं पर इस साल साढ़े बारह करोड़ रुपए खर्च किए। यह पैसा सिर्फ खाने पर ही खर्च नहीं हुआ बल्कि इससे कुत्ते-बिल्लियों के खिलौने, बिस्तर और सजावट का सामान खरीदा गया। ब्रिटेन में लोग अपने पालतू जानवरों पर सबसे अधिक पैसे खर्च करते हैं।

कैसे-कैसे संग्रहालय

म्युनिख। जर्मनी में अजीबोगरीब संग्रहालय हैं। जूते, मक्खी-मच्छर, तितलियां, सिगार, हाथगाड़ी और कार, छाते, मिट्टी के बर्तन – जर्मनी के विभिन्न नगरों में बने इन संग्रहालयों को देख, इन चीजों का इतिहास जाना जा सकता है।

अनोखी रामायण

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में जापान के योगा साका की एनिमेशन फिल्म 'रामायण' दिखाई गई। १३५ मिनट की फिल्म में पूरी वाल्मीकि रामायण को समेटने की कोशिश की गई है।

नारियल का देश

कटक। पहली सदी में कलिंग के राजा ने बाली द्वीप की यात्रा की थी। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में बाली को नारियल का देश कहा गया है। बाली के शिलालेखों में भी इस बात का उल्लेख मिलता है। आज भी बाली और उड़ीसा के लोगों की बहुत-सी बातें मिलती हैं। दोनों जगहों पर त्योहार एक तरह से मनाए जाते हैं।

शरीर में सुइयां

काहिरा। ग्यारह माह का एक बच्चा बीमार था। डाक्टर समझ नहीं पा रहे थे कि क्या बीमारी है। उसका एक्स-रे किया गया। पता चला है कि बच्चे के पूरे शरीर में सिलाई वाली सुइयां हैं। सुइयां अंदर कैसे पहुंचीं, यह बच्चे के माता-पिता को भी मालूम नहीं है।

एक लाख कि. मी. पैदल

सहारनपुर। दिलीप बिग अब तक एक लाख किलोमीटर पैदल चल चुके हैं। वह १९८२ से पैदल चल रहे हैं। उनकी यह यात्रा सन् २००२ में अमरीका में समाप्त होगी। अब तक वह एक सौ छियत्तर जोड़ी जूते तोड़ चुके हैं। ये जूते उन्हें एक मशहूर जूता कम्पनी देती है।

खोया बेटा मिला

अम्बाला। पंद्रह साल पहले राजेंद्र का बेटा राजू खो गया था। एक दिन उसके एक दोस्त ने कहा कि उसने एक लड़के को देखा है,जिसकी शक्ल राजेंद्र के बाकी दोनों बच्चों से मिलती है। राजेंद्र उस गांव में पहुंचा। एक जमींदार के घर में राजू रहता था। जमींदार ने कहा कि कोई प्रमाण दो,क्योंकि मैंने इसे अपने बच्चों की तरह पाला है। राजेंद्र ने कहा, इसकी पीठ पर एक निशान भी है। निशान देखकर जमींदार ने राजू दे दिया। चलते-चलते रोते हुए कहा—"मुझसे मिल जाया करना। आखिर मैं भी तुम्हारा पिता हूं।"

तीली पर बधाई-पत्र

कोडागांव। यहां के एक लड़के सुनील ने माचिस की तीली को छीलकर बधाई-पत्र बनाया है। इस पर एक आदिवासी का चित्र और बधाई संदेश लिखा है।

बिजली का कंघा

तेल अवीब। लम्बे बालों में जुएं घर बना लेती हैं। उन्हें मारना कठिन होता है। इस्रायल की एक कम्पनी ने एक विशेष कंघा बनाया है। उसमें बिजली की धारा बहती है। जैसे ही जूं कंघे को छूती है, बिजली का झटका लगता है और वह मर जाती है।

मालिक चोर

मंदसौर। एक ठेकेदार के घर एक महिला काम करती थी। महिला और उसके ड्राइवर पति ने एक छोटा-सा मकान बनवाया। उसमें ठेकेदार से गहने रखने के लिए एक जगह बनवाई। एक दिन ठेकेदार ने देखा कि महिला किसी काम में लगी है, तो उसने उस जगह से जेवर निकाल लिए। महिला ने जब उस जगह का सीमेंट उखड़ा देखा, तो उसे अपने मालिक ठेकेदार पर ही शक हुआ। पुलिस ने ठेकेदार को पकड़ लिया।

नं. बा. स. ३६ स

चित्रकला प्रतियोगिता के परिणाम

'नंदन' की ओर से दिल्ली में बच्चों की तीन चित्रकला प्रतियोगिताएं पिछले वर्ष की गईं। प्रतियोगिताएं दो वर्गों में थीं। परिणाम इस प्रकार रहा—

आक्सफोर्ड सीनियर सैकण्डरी स्कूल केंद्र— **प्रथम**—यवनिका, दिव्या बौरी : **द्वितीय**—प्रेरित जायसवाल, आशीष अधिकारी, मयंक दिलौरी : **तृतीय**— सारिका मनचंदा, मो. आरिफ, यतींद्रपाल सिंह।

बिरला विद्या निकेतन केंद्र— **प्रथम**— श्रव्य मार्कण्डेय, मोहर राय; **द्वितीय**— सुपर्णा सेनगुप्ता, मेखला चक्रवर्ती; **तृतीय**— दिनेश शर्मा, सुपर्णा भौमिक

कुलाछी हंसराज माडल स्कूल केंद्र— **प्रथम**— सुरभि ठक्कर, अमित चावला, सचिन दलाल; **द्वितीय**— दिशा नैन, रवींद्रसिंह जस्सल, रुचि चावला; **तृतीय**— नेहा पाल, मनीत कौर, गौरी मेंहदीरत्ता।

इनके अतिरिक्त प्रत्येक वर्ग में दस-दस प्रशंसा पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे। विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जा रहा है।

निर्णायक मंडल में बाल भवन की निदेशिका श्रीमती मधु पंत, प्रसिद्ध चित्रकार श्री रामकिशोर यादव, कला अध्यापिका जया दत्ता, चित्रकार श्री प्रशांत सेन और सम्पादक नंदन थे।

सांप नहीं, दोस्त हैं

पुणे। नील कुमार खेर सांपों के पार्क-निदेशक हैं। सांप पालने का शौक उन्हें इसलिए हुआ कि लोग बिना कारण सांपों को मारते हैं। उनके एक पालतू सांप ने उन्हें काट लिया। डाक्टरों की लापरवाही के कारण हाथ काटना पड़ा। इस वक्त उनके सांप पार्क में ढाई सौ सांप, सात मगरमच्छ और कुछ पक्षी हैं।

नन्हे समाचार

□ अस्पतालों में शिशु कई बार अदल-बदल जाते हैं। इस गड़बड़ी को रोकने के लिए ब्रिटेन में एक नया तरीका खोजा गया है— वहां बच्चे के अंगूठे और पैरों की छाप ली जाती है। फिर गड़बड़ी की गुंजाइश नहीं रहती।

□ नैरोबी में एक दुकानदार चार चूहे लेकर पुलिस स्टेशन पहुंचा। उसने कहा— "इन चूहों ने मेरी डबलरोटियां खराब कर दी हैं। आप इन चोरों को गिरफ़्तार कर लीजिए।" पुलिस वालों ने पिंजरे ले लिए और दुकानदार संतुष्ट होकर लौट गया।

□ नार्वे का इर्लिंग कैग स्की के सहारे दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला प्रथम व्यक्ति है, जिसने अकेले ही यह यात्रा पूरी करके एक रिकार्ड बनाया है।

□ अमरीकी वैज्ञानिकों का कहना है, जब हाथी मुंह खोलते और कान हिलाते हैं, तो उस समय वे दूर खड़े अपने साथियों से बात कर रहे होते हैं।

□ कोलम्बो में एक हाथी सड़क पर जा रहा था। एकाएक वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा। हाथी को उसी समय ग्लुकोज चढ़ाया गया तो कुछ ही देर में उठकर अपने रास्ते चला गया।

□ भू-वैज्ञानिकों ने बड़ौदा जिले में कुछ अत्यंत प्राचीन गुफाएं खोजी हैं। उन्हें देखने से पता चला है कि पाषाणकाल में इन गुफाओं में हथियार बनाए जाते थे।

□ सीरिया में एक औरत ने विचित्र बच्चे को जन्म दिया। उसकी आंखें और चेहरा मछली जैसे थे। डाक्टरों ने इसका कारण एक विचित्र रोग बताया था।

□ सुंदरवन क्षेत्र में बाघों की संख्या बहुत अधिक है। बाघ गांवों में न जाएं, इसके लिए जंगल में तारों की बाड़ लगाई गई है। तारों में बिजली दौड़ती है। पिछले दिनों एक बाघ बिजली का झटका खाकर मारा गया।

Scanned with CamScanner

सचित्र समाचार





उड़िया के जाने-माने कवि रमाकांत रथ को सरस्वती सम्मान। पुरस्कार में तीन लाख रुपए दिए जाते हैं। हिन्दी कथाकार शिवप्रसाद सिंह को डेढ़ लाख रुपए का व्यास सम्मान। पुरस्कार के. के. बिड़ला फाउंडेशन की ओर से दिए जाएंगे।



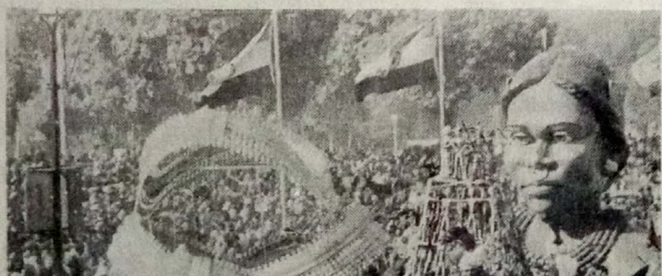
भारतीय सेना के राकेश सिंह : कश्मीर में उग्रवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए : मरणोपरांत अशोकचक्र प्रदान किया गया।



नंदन की ओर से चित्रकला प्रतियोगिता : हैप्पी स्कूल, दरियागंज और बाल भवन पब्लिक स्कूल, मयूर विहार फेज-२ में हजारों बच्चों ने चित्र बनाए।

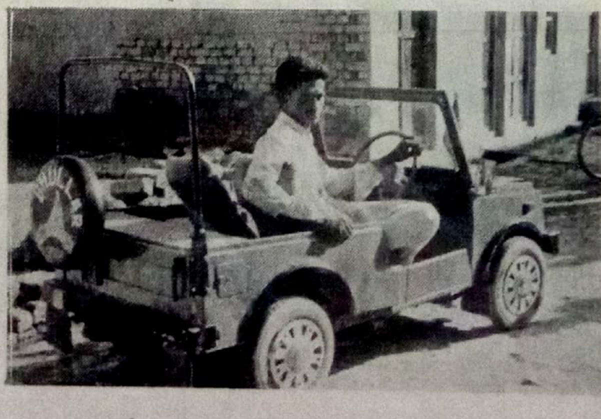


एन. सी. सी. के कैडेटों द्वारा मलखम्भ का प्रदर्शन।

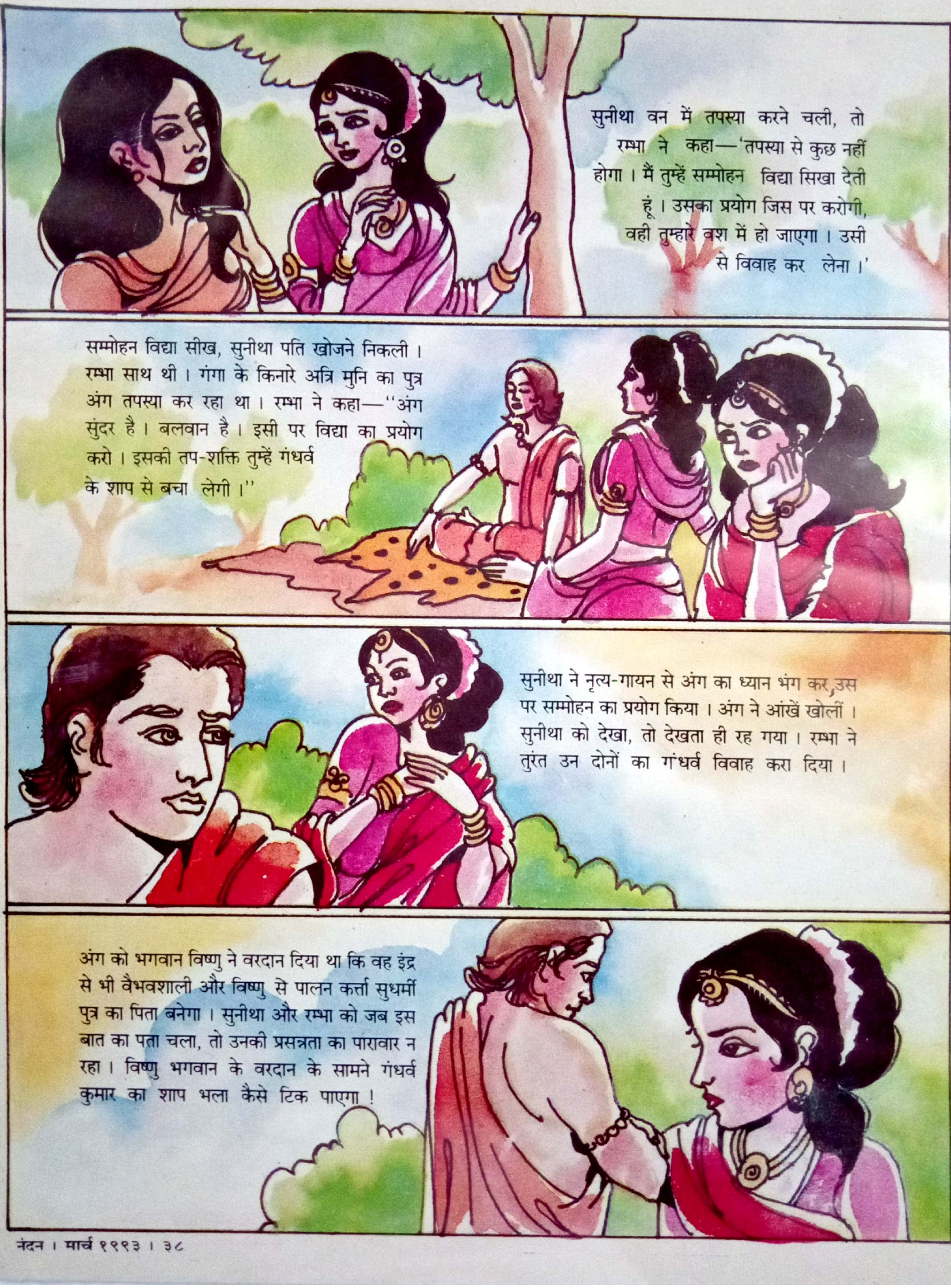


झनक-झनक पायल बाजे—गणतंत्र दिवस पर निकली मध्य प्रदेश की झांकी।

स्कूटर के इंजन से बनी जीप : एक लिटर पेट्रोल में तीस कि.मी. चलती है। इसे फतेहाबाद के अठारह वर्षीय फरेजसिंह ने बनाया है।

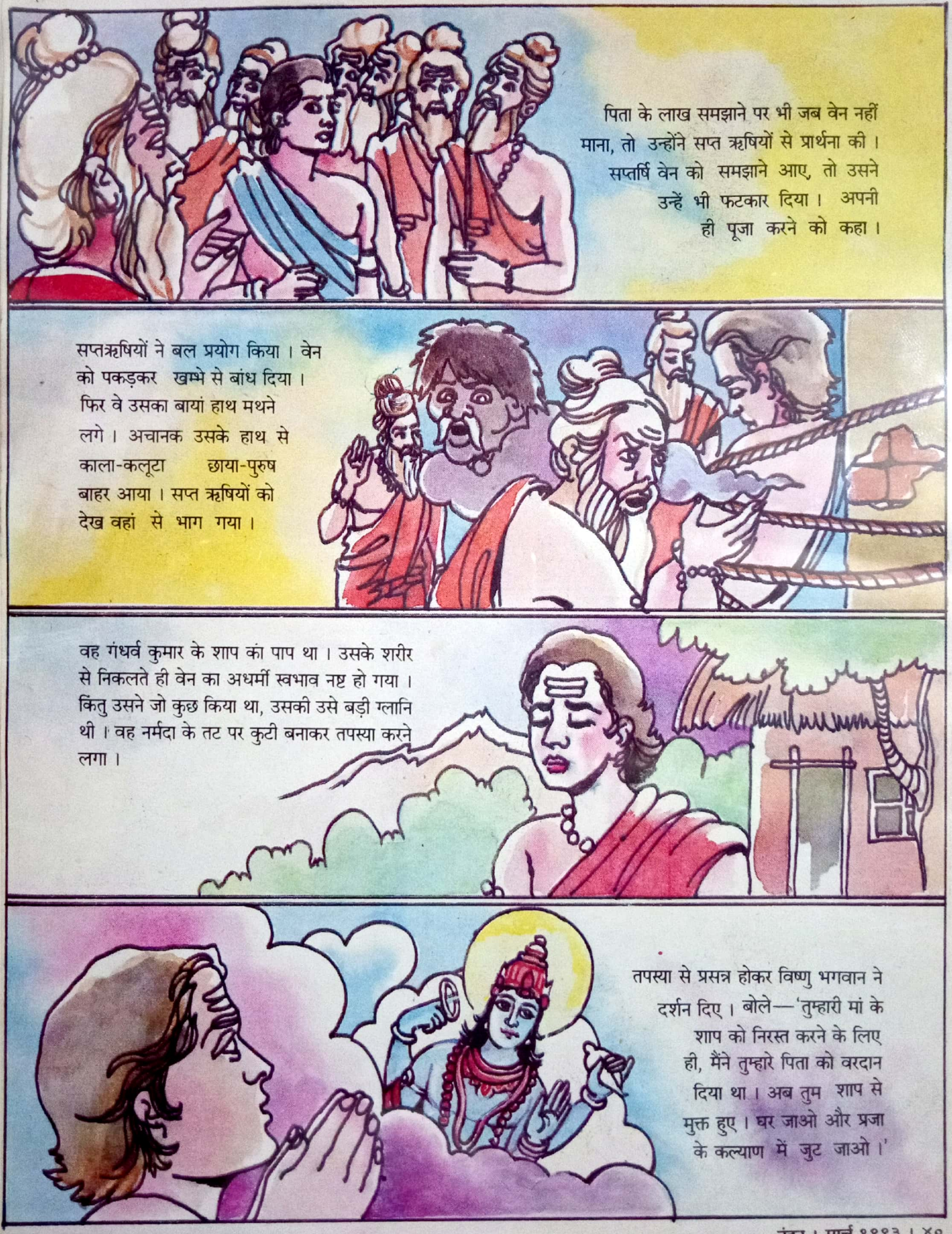



शाप और वरदान
मृत्यु देवता की कन्या थी सुनीथा । बचपन ही से वह देखती, उसके पिता पृथ्वी लोक के पापियों को कठोर दंड देते हैं । इसी से उसके स्वभाव में भी कठोरता आ गई थी ।
स्वर्ग की कई अप्सराएं सुनीथा की सखियां थीं । रम्भा भी उनमें से एक थी । वे सब मिलकर पृथ्वी पर आतीं । खेल-खेल में वन-उपवन उजाड़ डालतीं । इस खेल में उन्हें आनंद आता था ।
एक बार उन्होंने वन में किसी गंधर्वकुमार को सरस्वती की आराधना करते देखा । सुनीथा अकारण ही उस पर कोड़ों से प्रहार करने लगी ।
गंधर्व कुमार ने समझाना चाहा, पर जब वह नहीं मानी, तो उन्होंने शाप दिया—''विवाह के बाद तू एक घोर पापी और अत्याचारी बच्चे की मां बनेगी ।''
शाप की बात चारों ओर फैल गई । सुनीथा विवाह योग्य हो गई थी, किंतु कोई भी उससे विवाह करने को तैयार नहीं होता था । मृत्यु देवता चिंतित रहने लगे । उन्होंने सुनीथा को सलाह दी—''तपस्या कर । अपने लिए देवताओं से श्रेष्ठ पति मांग ।''



Scanned with CamScanner


समय पर सुनीथा मां बनी। पुत्र का नाम रखा गया वेन। वीर वेन ने युवा होने तक वेद आदि सारी विद्याओं में निपुणता प्राप्त कर ली। सद्गुणों का वह भंडार था। उसे देख, सुनीथा गंधर्व कुमार का शाप भूल गई।
वेन हर दृष्टि से सर्वगुण संपन्न था। सबने मिलकर उसे प्रजापति स्वीकार कर लिया। धूम-धाम से उसे राज सिंहासन पर बैठाया गया।
गंधर्व कुमार का शाप, जब भी वेन के शरीर में प्रवेश करना चाहता, भगवान विष्णु का वरदान आड़े आ जाता था। एक दिन शिकार खेलते वेन की भेंट एक घोर नास्तिक से हो गई। उसकी लच्छेदार बातों ने वेन को असावधान कर दिया। बस, गंधर्व के शाप को अवसर मिला। वह तुरंत वेन में समा गया।
उसी क्षण से वेन बदल गया। धर्म को पाखंड समझने लगा। धर्म-ग्रंथ उसे व्यर्थ लगने लगे। पूजा अर्चना पर रोक लगा दी। साधु-संतों का तिरस्कार करने लगा। अत्रि मुनि परेशान थे- बेटे को तो वरदान प्राप्त था, फिर यह क्या हो रहा है। सुनीथा सब जानती थी, पर वह चुप थी।



Scanned with CamScanner



बुढ़िया की बात

—स्नेह अग्रवाल

पोलैंड में कभी राजा कासीमिर राज्य करता था।

उसके राज्य में कई साल तक बरसात नहीं हुई। सूखे के कारण भयंकर अकाल पड़ गया। कहीं कुछ भी खाने को न था। जानवर और आदमी भूख-प्यास से मरने लगे। बीमारियां फैलने लगीं।

राजा कासीमिर बहुत अच्छे स्वभाव का था। वह अपनी प्रजा से प्रेम करता था। सदा न्याय करता था। अकाल के दिनों में उसने आदेश दिया कि अन्न के राजसी भंडार खोल दिए जाएं। जरूरतमंद लोगों को मुफ़्त अनाज बांटा जाए। राजा ने देश के कोने-कोने में लोगों की धन से भी भरपूर मदद की, ताकि वे अनाज और दूसरी चीजें खरीद सकें। लेकिन इतना सब करने पर भी हजारों स्त्री-पुरुष और बच्चे मौत के शिकार हो गए।

राजधानी से दूर एक नगर में एक धनवान आदमी गुंथर रहता था। वह बहुत कंजूस और कठोर स्वभाव का था। उसके कई गोदाम अनाज से भरे थे। किंतु गुंथर किसी को दो मुट्ठी अनाज भी नहीं देता था। यदि कभी किसी को कुछ अनाज देता भी, तो मुंहमांगे दाम वसूल करता।

कई बार चिथड़ों में लिपटे भूखे बच्चे गुंथर के दरवाजे पर मांगने आते। वह उन्हें गालियां देने लगता और डांटकर भगा देता। कोई भिखारी ज्यादा मिन्नतें करता, तो गुंथर कोड़ा लेकर उस पर झपट पड़ता। गुंथर का कहना था—"जो कुछ भी मेरे पास है, वह मेरे लिए है। किसी और को मैं क्यों दूं?" वह हर चंद कोशिश करता कि जितना जो कुछ उसके पास है, उसमें बढ़ोतरी ही होती रहे, कहीं कोई कमी न हो।

गुंथर को पता चला कि अकाल के कारण कई मठों में बेसहारा लोगों के लिए लंगर लगाए जाते हैं। भूखों को रोटियां बांटी जाती हैं। हद दर्जे का कंजूस तो वह था ही। एक दिन उसने फटे-पुराने कपड़े पहने। घर से दस-ग्यारह किलोमीटर दूर एक मठ में गया। वहीं जाकर मुफ़्त भरपेट भोजन किया। कुछ रोटियां उसने चुपके से छुपा लीं, ताकि शाम को घर पर उनसे काम चला सके।

Scanned with CamScanner

गुंथर अपने घर की ओर चला जा रहा था। उसे इतना संतोष था कि आज दोनों समय उसे भोजन पर कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा। तभी रास्ते में उसे एक बूढ़ी औरत मिली। उसकी गोद में छोटी बच्ची थी। वह बोली—"गरीब परवर, दया करो। मेरी पोती कई दिन से भूखी है। इसे खाने को कुछ दीजिए, नहीं तो यह दम तोड़ देगी।"

गुंथर बोला—"अरे, वहां ओलिवा के मठ में चली जा। वे तुझे खाने को दे देंगे।"

"लेकिन मैं इतनी दूर कैसे जाऊं! भूख के मारे प्राण निकले जा रहे हैं।"—बुढ़िया बोली। तनिक रुककर वह फिर बोली—"आप तो वहीं से आ रहे हैं। कुछ खाने को दे दीजिए, तो बच्ची की जान बच जाएगी।"

"लेकिन मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। तुम्हें क्या दूं, कहां से दूं?"—गुंथर बोला।

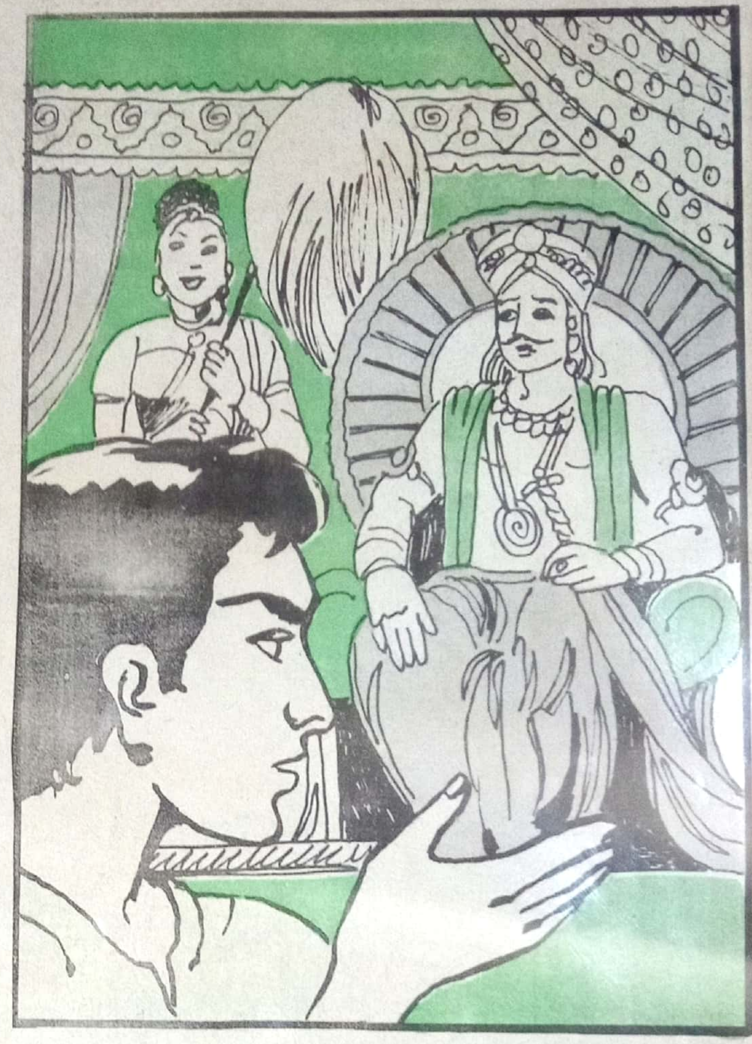
बुढ़िया कहने लगी—"महाशय, आपके पास रोटियां हैं जो आपने छिपा रखी हैं। एक-दो रोटी दे दीजिए, बड़ी कृपा होगी।"

गुंथर को तनिक भी दया न आई। उसका दिल तो मानो पत्थर का था। कहने लगा—"अरी, मैंने रोटियां छिपा रखी हैं, तेरा दिमाग तो ठीक है? मैं तो पत्थर ले जा रहा हूं। मुझे मरम्मत के लिए चाहिएं। जा, अपना रास्ता देख।"

बुढ़िया बोली—"तुम झूठ बोल रहे हो। खैर, तुम्हारी बात ही सच हो जाए। रोटियां पत्थर ही बन जाएं।"

इतना कहकर बुढ़िया एक ओर को चली गई। देखते ही देखते वह निगाह से ओझल हो गई। गुंथर को लगा कि जैकेट के नीचे छिपाई हुई रोटियां भारी होती जा रही हैं। उसने निकाल कर देखा, तो रोटियां नहीं, पत्थर के टुकड़े ही उसके हाथ में थे।

गुंथर का मन बदल गया। उसने अपने गोदामों को खोल दिया। सारा अनाज गरीब और जरूरतमंद लोगों को दे दिया। वे पत्थर बहुत दिनों तक मठ में रखे रहे। वहां आने वालों को अनोखे चमत्कार की याद दिलाते रहे।



नाम का इनाम

—मिर्जा इरफान बेग

जंगल के छोर पर एक गांव था। वहां एक युवक रहता था बिरजू। वह बड़ा मिलनसार था। लोगों के कामों में हाथ बंटाना और जंगल में नए-नए पेड़ लगाना, उसे अच्छा लगता। उसने पेड़ों के नाम भी रखे थे।

बिरजू नित-नई कहानियां गढ़ने में भी निपुण था। बच्चे तो बिरजू से बहुत खुश रहते थे। देखते ही बच्चे दौड़कर उसे घेर लेते। नई कहानी सुने बिना, बच्चे क्या बड़े-बूढ़े भी अपने घर न जाते।

एक शाम बिरजू लोगों को कहानी सुना रहा था। तभी दो घुड़सवार सैनिक वहां आ पहुंचे। कहानी बीच में रुक गई, सन्नाटा छा गया।

"यहां बिरजू कौन है?"—एक सैनिक ने पूछा।

"जी, मैं।"—बिरजू सहम कर बोला।

"तुम्हें कल दरबार में हाजिर होना है। राजा का

आदेश है ।"—कहकर सैनिक चले गए । सब एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे । बिरजू को राजा ने क्यों बुलवाया है ? यह बात उनकी समझ से बाहर थी ।

मां ने बिरजू से पूछा—"बेटा, कहीं तू ने राजा के किसी आदमी को... । नहीं, तू ऐसा नहीं कर सकता ।"

—"मां, मुझे कुछ पता नहीं । मैंने कोई अपराध भी नहीं किया ।"

"बिरजू का अपराध यही है कि वह केशव का बेटा है ।"—मैकू की दादी बोली—"केशव का क्या अपराध था ? यही कि वह दीवान के अत्याचारों के खिलाफ लड़ने को खड़ा हो गया था । भरी जवानी में मारा गया बेचारा ।"

अगले दिन बिरजू दरबार में जा पहुंचा । उसने राजा को प्रणाम किया ।

"बिरजू ! तुमने हमारे जंगल में अपने पेड़ लगाए हैं?"—राजा ने पूछा ।

—"महाराज ! जंगल आपका, पेड़ आपके । मैं तो बस उनकी सेवा करता हूं ।"

—"तुमने पेड़ों को अपने मां-बाप के नाम दिए हैं । यह कहां तक सही है ?"

बिरजू बोला—"मालिक, केवल दो पेड़ों को ही मैंने अपने माता-पिता का नाम दिया है ।"

—"कटहल के एक पेड़ का नाम तुमने 'सुमेर' रखा है । क्या तुम नहीं जानते कि यह हमारा नाम है ?"

—"कटहल के पेड़ के लिए आपका नाम उचित है ।"

—"वह कैसे ?"

"कटहल के पेड़ की आयु सौ बरस से ऊपर होती है । भगवान करे, आपकी आयु उससे भी अधिक हो । कटहल का पेड़ जल्दी से न तो उखड़ता है, न इसकी डाल टूटती है । इसके पत्ते भी आसानी से नहीं गिरते । कटहल के वृक्ष की भांति आप दृढ़ता से बने रहें । और हम आपकी छत्र-छाया में आराम से रहें ।"

"और इसके भद्दे, बेडौल फल ?"—राजा ने पूछा ।

"कटहल का फल ऊपर से कांटेदार होता है । पर इसकी मिठास भी किसी फल से कम नहीं होती । आपका पुरस्कार भी पाने वाले के जीवन में मिठास भर देता है ।"—बिरजू ने कहा ।

"हमें बहुत प्रसन्नता हुई तुम्हारे उत्तर सुनकर । तुम्हें इसका इनाम भी मिलेगा ।"—राजा ने मुसकरा कर कहा । फिर गम्भीर होते हुए बोले—"तुमने अपने पिता के नाम से शीशम का पेड़ लगाया है । शीशम भी तो कई वर्षों तक हरा रहता है । पर तुम्हारे पिता तो भरी जवानी में ही चल बसे थे ।"

बिरजू ने कहा—"आप सही कहते हैं महाराज ! शीशम सौ साल जीता है । लेकिन घर-मकान के लिए सबसे अधिक शीशम ही काटे जाते हैं । सौ बरस कौन-सा शीशम जी पाता है ? बीस या तीस बरस के होते-होते ही अधिकतर शीशम के पेड़ काट दिए जाते हैं । मेरे पिता भी... ।" कहते-कहते उसका गला भर गया ।

राजा असमंजस में पड़ गए । दरबार में सन्नाटा छा गया । तब राजा ने मंत्री से कहा–"बिरजू के पिता के हत्यारों को सात दिन के अंदर कैद किया जाए । मैं बिरजू को आज से वन-रक्षक नियुक्त कर रहा हूं । इसे सौ मुहरें प्रतिमाह वेतन दिया जाएगा ।"

कुछ रुककर बिरजू बोला—"महाराज, मेरे पिता को गुजरे ग्यारह बरस बीत चुके हैं । मेरी विनती है कि आप उनके हत्यारों को क्षमा कर दें ।" कहते हुए बिरजू की आंखें अनायास ही दीवान की ओर उठ गईं । दीवान ने आंखें झुका लीं । उसने भरे दरबार में बिरजू के पिता की हत्या का अपराध कबूल कर लिया । बिरजू के कहने पर राजा ने उसे माफ कर दिया ।

—"मंत्री जी ! राज्य में घोषणा करवा दीजिए कि आज से कोई भी हरा-भरा वृक्ष नहीं काटा जाएगा । आदेश का उल्लंघन करने वालों को कठोर दंड दिया जाएगा ।"—कहते हुए राजा उठ खड़े हुए ।

दरबार से निकलकर बिरजू मुख्य द्वार की ओर बढ़ रहा था, तभी किसी ने उसे धीरे से पुकारा । उसने पलटकर देखा, वह दीवान था । दीवान की आंखें गीली थीं । उसने बिरजू से कहा—"जीते रहो बेटे !" और आगे चल पड़ा ।

Scanned with CamScanner

लाओ तीर

जमदग्नि ऋषि-पुत्र होकर भी, स्वभाव से क्रोधी और बलशाली थे। उनका विवाह सूर्यवंशी राजा रेणु की सबसे छोटी पुत्री रेणुका के साथ हुआ। अपनी पत्नी को लेकर जमदग्नि अपने पिता ऋषि ऋचीक के साथ आश्रम में रहने लगे। उनका मन तपस्या में कम, धनुष विद्या में अधिक लगता था। रोज धनुष-बाण लेकर जंगल में निकल जाते और निशाना साधते।

एक दिन वह रेणुका को साथ ले, अभ्यास करने गए। गरमी का मौसम था। एक मैदान में जाकर उन्होंने कंधे से धनुष उतारा। पत्नी से बोले—"रेणुका, मेरे पास बाण कम हैं। मैं धनुष पर बाण चढ़ाकर निशाने पर तीर छोड़ूंगा। तुम तीर इकट्ठे कर, मुझे देती जाना।"

जमदग्नि तीर छोड़ने लगे। रेणुका भाग-भागकर तीर इकट्ठे करने लगी। दोपहर हो गई। धूप के कारण धरती भी तपने लगी थी। जमदग्नि के छोड़े तीर दूर-दूर तक जाते थे। रेणुका को तपती धूप में बाण जल्दी-जल्दी उठाकर लाना पड़ता था। तपती धरती और रास्ते में कांटों भरी झाड़ियों के कारण रेणुका के पैर लहूलुहान हो गए। वह धीरे-धीरे चलने लगी।

जमदग्नि ने पूछा—"रेणुका, ये तुम्हारे पैरों को क्या हो गया?" बस, रेणुका फूट-फूटकर रोने लगी। तलुए दिखाती हुई बोली—"देखो, धूप और कांटों ने मेरे पैरों का क्या हाल बना दिया?"

जमदग्नि क्रोध में बोले—"रेणुका, तुम चिंता न करो। मैं तपस्या से इस सूरज को भरपूर दंड दूंगा। इसका निकलना बंद कर दूंगा।"

पति-पत्नी की बातें कुछ दूरी पर खड़ा एक आदमी सुन रहा था। वह एकाएक दोनों के पास आकर खड़ा हो गया। उस भव्य आकृति को देख, दोनों सहम गए। उन्हें लगा, जैसे स्वयं सूर्य ही आकाश से उतरकर वहां आ गए हैं।

"तुम तपस्या से सूर्य को दंड दोगे? उसका निकलना बंद कर दोगे? माना, तुम्हारी तपस्या में बड़ा बल है। लेकिन क्या तपस्या को इस कार्य में लगाना चाहिए? सूर्य ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"—आगंतुक ने पूछा।

"क्या बिगाड़ा है? मेरी पत्नी के पैरों को देखो। तब आपको पता चलेगा।"—जमदग्नि ने कहा।

आगंतुक नीचे बैठ गया। उसने झोले से जड़ी-बूटी निकाली। उन्हें रेणुका के घावों पर लगाया। लेप करके पट्टी बांधी और उठ खड़ा हुआ।

हिसाब बराबर



एक कंजूस रईस था। वह गाना सुनने का शौकीन था। उसका एक मुनीम था। मुनीम बेहद चालाक और धूर्त था। वह रईस के इशारे पर ऐसी चालाकी करता कि रईस से पुरस्कार मिलने का वचन पाकर भी, गायकों को निराश ही लौटना पड़ता।

एक बार एक गायक रईस के पास आया। उसने रईस को अपने गाने सुनाए। गाने सुनकर रईस बहुत प्रसन्न हुआ। बोला—"वाह, क्या स्वर पाया है! सुनकर मन प्रसन्न हो गया। गाने इतने अच्छे हैं कि जितना भी इनाम दिया जाए, कम है।"

रईस ने मुनीम से कहा—"आज इनके गाने सुनकर हम बहुत प्रसन्न हुए। इन्हें इतना पुरस्कार दो कि इनकी तबीयत भी खुश हो जाए।"

Scanned with CamScanner

बोला—"पुत्री, अब जलन नहीं होगी।" पति-पत्नी शांत थे।

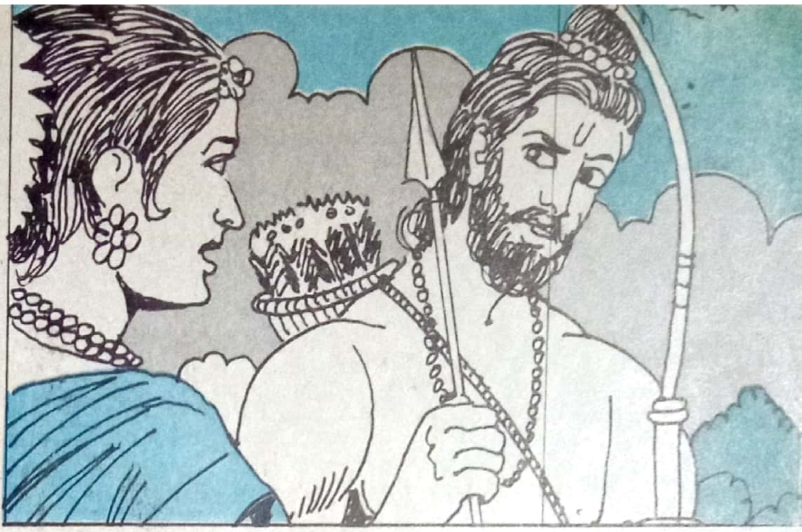
फिर आगंतुक मुसकराकर बोला—"सूर्य तपकर संसार को जीवन देता है। वह वनस्पतियां, अन्न आदि उत्पन्न करता है। वेद कहता है— सूर्य प्राणदाता है, दुःख देने वाला या प्राण लेने वाला नहीं।"

इसके बाद आगंतुक ऋषि ने अपने नेत्र सूरज की ओर उठाए और वेद सूक्त दोहराने लगे। सूर्य की स्तुति में यह सूक्त उन्हीं ने रचा था। सूक्त सुनकर जमदग्नि आश्चर्य से आगंतुक की ओर देखने लगे। फिर साहस करके पूछा—"देव, आपका परिचय?" "मुझे वशिष्ठ कहते हैं।"—पथिक ने सहज भाव से कहा। परिच्रय पाकर जमदग्नि और रेणुका वशिष्ठ के चरणों में लेट गए। बोले—"ब्रह्मर्षि, हम आपको पहचान नहीं पाए। हमसे गलती हुई, क्षमा करें।"

वशिष्ठ ने दोनों को उठाकर उनकी पीठ थपथपाई। बोले—"तुम में लगन है जमदग्नि। इस लगन को अच्छे कार्य में लगा दो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

"जो आज्ञा गुरुवर।"—जमदग्नि बोले।

वशिष्ठ बोले—"इस चिलचिलाती धूप में तुम्हारी पत्नी की तरह अन्य पथिक भी दुःख पाते होंगे। कुछ



ऐसी चीजें बनाओ, जिनसे पैर में तपन एवं कांटे न लगें और सिर भी गरमी से बच सकें।"

जमदग्नि कुछ सोचने लगे। तभी उनके माता-पिता आ गए। उन्होंने वशिष्ठ को प्रणाम किया। कहा—"आप हमारे आश्रम को भी पवित्र करें।"

वशिष्ठ बोले—"चलूंगा, जमदग्नि से कुछ कहा है। पहले उसका उत्तर पा लूं।"

तभी जमदग्नि बोले—"उपाय खोज लिया। मैं सिर को धूप से बचाने के लिए एक गोल छत्र और पैरों की रक्षा के लिए खड़ाऊं जैसे जूते बनाऊंगा। ये दोनों चीजें मानव की धूप और कांटों से रक्षा करेंगी।"

वशिष्ठ ने आशीर्वाद दिया। और संतुष्ट होकर चले गए।

गायक सोच रहा था—'आज भरपूर इनाम पाऊंगा।' वह खुशी-खुशी मुनीम के पास आया। बोला—"आपके मालिक ने कहा है, मुझे पुरस्कार दीजिए।"

मुनीम बोला—"मैं तुम्हें खुश करके ही भेजूंगा। बोलो, कितना इनाम चाहिए?"

"कम से कम एक हजार रुपए।"—गाने वाला उत्साह से बोला। मुनीम ने भी उसी उत्साह से कहा—"क्यों नहीं, क्यों नहीं! मैं तो कुछ और ही सोच रहा था।"

—"क्या सोच रहे थे?"

"जरा पास आओ। धीरे से कान में बताऊंगा।"—मुनीम ने कहा।

गवैया उसके पास आया। मुनीम ने उसके कान में कहा—"मैं चाहता था, तुम्हें एक नहीं, दो हजार रुपए दिए जाएं। क्यों, क्या यह ठीक नहीं रहेगा?"

सुनकर गवैया झूम उठा। बोला—"आप बड़े ही दयालु हैं। मैं आपकी बात सुनकर बहुत खुश हूं। जल्दी दीजिए रुपए। मजा आ गया।"

"कैसे रुपए, किस बात के रुपए? तुमने हमें क्या चीज दी, जिसके बदले में हम तुम्हें रुपए दें।"—मुनीम ने लहजा बदलते हुए कहा।

—"अरे, मैंने तुम्हारे मालिक को गाने सुनाकर खुश किया है।"

—"ठीक है, मैंने भी तुम्हें दो हजार देने की बात कहकर खुश कर दिया। हिसाब बराबर।" गवैया यह सुन चुपचाप घर लौट आया। —चन्द्रदत्त इन्दु

Scanned with CamScanner



खीर में जहर

—मधुमालती जैन

एक बार महर्षि अगस्त्य घूमते हुए जा रहे थे । रास्ते में उन्हें प्यास लगी । आगे एक कुआं था । उन्होंने कुएं में झांककर देखा । मगर अंधेरे के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा था । सहसा कुएं में से आवाज आई । कोई उनका नाम लेकर पुकार रहा था ।

सुनकर महर्षि को बहुत आश्चर्य हुआ । उन्होंने पूछा—"आप कौन हैं ? इस अंधेरे कुएं में क्या कर रहे हैं ? मेरा नाम कैसे जानते हैं ?"

उत्तर में आवाज आई—"महर्षि, हम आपके पूर्वज हैं । हम यहां कुएं में उलटे लटके यातना भोग रहे हैं, हमारी मुक्ति करो ।"

सुनकर अगस्त्य को हैरानी हुई कि उनके पिता एक महर्षि थे और उनके पूर्वज अभी भी अंधेरे कुएं में उलटे लटके यातना भोग रहे हैं । यह बात उनकी समझ में नहीं आई । उन्होंने पूछा—"आपकी मुक्ति का क्या उपाय है ?"

कुएं से आवाज आई—"अगस्त्य, तुम्हें घूमते-घूमते बहुत समय बीत गया है । तुम गृहस्थ जीवन का पालन करना भूल गए हो । अगर तुम हमें मुक्त करना चाहते हो, तो गृहस्थ जीवन आरंभ करो ।"

महर्षि ने सोचा— 'ये चाहे कोई भी हों, अगर मेरे कुछ करने से इनकी मुक्ति हो जाए, तो मुझे विवाह करना चाहिए ।' यह सोचकर महर्षि ने उनसे कहा—"मैं आश्वासन देता हूं कि शीघ्र ही आपकी इच्छा पूरी करूंगा ।" इतना कहते ही कुएं से फड़फड़ाहट की आवाज हुई ।

फिर वह आगे बढ़े । मन में विवाह का निश्चय किया । वह अपने योग्य, कन्या की खोज करते-करते विदर्भराज के दरबार में पहुंचे । राजा ने महर्षि का स्वागत किया और कहा—"आपके आगमन से मैं धन्य हुआ । मेरा राज्य पवित्र हो गया । कहिए, कैसे आना हुआ ?"

—"राजन, मैं आपसे कुछ मांगने आया हूं ।"

—"आज्ञा दीजिए, मुझसे जो भी बन पड़ेगा, जरूर करूंगा ।"

महर्षि ने कहा—"मैं आपकी बेटी लोपामुद्रा के रूप और गुणों की चर्चा सुनकर यहां आया हूं । वह मेरे योग्य कन्या है, इसलिए मेरा विवाह उसके साथ कर दीजिए ।"

यह सुनकर राजा परेशान हो उठा। वह सोचने लगे— 'अगस्त्य मेरी कन्या के लिए उपयुक्त वर हैं ।' मगर राजा ने यह भी सुन रखा था कि महर्षि के पांव में चक्र है । वह एक जगह नहीं बैठते । 'मेरी कन्या राजमहल में पली है । अगस्त्य के साथ जंगल में कैसे रह पाएगी ?'—राजा ने सोचा ।

राजा चिंता में पड़ गया। फिर भी उसने कहा—"आप मेरी अतिथिशाला में रात भर विश्राम कीजिए । इस विषय में मैं महारानी और अपनी पुत्री से विचार-विमर्श कर सुबह आपसे बात करूंगा ।"

अगस्त्य राजा की अतिथिशाला में ठहर गए । राजा ने महारानी से विवाह के बारे में बात की । रानी चिंतित हो उठी । दोनों ही महर्षि को अपना दामाद बनाने में हिचक रहे थे ।

अगले दिन दरबार लगा । महर्षि अगस्त्य, राजा के सामने उपस्थित हुए । उन्होंने कहा—"राजन, आपने विवाह के बारे में निर्णय ले लिया होगा । अब आप

Scanned with CamScanner

मुझे अपने निर्णय के बारे में बताएं।"

राजा ने कहा—"महर्षि, आप जैसा विद्वान मेरा दामाद बने, इससे बढ़कर मेरे लिए और खुशी क्या होगी। मगर आपके पास धन का अभाव है। बिना धन के सुख-साधन नहीं जुट सकते। अगर आप मेरी पुत्री से विवाह करना ही चाहते हैं, तो आप मुझे इतना धन लाकर दिखाएं, जिससे आपका आश्रम बन जाए। मेरी कन्या वहां सुख से रह सके।"

महर्षि यह सुनकर कुछ देर चुप रहे। फिर बोले—"आपने ठीक ही कहा। गृहस्थी के लिए धन भी जरूरी है। मैं उतना धन इकट्ठा करके ही आपके पास आऊंगा।" इतना कहकर महर्षि चले गए।

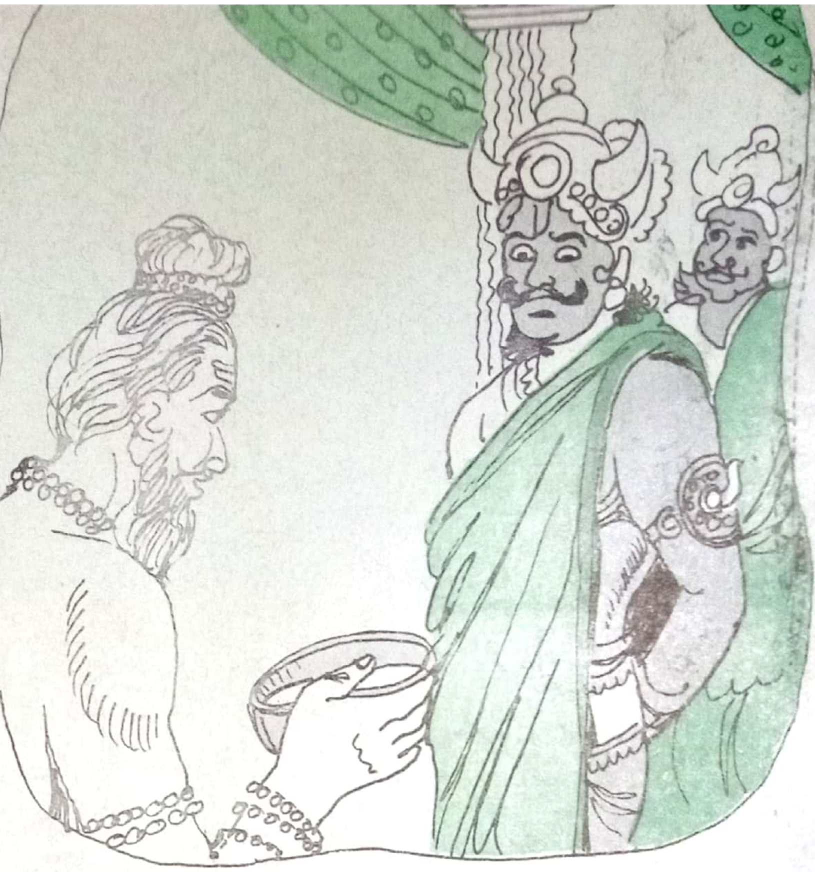
अगस्त्य के मित्र थे केकय नरेश। अगस्त्य को आशा थी कि केकय नरेश से मनचाहा धन मिल जाएगा। मगर उनकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। उन्होंने कहा—"महर्षि, दानवराज इल्वल बहुत धनवान है। अगर आप उससे कहें, तो वह आपको धन दे देगा।"

अगस्त्य दानवराज इल्वल के पास पहुंचे। अपनी बात कही। उनकी बात सुनकर दानवराज हंसा। बोला—"महर्षि, आप इसकी चिंता क्यों करते हैं? मैं तो आपको अपना पूरा राज्य दे सकता हूं। आप जैसे ऋषि कोई रोज-रोज थोड़े ही मांगने आते हैं।" उन्होंने दानवराज की बात सुनी और मुसकराने लगे।

दानवराज ने कहा—"आज रात आप मेरे अतिथि बनकर रहें, कल मैं आपको धन दे दूंगा।"

असल में दानवराज ऋषियों से चिढ़ता था। एक समय किसी ऋषि ने उसका अपमान कर दिया था। उसी दिन उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह ऋषियों का नामोनिशान मिटा देगा। उसका छोटा भाई धूर्त था। जो भी ऋषि आता, इल्वल मीठी-मीठी बात बनाकर उसे रात का मेहमान बनाता। फिर उसके भोजन में बेहोशी की दवा मिला देता था। छोटा भाई उसकी हत्या कर देता था।

इस बात को योग बल से अगस्त्य जान गए थे। भोजन में खीर दी गई। महर्षि ने उसे खा लिया। उन्होंने मंत्र-शक्ति से खीर हजम कर ली। दवा का



कोई असर उन पर न पड़ा। फिर वह अपने शयनकक्ष में आए। आधी रात का समय था। ठीक समय पर दानवराज ने गीदड़ की बोली बोलकर, अपने भाई को इशारा किया। लेकिन भाई नहीं आया। बहुत देर हो गई, तो दानवराज महर्षि के कमरे में गया। महर्षि ने खड़े होकर कहा—"अब तुम्हारा भाई कभी वापस नहीं आएगा।"

दानवराज को पता चल गया कि महर्षि ने उसके भाई को मार डाला है, तो वह थर-थर कांपने लगा। उनसे क्षमा याचना करने लगा। वह जानता था कि उसका भाई महर्षि को मारने की योजना बना रहा था, इसीलिए मारा गया।

अगस्त्य ने कहा—"दानवराज, तुमने एक ऋषि से असंतुष्ट होकर सैकड़ों ऋषियों को मार डाला, यह अच्छी बात नहीं है। तुमने अपनी भूल मान ली है, इसलिए छोड़ रहा हूं।"

दानवराज ने महर्षि को बहुत-सा धन दिया और सम्मान के साथ विदा किया। महर्षि ने राजा को वह दिखाया। राजा ने उनका विवाह अपनी बेटी से कर दिया। अब महर्षि घर-गृहस्थी के साथ-साथ जन कल्याण में लग गए थे।

Scanned with CamScanner

चटपट

□ पिता—एक तो पांच रुपए दे रहा हूं तुम्हें, फिर भी शोर मचा रहे हो ?
बेटा— लीजिए, मैं चुप हो गया । अब तो दस रुपए का नोट दे दीजिए ।

□ मां— श्याम बेटे, आज कुछ ऐसा करो कि घर में हल्ला-गुल्ला बिल्कुल न हो ।
बेटा— मां, मुझे कुछ रुपए दे दो, पिकनिक पर चला जाता हूं ।

□ एक राहगीर— भाई, देखकर चला करो । बेवजह तुमने मुझे टक्कर मार दी ।
दूसरा राहगीर— मैं तो देखकर ही चल रहा था । पर यह मालूम नहीं था कि आप भी मेरी ही तरह चलते हैं ।

□ चाट वाला— गोपाल, तुम मेरा उधार चुका दो । नहीं, तो तुम्हारे पिता जी से शिकायत कर दूंगा ।
गोपाल— शिकायत ही क्यों, रुपए भी उन्हीं से ले लेना ।

□ एक राहगीर— बहुत देर से मैं यहां गिरे पैसे ढूंढ़ रहा हूं, पर तुम यहां क्या कर रहे हो ?
दूसरा राहगीर— तुम्हारे यहां से जाने का इंतजार ।

□ एक यात्री— यह ड्राइवर इतनी तेज बस चला रहा है कि हमारे होश उड़ रहे हैं । पर कंडक्टर को देखो, कैसे मुसकरा रहा है ।
दूसरा यात्री— लगता है कि ड्राइवर और कंडक्टर दोनों ने ही जीवन बीमा करा रखा है ।

□ किसान— हुजूर ! मेरी गाय खो गई है । पता नहीं, कहां चली गई ?
पुलिस वाला— भाई, मुझे बताकर तो गई नहीं, फिर भी पता लगते ही तुम्हें बता दूंगा ।

□ रोगी— डाक्टर साहब, कहीं ये गोलियां खाने से पेट में दर्द न होने लग जाए ?
डाक्टर— चिंता न करो, इन गोलियों में एक गोली पेट दर्द की भी है ।

□ एक मित्र— भाई, तुम्हारी दूकान पर तो रोज नए-नए ग्राहक दिखाई देते हैं ?
दूसरा मित्र— पुराना ग्राहक तो भूलकर भी इधर कदम नहीं रखता ।

□ यात्री— रात भर होटल में नींद नहीं आई । मच्छर और खटमलों से परेशान हो गया ।
होटल मालिक— भाई साहब, इनकी बदौलत ही तो होटल की चौकीदारी के पैसे बचते हैं ।



Scanned with CamScanner

तेनालीराम २६६

पहचान



राजा कृष्णदेव राय परेशान थे। अचानक राजवैद्य की मृत्यु हो गई थी। राजा शीघ्र से शीघ्र किसी कुशल वैद्य को इस पद पर नियुक्त करना चाहते थे। दरबारियों में अपने अपने परिचित वैद्य को वहां लाने की जोड़-तोड़ चल रही थी।

एक दिन राजा ने परामर्श के लिए तेनालीराम को बुलाया। कुछ ही देर बातें हुई थीं कि मंत्री वहां आ गया। तेनालीराम अगले दिन दरबार के बाद महल में आने की बात कह कर चला गया।



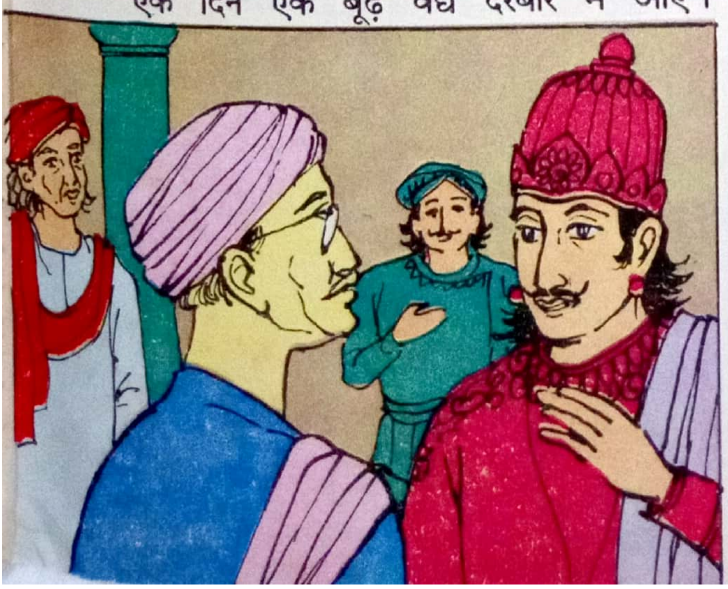
मगर अगले दिन तेनालीराम दरबार में आया ही नहीं। प्रतीक्षा कर राजा ने प्रतिहारी को भेजा। प्रतिहारी ने लौटकर बताया—"तेनालीराम तो अंतिम सांसें गिन रहा है। कह रहा है कि कल महाराज के यहां से भोजन करके क्या गया, मौत मोल ले आया।"

सारा दरबार सन्न। महाराज पर इतना बड़ा लांछन! राजा कृष्णदेव राय शांत रहे। दरबारियों के साथ तेनालीराम को देखने गए। वह आधी बेहोशी में पड़ा अटकी-अटकी सांसें ले रहा था। शरीर हल्दी जैसा पीला पड़ गया था।



दरबारियों की सहमति से राजा उसे महल में ले आए। एक-एक करके वे सारे वैद्य बुलाए गए, जिनके प्रस्ताव दरबारियों ने रखे थे। किंतु कोई भी तेनालीराम को ठीक तो क्या, उसकी बीमारी का पता भी न लगा सका। परेशान हो राजा ने घोषणा कराई— जो तेनालीराम को स्वस्थ कर देगा, राजवैद्य उसी को नियुक्त किया जाएगा। किंतु इस घोषणा का भी कोई लाभ न हुआ।

एक दिन एक बूढ़े वैद्य दरबार में आए। तेनालीराम को देखने की इच्छा प्रकट की। राजा दरबारियों सहित उन्हें महल में ले आए।



वैद्य जी ने तेनालीराम को देखा – जांचा। बोले—"इसे कोई बीमारी नहीं। शरीर पर हल्दी पोतकर बहाना कर रहा है।"

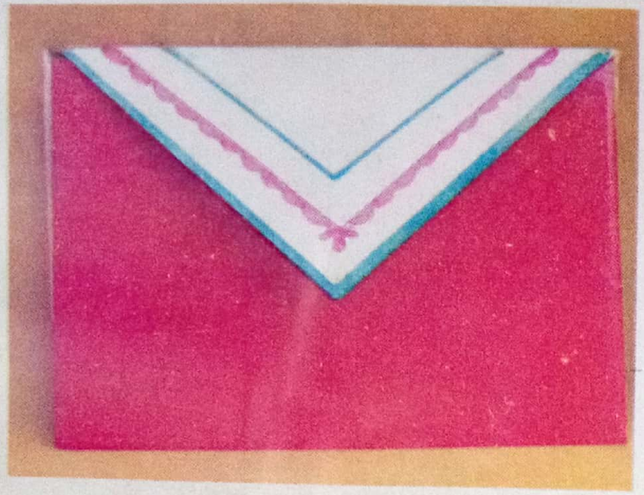
अचानक तेनालीराम उठ खड़ा हुआ। सब चकित रह गए। राजा बोले—"तेनालीराम, यह सब क्या है?"

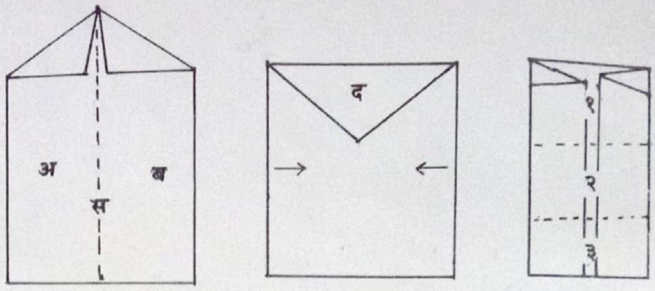
"असली वैद्य का चुनाव, महाराज। जो नब्ज देख कर असली बात का पता न लगा सके, वह कहां का वैद्य!"—तेनालीराम सिर झुका कर बोला। राजा मुसकरा उठे।

Scanned with CamScanner

नया कुछ बनाएं

—चित्रा गर्ग





रंगीन कागज से पर्स

१०"×७" के कागज को बीचों-बीच से मोड़कर निशान (स) बनाइए। उस निशान पर ऊपरी दोनों कोने जितने मुड़ सकें, मोड़ दीजिए। त्रिभुज (द) बन जाएगा।

अ और ब भाग के बाहरी सिरे निशान 'स' पर रखकर मोड़ दीजिए।

मुड़े कागज को तीन समान भागों १, २, ३ में बांटिए। ३ और २ भागों को मोड़िए। नम्बर ३ भाग को नंबर १ के खांचे में डाल दीजिए।

पर्स तैयार है। त्रिभुज को आगे मोड़कर पर्स पूरा कीजिए। ●

नाचने वाली चिड़िया

सामग्री : सफेद मोटा कागज ; लाल, पीले, हरे रंग की अबरी ; एक फुट लंबी मजबूत डोरी, फूल झाड़ू की ८" लंबी डंडी, गोंद आदि।

सफेद कागज से चिड़िया काटिए। चोंच पीली अबरी की, कलगी हरी और पंख लाल अबरी से काट कर चिपकाइए। लाल रंग की अबरी से आंख बनाइए। कई रंग की अबरी को बारीक काट कर पूंछ बनाइए।

सफेद कागज से ४" चौड़ी और ६" लंबी पट्टी काटिए। ४" वाले किनारे से उसे इस तरह रोल कीजिए कि १½" व्यास का गोल डंडा बन जाए। आखिरी सिरे पर गोंद लगाकर चिपका दीजिए। सूख जाए,तो सुए से उसके बीचों-बीच आरपार छेद कर दीजिए।

डंडे के दोनों सिरे बंद करने के लिए सफेद कागज के दो गोल टुकड़े काटिए। उनके बीचों-बीच भी सुए से छेद कर लीजिए।

झाड़ू की डंडी पर इतनी डोरी लपेटिए कि उसके दोनों सिरे ४-४ इंच शेष रहें। गोल डंडे के बीच में बने छेदों से धागे डाल कर डोरी का एक-एक सिरा

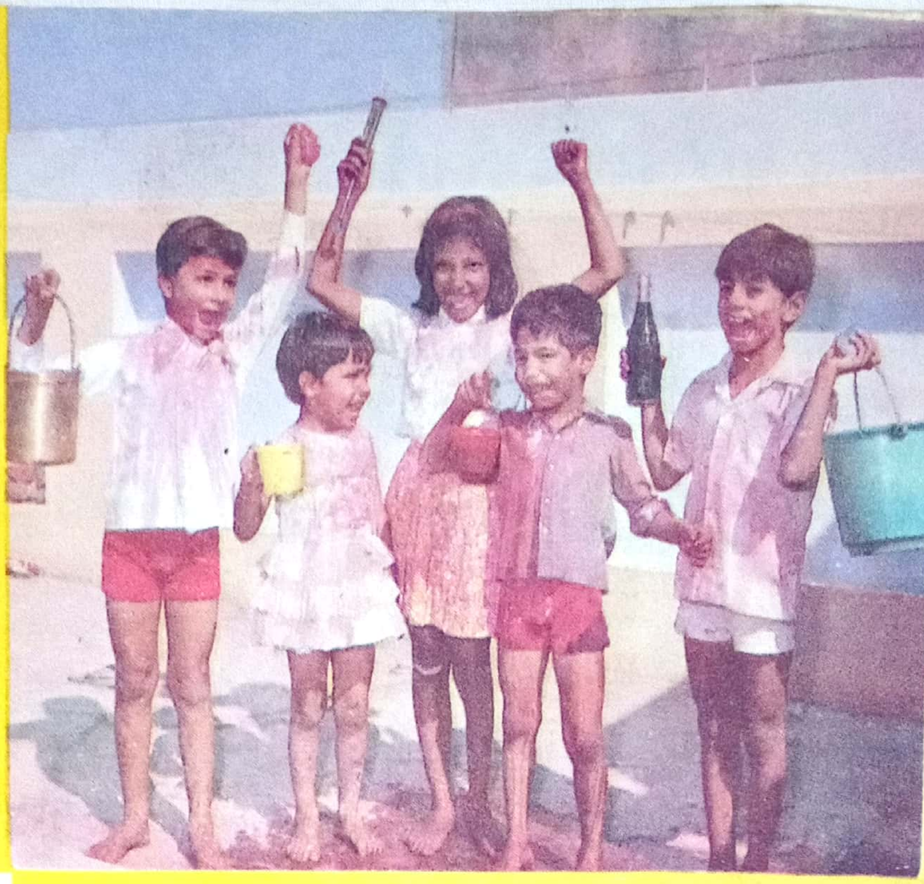


खींच लीजिए। सिरों पर गांठ लगा दीजिए। डोरी लिपटी डंडी डंडे के अंदर चली जाएगी।

डंडी का ऊपरी सिरा एक इंच तक बीच से चीरिए। एक गोल टुकड़ा उसमें डालकर चिरे हुए सिरों के बीच चिड़िया का धड़ फंसा दीजिए। सिरों को अबरी से चिपका दीजिए।

इसी प्रकार दूसरा गोल टुकड़ा गोल डंडे के नीचे चिपका कर थोड़ी डंडी छोड़कर शेष काट दीजिए। बारी-बारी से सिरे खींचने पर चिड़िया नाचने लगेगी।





आया रंगों का त्योहार

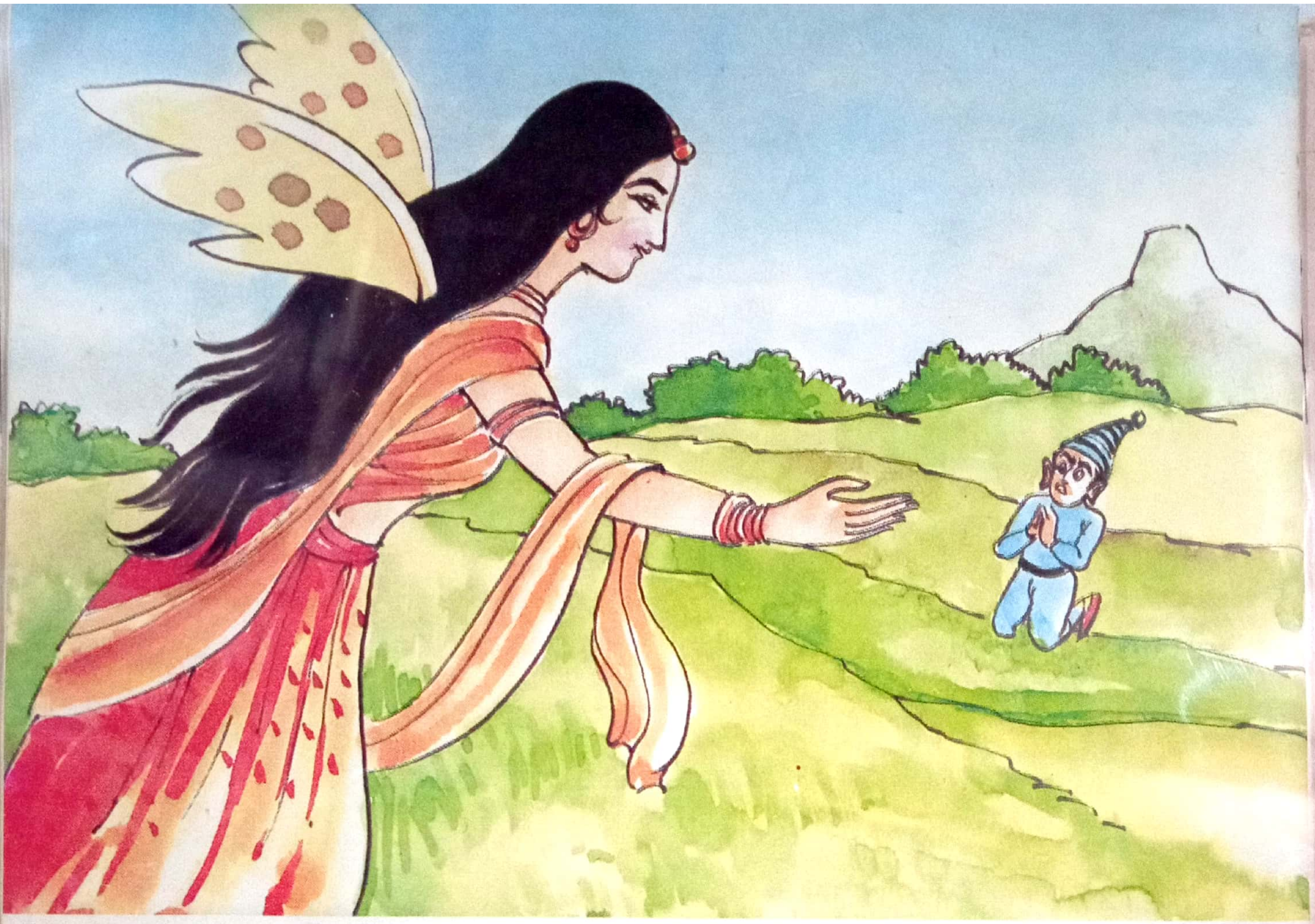




चित्र : विद्याव्रत, शेखर, ब्रह्मदेव, शमशेर अ. खान



Scanned with CamScanner



शैतान बौना

— सविता पंत

घने वन में एक पहाड़ी थी। उसके अंदर बौनों की बस्ती थी। वे दिन में दिखाई न देते ! रात को ही बाहर निकलते। हां, दिन के समय वहां से गुजरने वालों को कुछ विचित्र आवाजें अवश्य सुनाई देती थीं। आसपास सुंदर फूल उगते थे। रात के समय परियां वहां उतरती थीं। फूलों के गलीचे पर नृत्य करतीं। झरने के स्वच्छ जल में स्नान करतीं।

परियां आतीं, तो बौने उनका स्वागत करते। बौनों का राजा स्वयं उपहार भेंट करता। एक-दो बार परियां बौनों के नगर में भी हो आई थीं। प्रसन्न होकर परियों ने भी बौनों को कुछ उपहार दिए थे— जैसे कहीं भी अदृश्य होने की शक्ति। एक जादुई छड़ी, जिससे जमीन के अंदर अपने आप मार्ग बन जाता था।

एक दिन की बात, बौनों का राजा दरबार में बैठा था। परियों की चर्चा चलने लगी। एक बौने ने कहा— "परियों के पास तो न जाने कितना कुछ है। पर हमें उन्होंने केवल दो ही शक्तियां दी हैं।"

एक शैतान बौना राजा का मुंहलगा था। उसने कहा— "इस तरह हमें कुछ मिलने वाला नहीं। हमें चतुराई और छल से काम लेना चाहिए। पहाड़ी के अंदर एक चमकने वाली गुफा है। हम किसी बहाने से परियों को उसमें ले जाएं और फिर गुफा का दरवाजा बंद कर दें। इस तरह परियां कैद हो जाएंगी। वह बाहर निकलना चाहेंगी, तो उनसे विशेष शक्तियां मांग लेंगे।"

शैतान बौने की बात सुनकर सब सोच में पड़ गए। आखिर उसी की बात मानी गई। बौनों के राजा ने कहा— "परियों को चमकने वाली गुफा में कैसे

Scanned with CamScanner

लाओगे ?"

"वह आप मुझ पर छोड़ दीजिए।"— शैतान बौने ने कहा। और योजना बनाने में जुट गया। अगली रात परियां धरती पर उतरीं और फूलों के गलीचे पर नृत्य करने लगीं। कुछ देर बाद शैतान बौना उनके पास पहुंचा। हाथ जोड़कर बोला— "आज आपको चमकने वाली गुफा में चलना है।"

"वह क्यों ?"— परियों ने पूछा।

"वहां हमारे महाराज ने आपके लिए विशेष दावत का प्रबंध किया है। आज उनका जन्म दिन है।"

परियां मना करना चाहती थीं, पर राजा के जन्मदिन की बात सुनकर चुप रह गईं। शैतान बौना परियों को घुमाता-फिराता चमकने वाली गुफा में ले गया। गुफा खाली थी, पर खूब सजी हुई। परियों ने पूछा— "आपके राजा तथा बाकी बौने कहां हैं ?"

"मैं उन्हें अभी बुलाकर लाता हूं।"— कहकर शैतान बौना गुप्त रास्ते से बाहर निकल गया और फिर उसने गुफा का मुंह बंद कर दिया। परियां चमकने वाली गुफा में बंद हो गईं। इसके बाद शैतान बौना अपने राजा के पास गया। उन्हें बताया कि वह परियों को कैद कर आया है। राजा कुछ कह पाता, इससे पहले ही परियां, वहां खड़ी दिखाई दीं। उनके एक संकेत पर गुफा का दरवाजा खुल गया था।

परियों को देखकर शैतान बौना वहां से भाग गया। बौनों का राजा हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा, क्षमा मांगने लगा।

परियों ने राजा तथा दूसरे बौनों को क्षमा कर दिया और वापस चली गईं। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि अब वे उस पहाड़ी पर कभी नहीं आएंगी। उधर दुष्ट बौना भागकर जंगल में छिप गया। वह बहुत घबराया हुआ था और अपनी गलती पर पछता रहा था।

परियों की रानी ने ऊपर से ही छड़ी हिलाई, तो शैतान बौना गहरी नींद सो गया। कुछ देर बाद जब उसकी आंख खुली, तो वह सब कुछ भूल चुका था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कौन है, कहां रहता है ? बस, परेशान बौना जंगल में इधर से उधर भटकने लगा। रह-रहकर एक ही वाक्य उसके मुंह से निकलता— "मैं कौन हूं ?"

इस तरह भटकता-घूमता शैतान बौना जंगल से निकल, शहर में चला आया। उसका छोटा कद और विचित्र आकृति देख, लोगों ने उसे घेर लिया। बच्चे उसे पत्थर मारने लगे।

शैतान बौना बुरी तरह घायल हो गया। फिर जंगल की तरफ भागा। कुछ दिन इसी तरह बीते। आखिर एक दिन वह भटकता हुआ अपनी बस्ती में जा पहुंचा। वहां भी उसने यही कहा— "मैं कौन हूं ?"

दूसरे बौने उसे राजा के पास ले गए। राजा ने देखा तो सब समझ गया। उसने कहा—"तूने परियों को चमकने वाली गुफा में बंद किया था। इसी कारण यह दंड मिला है तुझे। तेरे कारण हमें भी लज्जित होना पड़ा।"

इतना सुनते ही शैतान बौने को पिछली सारी घटना याद आ गई। वह फूट-फूटकर रोने लगा। राजा से बोला— "महाराज, अब मुझे क्या करना चाहिए ?"

बौनों के राजा ने कहा— "परियां ही तुम्हें क्षमा करें, तो बात बन सकती है।"

शैतान बौना रात के समय फूलों के गलीचे के पास खड़ा हो गया और आकाश की ओर देखने लगा कि परियां कब नीचे उतरेंगी। उसे क्या पता था कि परियों ने वहां आना बंद कर दिया था।

शैतान बौना अब हर समय वहीं खड़ा रहता। उसने खाना-पीना भी त्याग दिया था। वह सचमुच शर्मिंदा था अपने किए पर। परियां आकाश में उड़तीं तो देखकर हंस पड़तीं, लेकिन नीचे न उतरतीं। इसी तरह कई दिन बीत गए। आखिर परी रानी को बौने पर तरस आ गया। वह स्वयं धरती पर उतरी। बौने ने परी रानी के पैर पकड़कर क्षमा मांगी। फिर कभी ऐसी शरारत न करने का वचन दिया। परी रानी ने उसे क्षमा कर दिया, पर बौनों के बार-बार कहने पर भी वहां आना शुरू नहीं किया।

फूलों का गलीचा मुरझा गया और झरना सूख गया। बाद में बौने भी न जाने कहां चले गए— यह सब एक शैतान और लालची बौने के कारण हुआ।

Scanned with CamScanner



आया करो अब

—मृगना बालानी

एक थे पीटर अंकल। बड़े अच्छे बढ़ई थे। लकड़ी तो जैसे उनके छूते ही मनमोहक रूप धारण कर लेती थी। लड़कों को उन्हें काम करते देखना बड़ा अच्छा लगता था, किंतु न जाने क्यों पीटर अंकल को उनसे बड़ी चिढ़ थी। लड़कों को दुकान के पास देखते ही वह चीखना शुरू कर देते। उन्हें मारने दौड़ते। इसलिए उन्हें देखते ही लड़के भाग छूटते थे। एक बार जाने कैसे टाम उनके हाथ लग गया। उसे अंकल पीटर ने इतने जोर से हिलाया कि उस बेचारे के छक्के छूट गए। बस, तब से लड़कों की हिम्मत ही न होती थी कि पीटर अंकल के होते हुए कोई उनकी दुकान के पास भी फटक जाए। हां, जब पीटर अंकल दोपहर को अंदर बैठकर भोजन कर रहे होते, तब जरूर सारे लड़के दुकान में घुसकर वहां पड़े लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े और कतरनें उठाकर भाग जाते। फिर उनमें शर्त लगती कि कौन सबसे ज्यादा टुकड़े उठाकर लाया है।

पीटर अंकल को यह सब बहुत बुरा लगता। वह नहीं चाहते थे कि कोई भी लड़का उनकी दुकान में पैर रखे। पर उनकी समझ में न आता कि वह क्या करें? आखिर एक दिन वह कुत्ते का एक पिल्ला उठा लाए। काले-सफेद रंग के उस पिल्ले का नाम उन्होंने टोबी रखा।

टोबी यूं तो बहुत ही प्यारा था, पर पीटर अंकल नहीं चाहते थे कि वह किसी लड़के के साथ दोस्ती करे। वह हमेशा उसे लड़कों पर भौंकने और काटने को ही उकसाते। जल्दी ही टोबी पिल्ले से एक बड़ा कुत्ता बन गया। अब तो लड़के भी दुकान के पास जाने से डरते। हां, रोज दोपहर को जब टोबी पीटर अंकल के लिए अखबार लेने बड़े बाजार जाता, तब लड़के दुकान के पास जा पाते थे। उन लड़कों में विलियम भी था।

विलियम को यूं तो पीटर अंकल को सताना पसंद न था, पर पीटर अंकल को बेवजह गुस्सा करते देख उसे भी बुरा लगता था। विलियम के पास एक इजन था, जिसमें पहिए लगे थे। जब भी विलियम अपनी मां के साथ खरीदारी करने जाता, इंजन को भी साथ ले जाता। खरीदारी का सारा सामान वह उस इंजन में भरकर ले आता। सबको विलियम और उसका इंजन देखने में बड़ा मजा आता। विलियम के दोस्त कहते कि अगर इस इंजन में डिब्बे भी लगे होते, तो कितना मजा आता! फिर सब साथ जाकर खरीदारी करते। विलियम भी सोचता कि इंजन के साथ डिब्बे होते, तो उसका इंजन कितना प्यारा लगता।

एक दिन विलियम की मां ने कहा—''विलियम बेटा, स्कूल खुलने वाले हैं। अभी तुम्हारा कोट लांड्री से धुलकर नहीं आया है। जाकर ले आओ।''

विलियम ने इंजन की रस्सी पकड़ी और जाने लगा।

मां बोली—''बेटा, एक कोट ही तो है। हाथ में ले आना।''

विलियम बोला—''मां, मेरा इंजन मेरे लिए पालतू कुत्ते जैसा ही है। उसे मेरे साथ घूमना अच्छा लगता है।''

मां विलियम की बात सुनकर मुसकरा दी। विलियम इंजन लेकर चल पड़ा। लांड्री से कोट लेकर वापस आ ही रहा था कि रास्ते में उसे टोबी आता दिखाई दिया।

टोबी के मुंह में अखबार लगा था। 'वाह, अखबार लेकर लौटता हुआ टोबी कितना प्यारा लग रहा है। कितना अच्छा होता, यदि यह हम सबका मित्र होता। पर अंकल . . . ' —विलियम सोचने लगा। अभी वह इन ख्यालों में ही खोया था कि

अचानक टोबी की चीत्कार और किसी गाड़ी के रुकने की जोरदार आवाज आई। विलियम ने देखा-टोबी गाड़ी के नीचे आ गया था और कराह रहा था। गाड़ी वाला गाड़ी से उतरकर वहां खड़े लोगों से पूछ रहा था— "यह किसका कुत्ता है ? इसका मालिक कौन है ? कहां रहता है ?"

सुनकर विलियम आगे आया और बोला—"टोबी पीटर अंकल का कुत्ता है। उनकी दुकान पास ही है।"

गाड़ी वाला बोला— "बेटा, तुम मुझे उनकी दुकान का पता बता दो। मैं उन्हें अभी लेकर आता हूं।"

विलियम ने गाड़ी वाले को अंकल पीटर की दुकान का पता बता दिया और स्वयं उसके लौटने तक वहीं रुक गया।

उधर टोबी बेचारा बहुत कराह रहा था। टक्कर होते समय अखबार उसके मुंह से निकलकर कुछ दूर जा गिरा था। टोबी किसी तरह घिसटता हुआ वहां तक गया और फिर से अखबार मुंह में दबाकर वहीं लेट गया।

इस बीच काफी देर हो गई। न गाड़ी वाला आया, न ही अंकल पीटर। टोबी दर्द से कराह रहा था। विलियम की समझ में न आया कि क्या करे। आखिर उससे न रहा गया। वह धीरे-धीरे टोबी के पास जाने लगा। साथ ही साथ बोलता जा रहा था—"टोबी, तुम मुझे काटोगे तो नहीं ? मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूं। मैं जानता हूं कि तुम्हें हम पर भौंकना और काटना सिखाया गया है, पर इस समय तुम्हें बहुत चोट लगी है।"

यूं बुदबुदाता हुआ विलियम टोबी को उठाकर अपने इंजन में कोट के ऊपर रखने लगा। विलियम को पास देख, टोबी ने भौंकने की कोशिश की, पर वह पीटर अंकल का अखबार नहीं छोड़ना चाहता था। इसी से मुंह न खोल सका।

विलियम ने उसे कोट पर लिटाया और इंजन खींचता हुआ सीधा पीटर अंकल की दुकान पर जा पहुंचा। विलियम को देखते ही अंकल पीटर बिगड़ उठे। उसे कसकर पकड़ते हुए बोले—"शैतान, चलो



आज तुम में से एक तो पकड़ा गया।"

इससे पहले कि अंकल कुछ करते, विलियम बोला— "अंकल, मुझे छोड़ दीजिए। टोबी को बहुत चोट लगी है।"

सुनते ही पीटर अंकल सकते में आ गए। बोले— "क्या ? क्या कहा तुमने ?"

विलियम बोला—"अंकल, टोबी गाड़ी के नीचे आ गया है। उसे बहुत चोट लगी है। वह बाहर मेरे इंजन में लेटा है।"

पीटर अंकल इससे ज्यादा न सुन सके। दौड़ते हुए इंजन के पास गए। टोबी को देखते ही समझ गए कि उसे तुरंत अस्पताल ले जाना बहुत जरूरी है। वह विलियम से बोले—"तुम कुछ देर मेरी दुकान पर रुको। मैं अभी टोबी को जानवरों के अस्पताल में दिखाकर आता हूं।"

अंकल के जाते ही विलियम के सारे दोस्त जो बाहर खड़े थे, अंदर आ गए। लकड़ी के टुकड़े और औजार उठाने लगे। विलियम ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। बोला—"अंकल पहले ही बहुत परेशान हैं। टोबी को बहुत चोट लगी है। हमें उन्हें और परेशान नहीं करना चाहिए।"

टाम हंसते हुए बोला—"जो हुआ, अच्छा हुआ। वह भी तो हमें बेवजह डांटा करते हैं।"

विलियम बोला— "हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए। टाम, अगर टोबी हम में से किसी एक का होता तो ? और फिलहाल तो अंकल अपनी दूकान मुझे सौंप गए हैं। इसलिए मैं तुम लोगों को यहां से एक कील भी नहीं ले जाने दूंगा।"

Scanned with CamScanner

इतने में सामने से पीटर अंकल आते दिखाई दिए। टोबी उनके साथ नहीं था। उन्हें देखकर सारे लड़के भाग गए। सिर्फ विलियम ही रह गया। उसने पूछा— "टोबी कहां हैं अंकल? कैसा है?"

अंकल बोले—"टोबी को बहुत गहरी चोटें आई हैं। उसे अभी कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ेगा। तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया बेटे। अगर तुम न होते . . .।" कहते-कहते अंकल का गला भर आया।

विलियम बोला—"कोई बात नहीं अंकल, यह तो मेरा फर्ज था।" कहकर विलियम घर की तरफ चल पड़ा।

घर पहुंचकर जब उसने मां को सारी बात बताई, तो मां ने कोट खराब होने पर कुछ न कहा।

अब तो विलियम अक्सर टोबी का हाल पूछने पीटर अंकल के पास जाने लगा। एक दिन जब वह अंकल के पास अपने इंजन के साथ पहुंचा, तो अंकल बहुत खुश नजर आ रहे थे। उसे देखते ही बोले—"कल टोबी घर आ जाएगा। तुम भले उससे मिलने शाम को आ जाना।" विलियम का इंजन देखकर फिर बोले— "तुम्हारा यह इंजन तो बहुत अच्छा है।"

दूसरे दिन शाम को जब विलियम पीटर अंकल की दुकान पर पहुंचा, तो टोबी ने पैर चाटकर उसका स्वागत किया। विलियम ने भी उसे खूब प्यार किया। अंकल बोले—"अंदर आओ विलियम। देखो, टोबी तुम्हें क्या भेंट दे रहा है?"

विलियम हैरत में आकर अंदर गया, तो देखा—इंजन के तीन डिब्बे, पहिए लगे हुए तैयार हैं। लाल, हरे और पीले रंग के डिब्बे बहुत सुंदर लग रहे थे। वह खुशी से फूल गया और बोला—"शुक्रिया अंकल।"

अंकल बोले—"विलियम बेटे, तुम और तुम्हारे दोस्त जब चाहो, दुकान पर आ सकते हो।"

तभी से पीटर अंकल की दुकान में हमेशा लड़के भरे रहने लगे। टोबी भी आजकल बहुत खुश नजर आता है, क्योंकि उसे इतने सारे दोस्त मिल गए हैं।

नन्ही कहानियां

—कुलदीप तलवार



होली के बहाने : होली की छुट्टियां होने वाली थीं। दो दिन पहले से ही स्कूल में होली का माहौल था। कक्षा आठ के सर ने कहा—"आज पढ़ाई नहीं होगी। सब लतीफे सुनाएंगे।" बच्चों ने लतीफे सुनाने शुरू किए। पतला-दुबला आदित्य सबसे पीछे बैठा था। जब उसका नम्बर आया, तो उसने गोल-मटोल शंकर की तरफ देखा। फिर मुंह लटकाकर बोला—"शंकर को देखकर सोचता हूं, क्या उसी परमात्मा ने मुझे बनाया, जिसने शंकर को बनाया!" क्लास कहकहों से गूंज उठी।

जूता तैरेगा : स्कूल में खेलते-खेलते रजनी का जूता टूट गया। मैडम से पूछकर वह स्कूल के बाहर आई। सामने ही मोची बैठता था। उसने जूते को अपने सामने रखे पानी के टब में बार-बार डुबोना शुरू कर दिया। रजनी को देर हो रही थी। मोची था कि बहुत समय ले रहा था। यह देखकर रजनी को गुस्सा आ गया। उसने कहा—"मैंने जूता मरम्मत के लिए दिया है, तैराकी सिखाने के लिए नहीं।"

तबला : पांचवीं कक्षा के बच्चों से अध्यापक ने पूछा—"तबला बजता है। क्या यह वाक्य ठीक है?" क्लास के सभी बच्चों ने हां में जवाब दिया। एक कोने में विधि बैठी हुई थी। उसने जवाब नहीं दिया। सर ने विधि से जवाब देने के लिए कहा। उसका उत्तर था—"यह वाक्य गलत है। तबले दो होते हैं, इसलिए वाक्य होना चाहिए—तबले बजते हैं।"

Scanned with CamScanner

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१.— पर कौन रख गया यह फूलों का हार ?
(घाट/ घास)

२. आप— की चिंता न करें अम्मां जी।
(काम/ दाम)

४. क्या कहा,— सात खा सकते हो ?
(पूए/ पूरे)

८. मुझे तो— का आशीर्वाद प्राप्त है बुआ।
(माता/मामा)

९. शायद मैना— रही है।
(गा/ सो)

११. इतनी जल्दी— मत जाओ प्यारे भाई !
(फूल/ भूल)

१२. इन फूलों की शोभा ही अजब है !

ऊपर से नीचे

३. आप तो— के शौकीन न थे ढब्बू जी।
(चाय/ चाट)

५. फिर बौनों ने— को घेर लिया।
(नाव/ नाना)

६. अरे, तुम तो— से डर गए।
(पूंछ/ रीछ)

७. पुराने जमाने में इसे पत्थर रगड़कर पैदा किया जाता था।

१०. एक प्रसिद्ध नदी।

काटिए

नंदन ज्ञान पहेली : २९१

नाम ____________________

उम्र ______ **पता** ____________________

____



नं. ज्ञा. प. २९१

बाल झडना ? असमय पकना ? डैंड्रफ होना ?

बालों की समस्या ?

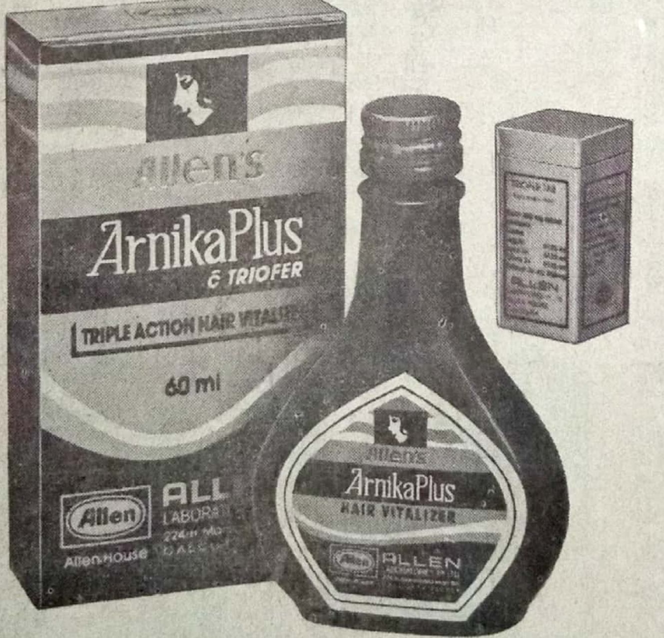
"यह बालोंकी बीमारी बिल्कुल नहीं । यह तो सिर्फ लक्षण हैं । बालोंकी समस्याके संपूर्ण समाधान के लिये बालोंकी जडों को लोशन लगाने के साथ खाने की औषधी भी आवश्यक है।"

--- डा. सरकार



तन्दुरुस्त और सुंदर बालों के लिये
उनकी जडोंको **आर्निकाप्लस** हेअर वाइटलायझर
लगाइये और बालों का टॉनिक - **ट्रायोफर** गोलियाँ खाइये ।
इस दोहरे उपचार से यह समस्याएँ हल होती है,
बालों की जडोंको नवजीवन मिलता है ।
जिसके परिणामस्वरुप बालों का सही बढाव
होता है-- बगैर किसी बुरे असर के !

दुनिया में पहली बार



बालों के परिपूर्ण उपचार के लिये
डा. सरकार का
आविष्कार -
तेलहीन हेयर लोशन
और खाने के लिये
होमियो गोलियाँ
- एक ही पैकेट में !

आर्निकाप्लस
और ट्रायोफर

ट्रिपल ऐक्शन हेयर वाइटलायझर

डॉ. सरकार ग्रुपका
होमियो विभाग
Allen
का उत्पादन

एलोपाथिक आयुर्वेदिक
और होमियोपाथिक
औषधियों के निर्माता
Jupiter Emars Allen
डा. सरकार ग्रुप

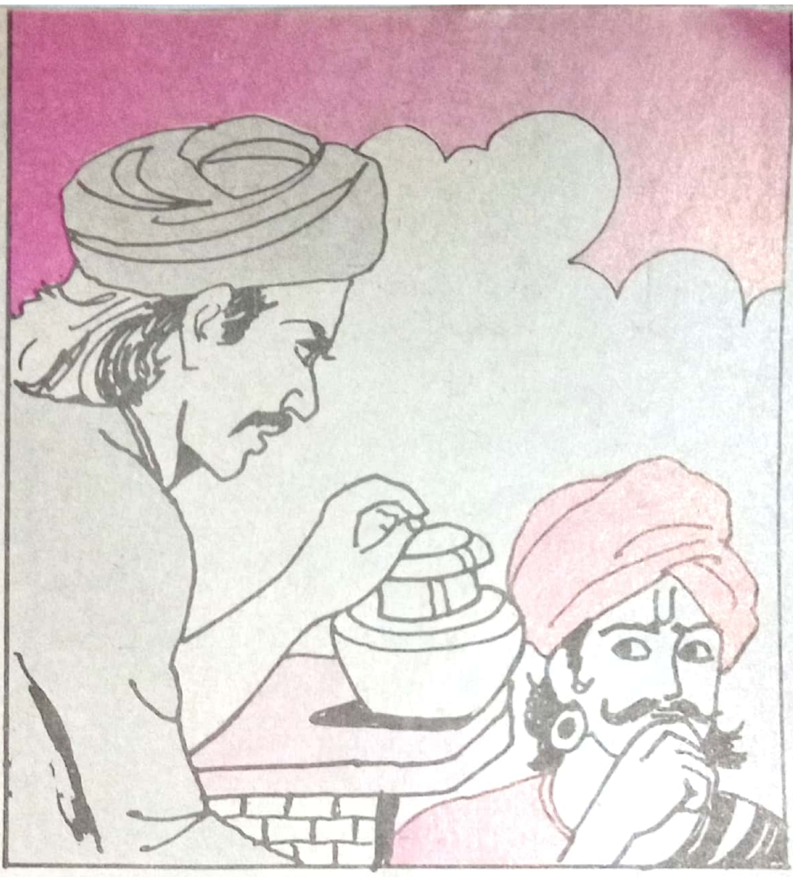
मार्केटिंग :
allen's
ऐलन्स इंडिया
मार्केटिंग प्रा. लि.
आर्निकाप्लस अपार्टमेंट, सीलडाह,
३५, ए.पी.सी. रोड, कलकत्ता-९
टेली.: ५९-४०५१

Allen's Ad India

Scanned with CamScanner

उसका पानी

—ऋतुकुमारी



एक थे राजा युगलकिशोर। उन्होंने अपने बेटे कुंवर नंदकिशोर की शादी में पूरे शहर को दावत दी थी। इस दावत में अमीर-गरीब, छोटे-बड़े का कोई भेदभाव नहीं रखा गया था। यही वजह थी कि भिश्ती से लेकर सर्वोच्च अधिकारी तक, सभी दावत में आमंत्रित थे।

जिस सलाहकार को दावत का जिम्मा सौंपा गया था, उसने एक दिन राजा युगलकिशोर से आकर कहा—"महाराज, बब्बर के नजदीक एक प्याऊ है। वहां का पंडित दावत में आने के लिए कतई तैयार नहीं है।"

"ऐसा क्यों? क्या कहा पंडित ने?"—राजा ने सवाल किया।

सलाहकार थोड़ा ठिठक कर बोला—"महाराज, जब मैंने उसे निमंत्रण दिया तो उसने कहा— क्या राजा ने मेरी प्याऊ पर आज तक कभी पानी पिया है जो मैं दावत में आऊं?"

राजा युगलकिशोर थोड़ी देर तक कुछ सोचते रहे। तभी सलाहकार ने फिर कहा—"महाराज, आदेश दें तो सिपाहियों को भेजकर उसे जबरदस्ती बुलवा लिया जाए।"

"नहीं, हरगिज नहीं!"—राजा ने आंखें तरेरकर सलाहकार की ओर देखते हुए कहा—"मैं वहां खुद जाऊंगा।"

राजा युगलकिशोर ने सादी पोशाक पहनी। वह अकेले ही प्याऊ पर जा पहुंचे। अन्य लोगों की भांति उन्होंने पंडित के हाथ से पानी पिया।

पानी पीकर राजा ने रूमाल से मुंह पोंछा। फिर हाथ जोड़कर पंडित से कहा—"पंडित जी, अब तो आपकी शिकायत दूर हो गई न!"

"मेरी शिकायत, कैसी शिकायत? कौन हैं आप?"—पंडित ने अचरज से कई सवाल एक साथ पूछ डाले।

राजा ने समझाते हुए कहा—"पंडित जी, आपको शिकायत थी न, कि आज तक मैंने आपकी प्याऊ का पानी नहीं पिया।"

"तो क्या आप ही राजा साहब हैं?"—पंडित ने घबराकर पूछा।

"जी हां!" राजा ने मुसकराते हुए कहा—"मैं ही युगलकिशोर हूं।"

"मुझसे बड़ी गलती हो गई, महाराज। मेरी वजह से आपको कष्ट उठाना पड़ा है।"—पंडित जी ने हाथ जोड़कर राजा से कहा।

—"नहीं-नहीं। गलती आपसे कहां हुई। मैं तो आपके स्वाभिमान की दाद देता हूं। अब आपको बेटे की शादी की दावत में फिर निमंत्रित करता हूं। आएंगे न!"

"जरूर आऊंगा महाराज। धन्य हैं आप, जो गरीब-अमीर और छोटे-बड़े का भेद नहीं रखते। मुझ जैसे अदना आदमी से भी मिलते हैं। सचमुच आप महान हैं।" पंडित ने गद्‌गद् स्वर में कहा।

राजा युगलकिशोर ने पंडित की पीठ थपथपाई। "राजा तो प्रजा का सेवक होता हैं पंडित जी। जो सबका ख्याल न रखे, वह राजा कैसा?"—कहते हुए राजा युगलकिशोर लौट गए। ●

Scanned with CamScanner



पुरस्कृत चित्र

विचित्रा कर्मकार, द्वारा श्री विमलेन्दु कर्मकार, एच-२६, (एच. आई. जी.-III), श्रीरामपुर हाउसिंग एस्टेट, रिसड़ा, हुगली-७१२२४८

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे—नीशू पूनिया, मेरठ; अभयकुमार, बोकारो स्टील सिटी; सपना शुक्ला, जबलपुर; रचिता मरवाह, बम्बई; मास्टर रचित खोसला, नई दिल्ली।

शीर्षक बताइए

सुर मिला लो, गा लो। इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ मार्च '९३ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : मई '९३ अंक



Scanned with CamScanner



बंटी पिंटू विनीत बृजेश निरांत

पत्र मिला

अंक में 'अजब नगर', 'तीन में खोट' तथा 'पहला भाई' कहानियां बहुत मनोरंजक लगीं। इस वर्ष के दीवार कैलेंडर में श्रीकृष्ण राधा का चित्र भी अच्छा लगा।

—धर्मप्रकाश सिंहल, हिंडौन सिटी

'नंदन' बाल जगत के लिए अनमोल रत्न है। जंतर-मंतर का एलबम अत्यंत मनोहर है। 'चुप-छिप' कहानी हम बच्चों को साहस एवं वीरता की प्रेरणा देती है।

—आर्यकुमार दास, सकरी (बिहार)

जनवरी अंक बहुत रोचक था। नंदन कैलेंडर तथा जंतर-मंतर की एलबम बहुत अच्छे लगे। 'चीटू-नीटू', 'तेनालीराम' के तो कहने ही क्या।

—गुलाबसिंह, पहाड़ी शरीफ (आ. प्र.)

कई मित्रों के जन्म-दिवस पर 'नंदन' भेंट देने पर उन्होंने वापस लौटा दिए। मैंने कारण जानना चाहा तो वे बोले कि 'नंदन' तो हम बहुत दिनों से खरीदते हैं क्योंकि यह हमारी प्रिय पत्रिका है। इस महंगाई के युग में 'नंदन' मुफ्त में ही हरे-भरे पहाड़ों, रमणीक व दर्शनीय स्थानों की सैर करा देती है।

—अशोक वालिया, पाली मारवाड़ (राज.)

'अजब नगर', 'मेरा उपहार' तथा 'कंधे पर चिड़िया' श्रेष्ठ कहानियां थीं। यह पढ़कर चकित रह गया कि 'नंदन' के तेइस लाख, चौरानवे हजार पाठक हैं।

—सौरभ कात्याल, चंडीगढ़

मेरे पास इतनी अधिक 'नंदन' हैं कि इनसे गर्मी की छुट्टियों में लाइब्रेरी खोलना चाहता हूं।

—सुधीश राय, बिलासपुर

छह वर्षों से 'नंदन' का पाठक हूं। दूसरी पत्रिकाएं भी पढ़ता हूं। मगर सबसे अच्छी, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक पत्रिका 'नंदन' ही लगती है।

—राजेन्द्रकुमार लाड़ेकर, राउरकेला (उड़ीसा)

सचमुच 'नंदन' विश्व की एक नम्बर बाल पत्रिका है। जनवरी अंक इतने सारे उपहार लाया। आप सबको धन्यवाद।

—गीत कुमार, बंशीपुरदाहा (बिहार)

साल का पहला 'नंदन' मजेदार लगा। कहानियां, कविताएं और चित्रकथाएं खूब अच्छी लगीं।

—विकास त्यागी, स्याना (उ. प्र.)

नए साल के पहले अंक में 'खेल और खिलाड़ी' अच्छा लगा। 'नंदन' पढ़ते-पढ़ते समय कैसे बीत जाता है, पता ही नहीं चलता।

—संदीप सिंहल, फरीदाबाद

मैंने कक्षा चार में पहली बार 'नंदन' पढ़ी। इसकी प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। इसे पढ़ने से मेरी हिंदी सुधर गई।

—विवेक नौटियाल, देहरादून

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : दिनेशकुमार जोशी, बसवा (राज.); लीना परमार, खारुआकलां (म. प्र.); बसंतकुमार, बुंडू (बिहार)।

आगामी अंक अप्रैल '९३

- एलबम में ज्ञान की देवी सरस्वती का फ्रेम कराने योग्य बहुरंगा चित्र
- **देश-देश के बच्चे—दो पृष्ठों में बहुरंगी छवियां**
- चैने बदल गया—अमीर बाप का बेटा हार्वे चैने कैसे बिगड़ा और टक्करें खा-खाकर उसे क्या मिला? भारत में जन्मे अंग्रेजी के लेखक रुडयार्ड किपलिंग की जानी-मानी कृति 'कैप्टंस करेजियस' का सार-विश्व की महान कृतियों में
- **दो अनूठी चित्र कथाएं तेनालीराम, चीटू-नीटू, प्रतियोगिताएं।**
- एक से बढ़कर एक कहानियां

मई अंक : प्राचीन कथा विशेषांक : जब छुट्टियां होंगी

Scanned with CamScanner

नई पुस्तकें

(१) आओ चुग लें मोती
(२) दुनिया एक कुटुम्ब
(३) मीठे हैं सारे त्योहार

कवि : शम्भूप्रसाद श्रीवास्तव; प्रकाशक : आशु प्रकाशन, ५१ करनपुर प्रयाग स्टेशन, इलाहाबाद-२; मूल्य (प्रत्येक): दस रुपए; तीसरी पुस्तक : चौदह रुपए ।

आओ चुग लें मोती—इसमें छह लम्बी कविताएं हैं । इन्हें कवि ने सांस्कृतिक ज्ञान-गीत कहा है । चार वेद, हमारे उपनिषद, अठारह पुराण, रामायण, गीता और महाभारत के बारे में पद्य कथाएं हैं । इन प्राचीन ग्रंथों की रचना कैसे हुई, इनमें क्या है—इसकी जानकारी सहज रूप से पाठक को मिल जाती है । ऐसी पुस्तक हर बालक को दी जानी चाहिए । इससे अपनी संस्कृति से वे जुड़ेंगे ।

दुनिया एक कुटुम्ब—एकता के दस गीत पुस्तक में हैं । धर्म, ईश्वर, मां, पिता, गुरु, एक कामना, एक प्रार्थना, सौ बरसों तक—जैसे शीर्षकों के गीत हैं । मां है केवल मां-गीत सबसे सुंदर है ।

मीठे हैं सारे त्योहार—पुस्तक में बीस गीत हैं । अलग-अलग त्योहारों के बारे में बताते हैं । बिहू, गणेश उत्सव, ओणम, बाल दिवस जैसे त्योहारों पर भी कवि ने कलम उठाई है । भाषा सरल है ।

आओ बच्चो सैर करें (गाजियाबाद से जम्मू तवी तक)—लेखक : शमशेर अ. खान; प्रकाशक : मिनहाज प्रकाशन, आर २/११४ नया राजनगर, गाजियाबाद; मूल्य : पंद्रह रुपए ।

बच्चों के लिए यात्रा साहित्य बहुत कम छपा है । पुस्तक में बालक गोलू अपने पापा के साथ गाजियाबाद से जम्मू तवी तक की सैर करता है । बीच में जो-जो शहर पड़ते हैं, उनकी रोचक जानकारी भी दी गई है । जो गोलू नहीं देख पाता, उसके बारे में अन्य यात्री उसे बता देते हैं । पुस्तक पढ़नी शुरू कर दें तो अंत तक पढ़कर ही छोड़ सकते हैं । छपाई भी अच्छी है ।

अदल-बदल

—वीणा भारद्वाज

नेपाल के एक छोटे-से गांव का नाम था भवानीपुर ।

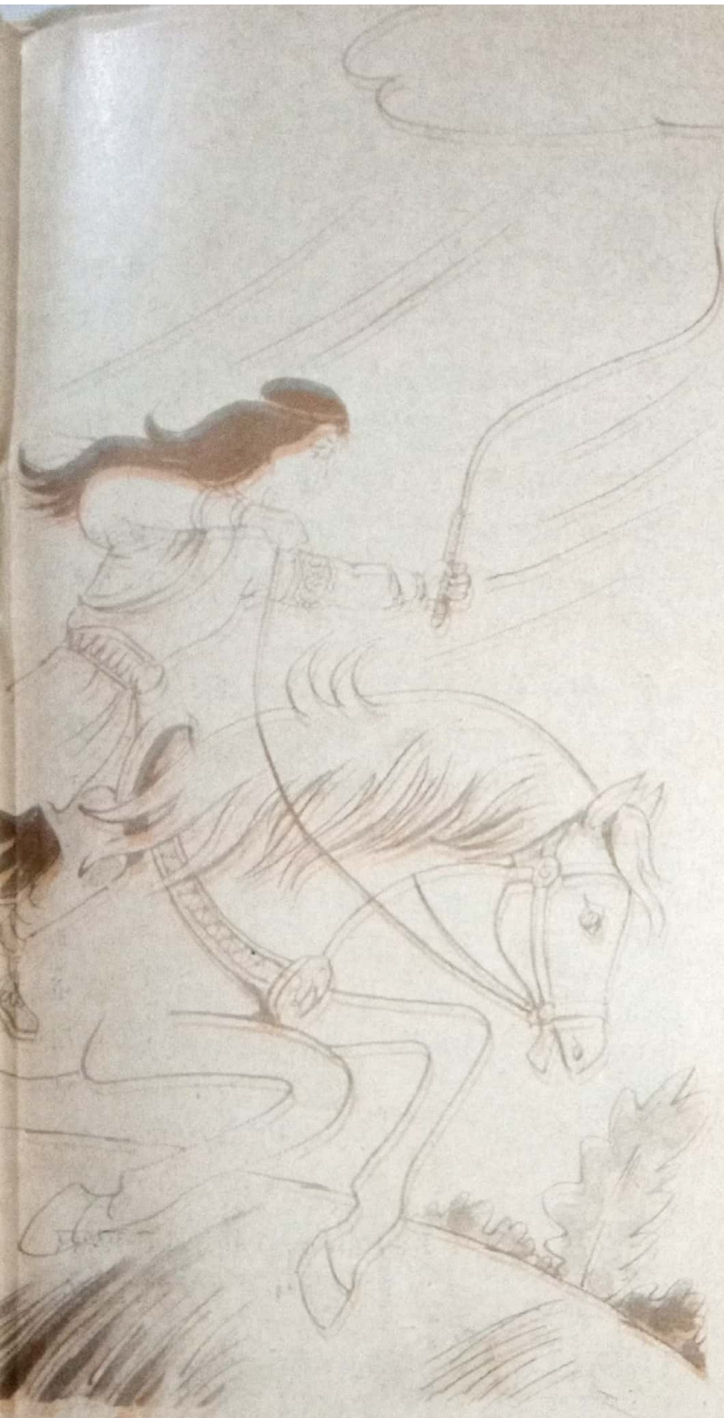
वहां एक गरीब दंपति अपने नन्हे बेटे शेरा के साथ रहता था । दो जून का खाना बड़ी मेहनत के बाद जुट पाता था । मगर पति-पत्नी अपनी इस छोटी-सी दुनिया में खुशहाल थे । शेरा बड़ा होकर अब शेरसिंह थापा बन गया । जैसा नाम, वैसा ही कलेजा । बहादुरी में दूर-दूर तक विख्यात । बूढ़े मां-बाप के लिए वही एकमात्र सहारा था । बड़ी लगन से खेती-बाड़ी करता और मां-बाप की सेवा में लगा रहता । बूढ़े मां-बाप की बस यही इच्छा थी कि उनका बेटा भी शादी करके घर बसा ले, लेकिन शेरसिंह राजी नहीं हो रहा था । उसे तो ऐसी लड़की की तलाश थी, जो खूब बहादुर और होशियार हो ।

उसी क्षेत्र में एक बहुत धनी जमींदार भी था, जो प्रजा पर कहर ढाता रहता था । उसकी बेटी रत्ना भी बड़ी हो चुकी थी और पिता का जमींदारी के काम में हाथ बंटाती थी । लगान वसूलने के समय वह घोड़े पर बैठ दूर-दूर के गांवों में जाया करती थी । शेरा भी थोड़ा-बहुत लगान देता था ।

एक बार ऐसा हुआ कि उस तराई क्षेत्र में भयंकर अकाल पड़ा । लोग भूख-प्यास से छटपटाने लगे, पशुओं के लिए चारा नहीं रहा । उनके मरने से क्षेत्र में महामारी फैल गई । जीने का कोई भी सहारा नजर नहीं आ रहा था । तभी ऊपर से जमींदार ने लगान वसूली की घोषणा कर दी । जिनके पास खाने को कुछ नहीं था, वे लगान कहां से देते? तब चाबुकों की मार सहनी पड़ती । रत्ना भी जैसे निर्दयी हो गई थी । उसकी क्रूरता का निशाना गरीब और असहाय लोग बन रहे थे । शेरसिंह ने रत्ना को सबक सिखाने की ठान ली ।

एक दिन घूमते-घूमते रत्ना अपने अंगरक्षकों के साथ शेरा के गांव में पहुंच गई । शेरसिंह ने लगान देने से साफ इंकार कर दिया । तब क्रोधित रत्ना ने शेरसिंह के हाथ-पैर बंधवा दिए और अपने घोड़े के पीछे उसे

Scanned with CamScanner



घसीटते हुए गांव से निकल गई।

शेरसिंह का पूरा शरीर लहूलुहान हो चुका था, लेकिन फौलादी जिस्म में अभी भी जोश और साहस भरा था। गांव के बाहर निकलते ही उसने जोर की छलांग लगाई और घोड़े के सामने आ खड़ा हुआ। अगले ही क्षण वह रत्ना के पीछे घोड़े पर सवार था। उसने जोर से एड़ लगाई और घोड़ा तेजी से दौड़ पड़ा। अंगरक्षक काफी पीछे छूट चुके थे। शेरा रत्ना के साथ घने जंगल में आ गया। वहीं एक विशाल पेड़ के नीचे उसने घोड़ा रोका। रत्ना को पेड़ के तने के साथ बांध दिया और फिर पूछा—"अब तुम मेरी दया पर हो। बताओ, तुम्हारे साथ भी वैसा ही व्यवहार करूं, ताकि तुम्हें पता चल सके कि ऐसी सजा भुगतने में कैसी लगती है?"

बेचारी रत्ना क्रोध और भय से छटपटा उठी। तभी घनी डालियों के पीछे-से सरकता हुआ एक विशाल अजगर नीचे पहुंचा और फुफकारते हुए रत्ना के शरीर को जकड़ लिया। अजगर के लिपटने से उसके शरीर की पूरी हड्डियां जैसे चरमरा उठीं। लेकिन अगले ही क्षण अजगर का सिर उसके धड़ से अलग जा गिरा। शेरसिंह ने उसका काम तमाम कर दिया था। रत्ना शेरा की दया और दिलेरी पर मुग्ध हो उठी। बहादुर तो वह स्वयं भी थी, लेकिन शेरा जैसे बहादुर और दयावान व्यक्ति को वह पहली बार देख रही थी।

उसने शेरा से पूछा—"तुम जैसे बहादुर दुनिया में बहुत कम होते हैं, जिनके दिल में दुश्मन के लिए भी दया हो। मांगो, तुम क्या मांगते हो?"

शेरा ने ठहाका लगाते हुए कहा—"तुमको तो मैंने जीवन दान दिया है। तुम मुझे क्या दे सकती हो भला! हां, अगर देना ही है तो गरीबों को अभय दान दो। लगान माफ कर दो तथा उनकी भलाई के लिए कुछ करो।"

रत्ना को पहली बार अपने किये कर्मों पर पछतावा हुआ। उसका दिल भर आया। शेरसिंह के प्रति उसके मन में श्रद्धा और प्रेम उमड़ पड़ा। उसने मन ही मन शेरसिंह की प्रशंसा की। अगले ही क्षण शेरसिंह ने रत्ना को बंधन से मुक्त कर दिया। घोड़े पर बैठाकर उसके महलनुमा घर तक छोड़ आया।

दूसरे दिन सुबह-सुबह जमींदार के सिपाही शेरसिंह को लेने आ पहुंचे। उसकी मां तो डर के मारे बेहाल थी, मगर शेरसिंह निडर होकर जमींदार के घर की ओर चल पड़ा। वह चकित हो उठा, जब उसने देखा कि स्वयं रत्ना घर के द्वार पर फूल माला लिए उसके स्वागत को खड़ी थी। सम्मान के साथ शेरा को जमींदार के पास ले जाया गया। रत्ना से उसका विवाह हुआ। अब वह उस क्षेत्र का जमींदार बन गया। उसने अपनी मां और पिता को भी वहां बुलवा लिया और रत्ना के साथ खुशी से रहने लगा। ●

Scanned with CamScanner

कंगन गवाह

—उमेश प्रसाद सिंह

पुरानी कहानी है। उन दिनों सौराष्ट्र का नवाब था रहमत अली। प्रजा के सुख-दुःख का बहुत ध्यान रखता था। उसके न्यायपूर्ण शासन की चर्चा दूर-दूर तक पहुंची हुई थी।

एक बार नवाब के दरबार में विचित्र मुकदमा पेश हुआ। एक ओर एक विधवा थी और दूसरी तरफ मायाराम नामक व्यक्ति। कुछ महीने पहले महिला बदरी-केदार की यात्रा पर गई थी। जाने से पहले अपना सोने का एक कड़ा पड़ोसी मायाराम को पिटारी में रखकर धरोहर के रूप में सौंप गई।

उन दिनों तीर्थयात्रा करना कठिन था। यातायात की सुविधाएं नहीं थीं। लोग पैदल ही जाते थे। मार्ग में उन्हें तरह-तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। अनेक तीर्थयात्री तो बीच में दम तोड़ देते थे।

महिला तीर्थों के दर्शन करने के बाद सकुशल लौट आई। घर में घुसने से पहले उसे मायाराम खड़ा दिखाई दिया। उसने नमस्कार किया। तीर्थों से लाया प्रसाद दिया। अब मायाराम को उसकी पिटारी का ध्यान आया। उसने पिटारी निकालकर देखी, तो उसमें एक कड़ा था।

मायाराम का मन परेशान हो उठा। उसे लगा कि पिटारी में अवश्य दो कड़े रहे होंगे। क्योंकि जैसे दो बुंदे, दो पायल, उसी तरह दो कड़े। उसने बहुत तलाश किया, पर दूसरा कड़ा न मिला। वह सोचता रहा—'मेरी असावधानी से ही यह गड़बड़ हुई। अब मैं उस भली औरत से क्या कहूंगा?'

मायाराम तुरंत कड़े को लेकर अपने सुनार मित्र के पास गया और उससे हूबहू वैसा ही दूसरा कड़ा तुरंत बनाकर देने को कहा। इस बीच वह ईश्वर से मनाता रहा कि कहीं वह महिला अपनी धरोहर वापस लेने न आ जाए।

सुनार ने अगले दिन नया कड़ा बनाकर दे दिया। मायाराम ने दोनों कड़े संभालकर पिटारी में रख दिए। जब महिला आई तो उसे पिटारी सौंप दी। महिला ने पिटारी में दो कड़े देखे, तो चौंक उठी। बोली—"यह कैसी बात! मैं तो आपको एक ही कड़ा देकर गई थी। फिर आप दो कड़े क्यों लौटा रहे हैं?"

मायाराम ने कहा—"नहीं, पिटारी में दो ही कड़े थे।" देर तक वादविवाद चलता रहा। दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे। महिला दूसरा कड़ा लेने को तैयार नहीं थी, मायाराम देने पर अड़ा था। इसीलिए मामला नवाब के मुख्य काजी के सामने पेश हुआ।

काजी ने मामले को ध्यान से सुना। औरत से कहा कि वह कड़ा ले ले। पर वह तैयार न हुई। उसने कहा—"मैं तीर्थयात्रा से लौटी हूं। यह अधर्म कभी न करूंगी।"

आखिर सोने का कड़ा राजकोष में जमा कर लिया गया। काजी ने दोनों से अगले दिन आने को कहा। शाम को काजी नवाब के पास गया। वहां उस मामले के बारे में बताया। सुनकर रहमत अली हैरान रह गया। उसने कहा—"कल मुकदमे का फैसला मैं करूंगा।"

अगले दिन काजी के स्थान पर नवाब रहमत अली स्वयं बैठा था। उसने दोनों से पूरी बात सुनी, फिर महिला से पूछा—"तुम क्या करती हो?" वह बोली—"मैं घरों में बरतन मांजती हूं। सफाई तथा पानी भरने का काम करती हूं।"

नवाब ने कहा—"आज से तुम यह काम नहीं करोगी। तुम्हारा सारा खर्च खजाने से दिया जाएगा।" फिर मायाराम से कहा—"शहर के बीचोंबीच बना पुराना महल तुम्हें सौंपता हूं। वहां एक बड़ा मंदिर बनवाओ। जितना भी खर्च लगेगा, सब खजाने से दिया जाएगा।"

बाद में मायाराम ने वहां एक भव्य मंदिर बनवाया। मंदिर आज भी सौराष्ट्र के मणावदर नामक स्थान पर खड़ा है। यह राम मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। ●

Scanned with CamScanner

[illegible] बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर के दरवाजे में ऊपरी फ्रेम नहीं है।
२. उसके पास का चित्र बिना कील और डोरी के है।
३. बातें करती लड़की का गाउन अधिक खुला है।
४. बालटी का हैंडिल काला है।
५. सफाई करती महिला के बालों में लगा पिन सीधा है।
६. उसकी शमीज लम्बी है।
७. फर्श पर पानी अधिक है।
८. दरवाजे पर फ्रेम बना है।
९. उसमें से झांकते व्यक्ति के बाल सफेद हैं।
१०. टेलीफोन के ऊपर टंगा चार्ट कम लम्बा है।

शीर्षक बताइए



परिणाम

ढेर सारे शीर्षक आए। जनवरी '९३ में छपे चित्र पर पुरस्कार के लिए ये शीर्षक चुने गए।

सोच रहा हूं एक कहानी, जिसमें हों राजा और रानी।
— मीता उपाध्याय, शिवपूजन उपाध्याय, यूनिवर्सल केबिल्स फैक्ट्री, सतना (म.प्र.)।

लिखता जाऊं पढ़ता जाऊं, आगे-आगे बढ़ता जाऊं।
— मु. वसीम खान, शमीम खान पठान, नवायार्ड छानी रोड, जैतून नगर, बरोडा (गुज.)।

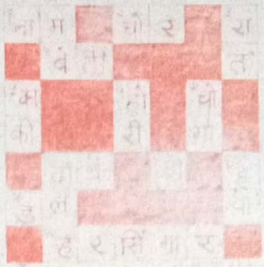
नन्हा-सा शहजादा, पढ़ता-लिखता ज्यादा।
— रुचि, १/७६२६, गली नं. ६, ईस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली।

कलम उठाकर समझ न पाऊं, एक कहानी कहां से लाऊं।
— अरुण कुमार सिन्हा, साकेतपुरी कालोनी, हजारीबाग (बि.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए :
सचिन भल्ला, दुर्ग (म.प्र.); चंदा पांडेय, वर्धमान (प.बं.); नीलमणि बिश्नोई, मुरादाबाद (उ.प्र.); मनीला अरोड़ा, जोधपुर राज.); सौरभ भट्ट, लुधियाना (पं.)।

नंदन ज्ञान-पहेली : २८९

परिणाम



पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। आठ सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है :

सर्वशुद्ध : आठ : प्रत्येक को एक सौ पच्चीस रुपए
१. श्रद्धा गोयल, मथुरा; २. दीपा अग्रवाल, दिल्ली; ३. अभिषेक सिन्हा, मुजफ्फरपुर; ४. आशीष, हाथरस; ५. खंजेशकुमार, रुदौली (बेगुसराय); ६. सुधांशुकुमार, सीतामढ़ी; ७. विनयप्रकाश अग्रवाल, कासगंज; ८. सुशीलकुमार, मालीपुर (बि.)।

घर बैठे नंदन मंगाइए

देश में
वार्षिक—५० रुपए; दो वर्ष का—९५ रुपए

विदेश में
भूटान, नेपाल, पाकिस्तान : वार्षिक
वायु सेवा से—२४० रुपए / ५ पौंड या ९.५० डालर
समुद्री सेवा से—९० रुपए / २ पौंड या ३.५० डालर
अन्य सभी देशों के लिए : वार्षिक
वायु सेवा से—३७५ रुपए / ८ पौंड या १५ डालर
समुद्री सेवा से—१५० रुपए / ३ पौंड या ५.५० डालर

शुल्क भेजने का पता—
प्रसार व्यवस्थापक, 'नंदन',
हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली-११०००१

नामांकन में सुविधा और सुरक्षा



क्या आप जानते हैं कि सुरक्षित जमा लॉकरों तथा बैंकों में सुरक्षित अभिरक्षा में रखी वस्तुओं के लिए भी नामांकन सुविधा उपलब्ध है?

नामांकन की सुविधा प्रत्येक खाते/सेवा के संबंध में किसी भी एक व्यक्ति के पक्ष में उपलब्ध है:

- स्वयं अपने नाम में अथवा दो या दो से अधिक व्यक्तियों के संयुक्त नामों में जमा खाता रखने वाले बैंक खाताधारी.
- बैंक के ऐसे ग्राहक जिन्होंने बैंक में अकेले अपने नाम में सुरक्षित अभिरक्षा में वस्तुएं जमा कर रखी हैं.
- बैंक के ऐसे ग्राहक जिन्होंने स्वयं अपने नाम में अथवा दो या दो से अधिक व्यक्तियों के संयुक्त नामों में सुरक्षित लॉकर किराये पर ले रखा है.
- किसी नाबालिग के अकेले नाम वाले जमा खाते अथवा सुरक्षित अभिरक्षा या सुरक्षित लॉकरों में रखी वस्तुओं के लिए नाबालिग की ओर से विधिक रूप से परिचालन के लिए पात्र व्यक्ति.

इस सुविधा का लाभ लेने के लिए कृपया अपनी बैंक शाखा से सम्पर्क करें.

भारतीय बैंक संघ

अपने सदस्य बैंकों की ओर से

SMA/IBA/93/HIN

Scanned with CamScanner

देना लकड़ी

एक बूढ़ा किसान गरीबदास था। उसके दो लड़के थे। दोनों आवारागर्दी करते। घर का कोई काम नहीं करते थे। गरीबदास की बेटी का नाम राधा था। वह बेचारी घर का सारा काम करती थी। गरीबदास जंगल से लकड़ी काटकर लाता था। बेचकर कुछ पैसे कमाता था, उसी से घर में चूल्हा जलता था।

एक बार गरीबदास बीमार हो गया। उसके घर में खाने को कुछ नहीं था। राधा ने अपने भाइयों के हाथ-पैर जोड़े और कहा—"भइया, कृपा करके लकड़ी काटकर ले आओ। बापू की तबियत बहुत बिगड़ गई है।" तब कहीं मुश्किल से दोनों तैयार हुए। जंगल में लकड़ी काटने लगे। तभी एक बूढ़ा ठग वहां से गुजरा। उसने उन्हें लकड़ी काटते देखा, तो वह बूढ़ा भिखारी बनकर आया और लकड़ी मांगने लगा।

दोनों लड़कों ने मना कर दिया।

ठग बड़बड़ाता हुआ वहां से चला गया। कुछ दूर जाकर उसने भिखारी की पोशाक उतार दी और राजा का वेश बना लिया। दोनों कामचोरों के पास आकर आवाज बदलकर बोला— "सुनो भाइयो, मैं महिपालपुर का राजा हूं। तुम्हें एक हजार रुपए दूंगा। तुम मुझे कुछ लकड़ी दो।" दोनों लड़कों ने कहा—"हां, हां हुजूर, जरूर लीजिए।"

नकली राजा ने कहा— "अच्छा, ये लकड़ियां बांध दो और यह लो एक हजार रुपयों की पोटली।"

दोनों बड़े खुश हुए पर थे तो मूर्ख ही। उन्होंने वह पोटली खोलकर भी नहीं देखी कि उसमें एक हजार रुपए हैं भी या नहीं।

जब वे घर पहुंचे तो उन्होंने अपने पिता के सामने वह पोटली खोली। उसमें कंकड़-पत्थर भरे थे। यह देखकर वे हैरान रह गए। उन्होंने सारी बात अपने पिता को बताई। पूरी बात सुनकर गरीबदास बोला— "वह कोई जादूगर होगा या कोई राक्षस जो तुम्हारी परीक्षा लेने आया था। मगर तुम लालची और मूर्ख हो। इसका उसने फायदा उठाया। अगर तुम लालच न करते, तो इतना नुकसान नहीं होता।"

—सुपर्णा वर्द्धन, पटपड़गंज, दिल्ली

कोई न देखे

एक गांव में कालू नाम का गरीब आदमी रहता था। उसके दो बच्चे थे। वह अपने परिवार का निर्वाह लकड़ी बेचकर करता था।

एक दिन जैसे उसके जीवन में भूचाल आ गया। उसकी पत्नी और दोनों बच्चों की मृत्यु हो गई।

कुछ दिन बाद वह जंगल में लकड़ी काट रहा था। कह रहा था— "अगर मुझे मौत का दूत मिल जाए, तो उसकी खूब खबर लूंगा।" उसी वक्त मौत का दूत वहां से गुजर रहा था। उसने अपना नाम सुना, तो कालू के सामने आ खड़ा हुआ। पूछने लगा—"तुम मुझे क्यों पुकार रहे थे ? मैं ही मौत का दूत हूं। यदि तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा है तो देखो वह लड़की पानी पी रही है। अभी उसकी मृत्यु हो जाएगी।"

इतने में ही एक बड़ा पेड़ लड़की पर आ गिरा और वह मर गई।

मौत के दूत ने कालू से कहा कि आज से ठीक पांच वर्ष बाद उसकी मृत्यु होगी। कालू ने सेमल के पेड़ के भीतर ही भीतर एक सीढ़ी और बड़ा कमरा बना डाला। पांच साल बाद मौत का दूत आ पहुंचा।

कालू ने कहा कि मैं आपके साथ चलने को तैयार हूं। जाने से पहले मैं आपको एक अद्भुत चीज दिखाना चाहता हूं। और उसने मौत के दूत को पेड़ के अंदर भेज, बाहर से ताला लगा दिया। चारों तरफ हाहाकार मच गया। भगवान विष्णु कालू के पास गए। कहा कि तुम मौत के दूत को आजाद कर दो।

कालू ने पेड़ के पास पहुंचकर ताला खोल दिया।

मौत के दूत ने भगवान से कहा—"प्रभु, आज से मुझे कोई देख न सके।"

कालू मौत के दूत और भगवान विष्णु के साथ स्वर्ग चला गया। तभी से मौत का दूत किसी को दिखाई नहीं देता।

—पंकज अग्रवाल, विराटनगर, नेपाल

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं :
अनुज श्रीवास्तव, राऊरकेला; मनुरंजन वाजपेयी, कानपुर; अंजु गोयल, टोहाना

Scanned with CamScanner

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ———————— आयु ————

पूरा पता ————————

————————

रुचि ————————

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. पंकजकुमार गुप्ता, १५ वर्ष, रामकुमार गुप्ता, एस. बी. बी. बी. जे, हनुमानगढ़ (राज.); २ समीर पौडेल, १६, श्रीपुर १५/४५, बीरगंज (नेपाल); ३. मोहम्मद फहीम, १३, मोहम्मद शमीम, मु. मखदूम जादा, रुदौली, बाराबंकी (उ.प्र.); ४. पंकजकुमार बोरडिया, १३/७८९, बड़ा बाजार, राऊ, इंदौर; ५. गौतम टंडन, ११, गोपीनाथ टंडन, कुंज गली, म. नं. १२, इटावा; ६. दिलीप जायसवाल, १२, कन्हैयालाल जायसवाल, अनूपनगर, तेतरी बाजार, सिद्धार्थ नगर; ७ रमेशचंद्र गुप्त, १५, हरिनारायण गुप्त, सर्राफ मंडी, लालगंज, रायबरेली; ८. कृष्णा आर्य, १६, एन. के. आर्य, बैंक कालोनी, विकास नगर, कुसुम खेड़ा, पो. हरीपुर नायक, हलद्वानी, नैनीताल; ९. पवनकुमार सिन्हा, १४, देवकीनंदनप्रसाद, बाघी, बेगूसराय; १०. रश्मि, १५, निरंजनसिंह, एच. डी. शुगर मिल, मंसूरपुर, मुजफ्फरनगर; ११. राजीव गुप्ता, १२, डब्लू-जेड नारायणा, नई दिल्ली; १२. सीमांत दीप, ११, ३/ए, छाता चौक, मुजफ्फरपुर; १३, अनिलकुमार तिवारी, १६, सी-२७/५५, जगतगंज, वाराणसी; १४. मनोज एस. गौतम, १६, रामसिंह, ग्रा. ईस्ट बासुरिया, पो. बांसजोड़ा, धनबाद; १५. रितु चोपड़ा, १२, ए/१२३, गली नं. ११, हास्टल रोड, उत्तमनगर, नई दिल्ली; १६. आरती केसरी, १२, राजेंद्र केसरी, प्रिया कुंज, मिडिल चुटिया, रांची; १७. परमजीतसिंह पूनिया, १६, ९८, सिविल लाइन दक्षिण, पीलीभीत; १८. तुहिनकुमार दत्ता, १६, ए. के. दत्ता, रसिकपुर, दुमका; १९. अतुलकुमार गुप्ता, १४, हरिओमप्रकाश सुनीलकुमार, फड़पाई बाजार, चंदौसी; २०. अनिलकुमार साहू, १२, बद्रीप्रसाद साहू, पो. होसिर, गिरिडीह; २१. शालिनी मित्तल, १६, माधवस्वरूप मित्तल, अचल कोठी, अलीगढ़; २२. मनोजकुमार मिश्रा, १६, एस-१६४, लिचू बागान, पो. बदरतल्ला, कलकत्ता; २३. सुमनकुमार झा, १६, म. नं. १८, रोड नं. ८, गर्दनी बाग, पटना; २४. सुनील बहादुर कमल, १३, ३९०-ए/८-बी, चक रघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद; २५. निशांत सुमन, १४, शारदा मेडिकल स्टोर, ग्रा.-पो. दिनारा, रोहतास (बि.); २६. सुहेल अहमद खान, १३, हकीम ए. ए. खान, शासकीय यूनानी औषधालय, पुराना बस स्टैंड, रायसेन; २७. रजत तंगड़ी, १२, २१/ई, ओ. एफ. डी. इस्टेट, राजपुर, देहरादून; २८. सुमनकुमार श्रीवास्तव, १६, शिवपूजनलाल, विक्रमगंज, रोहतास; २९. मुकुल डुंगडुंग, १०, २ बी-३०४, उर्वरकनगर, बरौनी; ३०. विजयभूषण, १३, १३२ ए/१ ए, अलौपी बाग, इलाहाबाद।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. पंकज जैन, १६, १८३०, गली नं. १, कैलाशनगर, नई दिल्ली; २. रविकुमार सिंह, ११, रामप्रताप सिंह, ग्रा.+पो. चिरांद; ३. रवीश चंद्र, १४, पशुपतिनाथ जायसवाल, ग्रा.+पो. कल्याणपुर, मुंगेर; ४. आदम हुसैन राव, १४, राव क्लीनिक सीकर रोड, कुचामन सिटी (राज.); ५. अजय सिंह, १३, म. नं. ७५०/२, सैक्टर-२, पंचकूला (हरि.); ६. सुबोधकुमार दास, १२, सुरेंद्रप्रसाद दास, शोकहारा, पो. बरौनी, बेगूसराय; ७. लीना जैन, १६, म. न. १७१६, छत्ता बड़ौत, मेरठ; ८. दीपककुमार ठाकुर, १०, अनिल ठाकुर, वेला गार्डन, दरभंगा; ९. अभयसिंह, १२, आर. के. सिंह, कालेपुर, गौतम नगर, गोरखपुर; १०. अनुपमा बख्शी, १३, एफ-११, माडल टाउन दिल्ली; ११. रीता सक्सेना, १६, ए/१२ ट्रांजिट कैंप, रुद्रपुर, नैनीताल; १२. अरुण अग्रवाल, १६, जी-४८ माकड़वाली रोड, केशवनगर, अजमेर; १३. दीपा गुप्ता, १०, २१६६ जवाहर कालोनी, न्यू टाउनशिप, फरीदाबाद (हरि.); १४. नीतूकुमारी सिन्हा, ११, रेलवे आवास २२१/डी दिउलिया, नरकटियागंज, प. चंपारण; १५. मांशु बांगिया, १०, सी ११ आर न्यू कालोनी पलवल (हरि.); १६. अमित अग्रवाल, १३, १२/२२ ईस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली; १७. पूजा सरन, १३, देव विला, ई ब्लाक, दुर्गा चौक, हल्दिया (प. बं.); १८. सतीश कुमार वर्मा १६, ४४ रामपुरी, मुजफ्फरनगर।

डाक टिकट संग्रह, भ्रमण और पहेली में रुचि :

१. हरिमोहन अग्रवाल, १६ वर्ष, ११७ बी चितरंजन ऐवन्यू, कलकत्ता; २. सुनीलकुमार भारती, १५, जनार्दन भारती, कुबेरनाथपुरम, मेंहदावल, बस्ती; ३. सिद्धार्थ मित्तल, १४, अचलकोठी, अलीगढ़; ४. अमन शर्मा, १५, ९३/२ सब्जी बाजार, इंदौर; ५. अंकुर त्यागी, १५, २/२३९०/३ गंगा कुटी, गिल कालोनी, सहारनपुर; ६. रचित जैन, ११, बी ८८ दयानंद कालोनी, लाजपतनगर, नई दिल्ली; ७. पंकजकुमार सर्राफ, १५, पंकज किराना भंडार, नवगछिया, भागलपुर; ८. आवेश बोस, १३, एस. एन. पांडेय, रेलवे हंडर रोड, पूर्वी लोहानीपुर, पटना; ९. सचिन जैन, १४, ११५ महादेव नगर, इंदौर; १०. शशि रंजन, १५, रामविलास विद्यार्थी, उत्तरी आनंदपुरी, पश्चिमी बोरिंग केनाल रोड, पटना; ११. प्रवीण अग्रवाल, १२, १२७ बी. के. पाल ऐवन्यू, कलकत्ता; १२. अमित जैन, १६, ४७८ उषा नगर एक्सटेंशन, इंदौर; १३. अमिताभ चौहान, १४, विष्णुदेव सिंह, अलकापुरी, दमड़िया, पटना।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Scanned with CamScanner



Scanned with CamScanner

रजि. न. डी एल-२७००५/९२ आर. एन. आई.नं.१०५२५/६४

मनोज कॉमिक्स का

फ्री लक्की बम्पर ड्रा

रुपये

निम्न 24 कॉमिक्स पढ़िये और जीतिए

3,00,000.00

तीन लाख रुपये के आकर्षक इनाम

- प्रथम (एक) पुरस्कार मारुति कार 800 सी. सी. साधारण
- द्वितीय (एक) पुरस्कार हीरो होण्डा
- तृतीय (एक) पुरस्कार कलर टी.वी. 20"
- चतुर्थ (एक) पुरस्कार दिल्ली से नेपाल की यात्रा के दो रिटर्न एयर टिकट
- पंचम (पचास) पुरस्कार स्पोर्ट्स साइकिल



जादूगर कोबरा	देवता का प्याला	विनाशदूत करकेंटा	अजगर दी ग्रेट	आंख से टपका खून	आकाश का जादूगर	शैतान का टोप	इच्छाधारी राम
फिर आया ड्राक्युला	यम की तलवार	ड्राक्युला का प्रेतजाल	कुबड़ा शैतान	मुर्दा नं. 402	कंकाला जादूगरनी	हम शैतान हैं	कब्रिस्तान की घड़ी
त्रिकालदेव और गजालू का चक्रव्यूह	त्रिकालदेव और काली खोपड़ी	त्रिकालदेव और पिशाचराज	चार सिर शैतान के	खूनी दानव की वापसी	ड्राक्युला आया मौत लाया	हवलदार बहादुर और नौ अजूबे	हवलदार बहादुर और साठ लाख का बकरा

आवश्यक नोट

उपरोक्त चौबीस कॉमिक्स की बैक पर "फ्री लक्की ड्रा कूपन" छपा है। जब आप चौबीस कॉमिक्स पढ़ लें तो चौबीस कूपन एक साथ इकट्ठे करके भेजें। उन चौबीस कूपनों को एक साथ ड्रा में शामिल करके ड्रा निकाला जाएगा। कृपया अलग-अलग कूपन न भेजें।

इनाम कैसे प्राप्त करें

1. उपरोक्त चौबीस कॉमिक्स के टाइटल की बैक पर लक्की ड्रा कूपन छापा गया है। इन चौबीस कॉमिक्स के कूपन काटकर व उनकी बैक पर साफ-साफ शब्दों में अपना नाम व पूरा पता लिखकर भेजें।
2. आपके चौबीस लक्की ड्रा कूपन हम तक 30 जुलाई 1993 तक अवश्य पहुंच जाने चाहिए।
3. ड्रा 15 अगस्त 1993 को निकाला जाएगा।
4. 30 जुलाई के बाद प्राप्त होने वाले कूपनों को ड्रा में शामिल नहीं किया जाएगा।
5. चौबीस कूपन एक साथ भेजने वालों को ही इस लक्की ड्रा में शामिल किया जाएगा।
6. लक्की ड्रा के विजेताओं को उनके पुरस्कार 30 सितम्बर 1993 तक भेज दिये जायेंगे।
7. लक्की ड्रा के कूपन "मनोज पॉकेट बुक्स" 5/17 बी, रूपनगर, दिल्ली 110007 के पते पर भेजें।
8. अपने लक्की ड्रा कूपन साधारण डाक द्वारा ही भेजें।
9. मनोज पॉकेट बुक्स के कर्मचारी अथवा उनके परिवार के सदस्यों को छोड़कर, सभी भारतीय निवासी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।
10. प्रथम चार विजेताओं के नाम व फोटो अक्टूबर माह में प्रकाशित राम-रहीम के नये कॉमिक्स 'शेष नाग का खजाना' में प्रकाशित किये जायेंगे और पाँचवें पुरस्कार के पचास विजेताओं के नाम भी इसी कॉमिक्स में छापे जायेंगे।

Scanned with CamScanner